दुनिया का चक्कर : दस दिन में

(१)

दौड़ प्रारंभ

ग्यारह बजे। 'गरुड़' के सभी कील-काँटे दुरुस्त कर लिये गये। गैसोलिन आदि भर दिये गये। देव, जमशेद, जान और साम, चारो ने सतर्क होकर छोटी-बड़ी सभी चीजो की जाँच की। दूसरे दलवाले भी लैस हो गये। पीटर, क्रास, टाम, पाल भी अपने यान 'वायुविजेता' को ले कर तैयार हो गये।

सवा बारह पर दोनो दलो ने अपने-अपने वायुयान मैदान में लाकर बराबरी से खड़े कर दिये। दोनों के रुप, रग, आकार-प्रकार बिलकुल एक-से देख, वहाँ उपस्थित सभी व्यक्ति आश्चर्य करने लगे। दोनो यानो के चालकों से वहाँ के अधिकारी और उच्चवर्ग के लोग मिले। लोगो से मिलकर चालक अपने-अपने यानों पर जा बैठे।

ठीक एक बजे २५,००० मील की दौड़ का आदेश दिया गया। दोनों वायुयानों ने साथ-ही-साथ दौड़ प्रारम्भ की। कुछ

चने ही न दे, अथवा यदि किसी प्रकार सही-सलामत पहुँच भी सके तो प्रतिद्वन्दियों के पीछे, मुख-मलीन किये हुए, आँखो मे आँसू रोकते हुए, लज्जित, अपमानित।

भाव बदलते गये। पर वायुयान बढते ही गये।

अब दोनों वायुयान मीलों आगे चले आये थे। वे अगले पड़ाव, जार्जटाउन की ओर उड़े जा रहे थे। निश्चित-सूची (शेड्यूल) के अनुसार उन्हे दूसरे दिन सवेरे वहाँ पहुँचना था।

नीचे का दृश्य मनोमोहक था। ऊची-नीची पहाड़ी तट-भूमि और उससे टकराने वाली अटलॉटिक महासागर की सफेद फेन से आच्छादित विशालकाय नीली, धूमिल लहरे। बीच-बीच में छोटे-छोटे हरे-भरे टापू और उनके चारों ओर लहराने वाला चमकदार सागर-भाग। बीच-बीच मे बादलो से अनायास मुक्त होकर सूर्य की जो किरणे उस जल पर पड़ती थी, वे अपूर्व दृश्य उपस्थित कर देती थीं। शत-शत, सहस्र-सहस्र, लक्ष-लक्ष दिव्य रत्नों की-सी बहुरगी आभाएँ एकाएक चमचमा उठती थीं, मानों वरुणदेव का रत्न-भण्डार सहसा खुलकर स्वर्गीय प्रभा विकीर्ण करने लगा हो।

उड़ाके इन सब मोहक दृश्यों को पीछे छोड़ते आगे बढे जा रहे थे। अनेक नद, नदियाँ, तट, पर्वत, पठार पीछे छोड़ते, दोनों बराबर अविराम गति से आगे बढ़े जा रहे थे।

पहाड़ों पर से जाते समय देव 'गरुड़' को बारह हजार फीट की ऊँचाई पर ले गया। एण्डीज पर्वत माला को पार करते

समय बड़ी सतर्कता से काम लेना पड़ा। एक तो भूरे-भूरे बादलों के दल 'गरुड़' को घेरे हुए थे, दूसरे बर्फ से आच्छादित गगन-चुम्बी पर्वत शिखर चारों ओर बिखरे हुए थे। धीरे-धीरे 'गरुड' पन्द्रह हज़ार फीट की ऊंचाई पर आगया। इस पर्वत-माला को पार करते-करते एक पर्वत-शिखर से टक्कर होते-होते बची। देव बड़ी सावधानी से वायुयान का सञ्चालन कर रहा था। ऊदे-ऊदे, भूरे-भूरे बादल सामने पर्वतशिखर-से देख पडते थे। उन्हीं के बीच से वायुयान तेज़ी से जा रहा था। सहसा देव का दिल धक-से हो गया। सामने ठीक बादलों की शक्ल का एक हिमाच्छादित पर्वत शिखर देख पड़ा। बहुत ही पास, यान के ठीक सामने। दूसरे ही सेकण्ड यान उसी पर जाकर टकराता और चूर-चूर हो जाता। पर बिजली की तरह चमककर देव ने यान को ऊपर उठाया। दूसरे सेकण्ड यान ठीक शिखर के ऊपर से उसके बर्फ को छूता-सा सर्र से निकल गया। टक्कर बच गई। देव की जान में जान आई।

यान इतनी अधिक ऊँचाई पर आगया था कि उड़ाके सरदी से काँप उठे। विवश होकर उन्हें अपने गरम कपड़े पहनने पड़े।

पर्वत-माला को पार करने पर यान कुछ नीची सतह पर कर लिया गया। चाल भी कुछ कम कर दी गई। उड़ाके उस पर्वत माला को सकुशल पार करने पर खुश हो रहे थे। इसी समय उन्हें यान के पीछे एक विचित्र शब्द सुन पड़ा। देखा, एक भीमकाय पक्षी उनका पीछा कर रहा है। देखते-देखते उसी प्रकार

के पक्षियों की सख्या एक-एक करके सात-आठ तक पहुँच गई। उस पर्वत-प्रदेश मे वायुयान ऐसे विचित्र जन्तु को देखकर शायद उन भीम-पक्षियों का क्रोध भडका था। वे अभी तक उस प्रदेश मे अपना एक-छत्र राज्य समझते थे। अब इस विचित्र वस्तु को देख, उन्हें सदेह हुआ कि कहीं वह उनके साम्राज्य में कोई बाधा उपस्थित न करे। शायद यही सोचकर वे उसका सामना करने आये थे। 'वीर भोग्या वसुन्धरा' का सिद्धान्त पशु, पक्षियों तक मे मान्य है।

पक्षियों के परों की लम्बाई १४-१५ फीट से कम न थी, उनकी चोंचें भी बड़ी लम्बी और दृढ़ थी। वे जोर-जोर से टें-चें करते, क्रोध से पागल हो वायुयान के पीछे झपटे चले आ रहे थे।

पहले तो उड़ाकों को केवल कुतूहल-सा हुआ। उन्हें एक मजाक-सा जान पड़ा। वे हँसते-हँसते पक्षियों के पागलपन का आनन्द लेने लगे।

किन्तु कुछ ही क्षणो मे उनकी हँसी चिन्ता में बदल गई। वे भयभीत हो उठे।

दो पक्षी यान के दोनो तरफ आकर अपनी सुदृढ चोंचों से उसकी खिड़कियों पर दनादन चोट करने लगे। उनके आघात से खिड़कियों के शीशे चूर-चूर हो गए। दूसरे पक्षी भी दूसरे भागों पर आक्रमण करने लगे।

एक पक्षी की पूँछ पर यान का जोर का आघात लगा। उसकी पूँछ टूट-कर अलग हो गई। काले-सफेद पर चारों ओर

बिखर गये। वह चीखता हुआ भाग गया। किन्तु कुछ ही क्षण बाद वह क्रोध से पागल हो, दूने वेग से फिर यान पर टूट पड़ा।

समस्या भीषण हो उठी।

किसी भी क्षण पक्षियों के आक्रमण से पेट्रोल की टॅकी फूट सकती थी, इञ्जिन खराब हो सकता था।

उड़ाकों के हृदय भय से कॉप उठे।

जमशेद और साम ने बन्दूकें सॅभालीं। जान ने बरछा सीधा किया। एक पक्षी टूटी हुई खिड़की के पास जो चोंच लाया, तो जान ने हाथ साधकर उसकी ऑख में बरछा भोंक दिया। वह जोर-ज़ोर से चीखता हुआ पीछे को उड़ गया। इसी बीच में जमशेद ने एक पक्षी के ऊपर बन्दूक छोड़ी। गोली उसके लगी। किन्तु जोर से चीख कर वह दूने वेग से फिर आक्रमण करने लगा। तब साम ने भी उसी पर गोली चलाई। ठीक इसी समय जमशेद ने उस पर दूसरी वार बन्दूक दागी। तीन गोलियों का असर हुआ। वह उलटता-पलटता नीचे की ओर जा गिरा।

जमशेद ने जान से भी बन्दूक उठा लेने के लिए कहा। अब तीनों एक साथ एक ही पक्षी पर वार करने लगे। इस प्रकार उन्होंने चार पक्षियों को मार गिराया। शेष पक्षी भी घायल होकर या डर कर भाग गये। अब सकट दूर हुआ और उड़ाकों ने अघाकर साँस ली।

यन्त्रों के द्वारा जार्जटाउन की ओर मुखकर वे आगे बढे। अँधेरा हो गया था। पहले उड़ाकों ने समझा कि बादलों के घिर आने से ऐसा हुआ है। किन्तु जमशेद ने अपनी घड़ी देखी। सात बज रहा था।

इस समय में दो घण्टे का फर्क था। जिस प्रदेश में वे उस समय थे उसके अनुसार रात के नौ का समय था।

अभी तक देव और जमशेद वायुयान को चला रहे थे। कई घण्टे लगातार चलाते रहने से वे थक गये थे। अब जान और साम ने काम शुरू किया। देव और जमशेद खा-पीकर झूलेदार बिस्तरों पर लेट गये। कुछ ही क्षण में गहरी नींद ने उन्हें बेसुध कर दिया। सोने के पहले जमशेद ने बेतार-के-तार के द्वारा अभी तक के समाचार, पक्षियों के युद्ध आदि का वर्णन पनामा भेज दिया। यह भी कह दिया कि जार्ज-टाउन पहुँचते ही उन पक्षियों के फोटो भी 'पत्र' के लिए भेजे जायँगे।

कुछ देर बाद जोर की वर्षा होने लगी। अँधकार के कारण बाहर कुछ देख नहीं पड़ता था। जान ने वायुयान को वर्षा वाले बादलों से ऊपर उठाया। बादलों के ऊपर आते ही दृश्य एक दम बदल गया। चमकते हुए तारों से भरा विस्तृत, सुनील आकाश पूर्ण-चन्द्र के प्रकाश में स्नान-सा कर रहा था। अपूर्व दृश्य था। जान 'यान' को डेढ सौ मील की गति से चलाने लगा। चाल और भी तेज की जा सकती थी, किन्तु भय था कि कहीं सूर्योदय के पहले ही जार्जटाउन न आजाय। ऐसा न हो कि कहीं अँधेरे के कारण 'गरुड' आगे निकल जाय और जार्जटाउन का पता न चले।

आधीरात के बाद साम ने यान को चलाना प्रारम्भ किया। जान उसकी सहायता के निमित्त सतर्क होकर उसके पास जा बैठा।

रात भर 'गरुड़' मजे में उड़ता चला गया। धीरे-धीरे आकाश में परिवर्तन होने लगा। चन्द्रमा की ज्योति मन्द पड़ने लगी। एक-एक

करके तारे विलीन होने लगे। प्रकाश बढने लगा। अन्त में अरुणोदय ने एक अपूर्व आभा विकीर्ण की। आकाश प्रकाश से भर गया।

सूर्योदय होते ही देव और जमशेद की नींद टूटी। वे आँखे मलते हुए उठ बैठे। हाथ-मुँह धोकर उन्होंने खिड़कियों से नीचे, ऊपर, आगे, पीछे देखना प्रारम्भ किया। दूरबीन से देखा, पर प्रतिद्वन्द्वियो के वायुयान का कहीं पता न चला। नीचे एक नीली झील झलमला रही थी।

झील को ऊँचे-ऊँचे पेड़ो ने चारों ओर से घेर रक्खा था। अधिकाश पेड सौ फीट से कम ऊँचे न थे। कुछ दूर पर खेतों का सिलसिला था। उनमे गन्ने-से देख पडते थे। खेतों मे कुछ मनुष्य और बैल भी देख पड़े। एक ओर दूर एक पतली, चमकदार लकीर-सी चमक रही थी। गौर करने पर मालूम हुआ कि वह नदी है। पेड़-पौधो से ऐसी ढकी थी कि उसका अस्तित्व ही लोप-सा हो रहा था। दूर, अति दूर जाकर वह टेढी-तिरछी होती हुई नीले सागर मे जा मिली थी। समुद्र और नदी के सगम पर एक नगर-सा देख पड़ता था। उड़ाकों ने अपने नक्शे से मिलान किया। नदी का नाम एसेक्यीबो और नगर का जार्जटाउन निकला। प्रसन्नता से उनके चेहरे खिल गये।

कुछ ही क्षण बाद 'गरुड' उस नगर के ऊपर जाकर मडराने लगा। दूसरे ही चक्कर में उन्हे लाल-सफेद झँडा फहराता देख पड़ा। यही ठहरने के स्थान का चिह्न था। धीरे-धीरे 'गरुड़' नीचे आया। अभी तक दूसरा वायुयान वहाँ नहीं आया था।

---

(२)

चकमा

अड्डे पर शोर नामक एक अँग्रेज सज्जन ने उनका स्वागत किया। उन लोगों के पेट्रोल आदि की व्यवस्था करने और नियमित समयपर आने का प्रमाण-पत्र देने के निमित्त जार्जटाउन में शोर की ही नियुक्त की गई थी।

गरुड़ निश्चित समय से पॉच मिनट पहले ही जार्जटाउन पहुँच गया। देव, जमशेद आदि को इससे बडी प्रसन्नता हुई। इस कारण और भी कि उनके प्रतिद्वन्दी तब तक वहाँ न पहुँच सके थे। देव ने जार्ज-टाउन के समय के अनुसार एक घडी ठीक कर ली। फिर 'गरुड़' की सेवा शुरू हुई।

चारो उड़ाके वायुयान की सफाई, मरम्मत और दुरुस्ती मे जी-जान से जुट गये। दौड़ की यह पहली मजिल थी। पहले इजिन जॉचे गये। दोनों बिल्कुल ठीक थे। उनका एक कील-कॉटा तक न हिला-डुला था। इससे चारों को बड़ा सन्तोष हुआ। पक्षियों के हमलो के कारण खिड-कियों के शीशे टूट गये थे और इधर-उधर कुछ खरौंचे लग गई थीं।

सबसे बड़ी बात थी दोनों पँखों के हेलियम गैस के सभी थैलो का सुरक्षित रहना। 'गरुड' की यही विशेषता थी। जिस अनुपात में यह गैस मौजूद था उससे चारों उड़ाकों को विश्वास हो गया कि उनकी

पूरी यात्रा निर्विघ्न समाप्त हो जायगी। बाकी और सब चीजे रास्ते के किसी-न-किसी अड्डे पर मिल सकती थीं, किन्तु हेलियम-गैस का मिलना प्राय. असम्भव-सा ही था। वैसे तो थैलों से थोड़ा-सा गैस निकल ही गया था। किसी भी वस्तु का थैला इतने सूक्ष्म गैस को थोडा-थोडा उडने से नहीं रोक सकता। किन्तु जिस अनुपात में गैस निकल सका था वह नगण्य था। और पूरी यात्रा मे यदि उसी हिसाब से गैस निकलता रहा, तो विशेष हानि की सभावना न थी। यही प्रसन्नता की बात थी।

'गरुड' को पोंछने, कल-पुरजों, कील-काटों मे चिकनाई लगाने, पेट्रोल आदि के भरने मे उन्हें पूरा सवा घन्टा लग गया। इसी समय "वह आया, वह आया" की तीव्र ध्वनि ने उनका ध्यान उपस्थित जनता की ओर खींचा। उन्होने देखा कि जनता बड़ी उत्सुकता से सर उठाये पश्चिम आकाश की ओर आँखें लगाये हुए है। उनकी भी नजरें उसी ओर जा पहुँचीं। उन्हें एक वायुयान तेजी से आता देख पडा। कुछ ही क्षणों मे उनके प्रतिद्वन्दियों का वायुयान 'वायुविजेता' उसी अड्डे पर आकर उतरा।

शोर ने उनका भी स्वागत उसी भाँति किया। यह जानने के लिए कि रास्ते मे कोई दुर्घटना तो नहीं हुई, उसने नियमित समय से पीछे पहुँचने का कारण पूछा। पीटर ने तनिक लापरवाही दिखलाते हुए कहा—'जिस समय 'गरुड़' पर सजीव गरुड़ों (पहाड़ी पक्षियों) का हमला हो रहा था, उस समय हमारे 'यान' को भी दो-तीन पहाड़ी

गरुड़ों ने घेरना चाहा था। किन्तु उस वायुयान की दुर्दशा देखकर हम लोग सचेत हो चुके थे। चुपचाप तेजी से कुछ पीछे हट गये और चक्कर देकर हम निकल गये। पक्षी भौचक्के से होकर रह गये। इसी में हमें कुछ ज्यादा चक्कर काटना पड़ा। फिर कुछ ही समय बाद अँधेरा हो गया। साथ ही वर्षा भी होने लगी। हमने चाल धीमी कर दी। कुछ रास्ता भी चक्करदार हो गया। इसी कारण देर हुई। पर अब आगे हम निश्चित समय से पहले ही पहुँचेंगे। चाहते तो समय से पहले ही पहुँच जाते। पर पहली मंजिल थी, इससे जल्दी करना हमने ठीक न समझा।

देव, जमशेद आदि भी शोर के पास जाकर प्रतिद्वन्द्वियों के यात्रा-विवरण को उत्सुकतापूर्वक सुन रहे थे। पीटर की शेखी से वे तनिक मुस्करा पड़े। पीटर आपे से बाहर हो गया। उसने तीखे स्वर में कहा—'देव !! इस तनिक-सी बात पर इतने मत इतराओ। तुम्हें तो शीघ्र ही चौधारे आँसू बहाने पड़ेंगे। याद रखना।'

जमशेद ने तमककर उत्तर दिया—'तुम किस मुँह से यह कहते हो। अभी तो बहुत कुछ भविष्य के गर्भ में है। हम सावधान हैं।'

पीटर घृणा-व्यञ्जक रीति से मुँह बनाकर तेज नजर से उनकी ओर घूरता हुआ जल्दी-जल्दी दूसरी ओर चला गया। वह उनके सामने ज्यादा देर तक नहीं ठहरना चाहता था।

'वायु-विजेता' के उड़ाके अपने 'यान' की सफाई में लग गये। देव अपने साथियों को ले एक पथ-प्रदर्शक के साथ जार्जटाउन के

बाजार में गया। वहाँ उन्होंने तार द्वारा यात्रा का पूरा विवरण 'विश्व-समाचार' पत्र को भेजा। फिर डाक-द्वारा पहाड़ी पक्षियों के युद्ध के तथा इस यात्रा के प्राकृतिक दृश्यों के चित्र भेजने का प्रबन्ध किया। इसके अनन्तर वे जरूरी वस्तुएँ खरीदते हुए बाजार मे गये और वहाँ घूमने लगे। पर इतने सबेरे दूकानों पर खासी अच्छी भीड देख, उन्हें आश्चर्य हुआ। दूसरी अनोखी बात थी जार्जटाउन में विभिन्न जाति और देशों के स्त्री-पुरुषों का इतना विचित्र जमघट। दक्षिणी अमेरिका के किसी नगर में सभी जातियों, सभी देशों के मनुष्यों को इस प्रकार एक साथ बसे हुए देखने की उन लोगों ने कल्पना तक न की थी। लम्बे-लम्बे कोट-शेरवानी से सुसज्जित पगडियोंवाले भारतवासी, पीले-चिपटे चेहरेवाले चीनी, लम्बे काले कोट पहने विचित्र टोपियाँ लगाये गोरे पारसी; कोयले से काले हब्शी, नाना प्रकार के कोट-पतलूनों मे योरप के प्रायः सभी देशों के मनुष्य उस बाजार में एक साथ दृष्टिगोचर हुए। एक विचित्र सम्मेलन था।

नगर के सभी स्थानों मे सडकों के साथ-ही-साथ पक्की नहरे देख पड़ीं। ज्यादातर मकान और दूकाने काफी ऊँचे चबूतरों पर या खम्भों पर स्थित थी। समुद्र के किनारे दूर तक ऊँचा बाँध चला गया था। पथप्रदर्शक ने बतलाया कि उस स्थान मे अक्सर बाढ आ जाती है। उसी से बचने के लिए ये सब प्रबन्ध किये गये हैं। मकानों की छत भी काफी ढालू थी। वर्षा के पानी के बहाव के विचार से ही मकानों की छतें ढलवाँ रक्खी गई थीं।

उस विचित्र स्थान को देखते हुए, आवश्यक वस्तुएँ खरीद कर वे, प्रायः घन्टे, सवा घन्टे बाद वायुयान के अड्डे पर लौट आये।

दोनों वायुयानो के चारों ओर उत्सुक स्त्री-पुरुष, बालक-बालिकाओं की काफी बड़ी भीड जमा हो गई थी। चारो उडाके भीड़ को चीरते बडी कठिनाई से अपने वायुयान के पास पहुँचे। पास पहुँचकर उन्होंने देखा, उनके प्रतिद्वन्दी पीटर और क्रास उनके वायुयान के पखों पर चढ़े हुए हैं। उनके आते ही पीटर और क्रास फौरन नीचे कूदकर तेजी से अपने विमान की ओर भाग गये। देव तथा उसके साथियों को बडा आश्चर्य हुआ। वे आशका से सिहर उठे।

प्रतिद्वन्दी उनके वायुयान के पखो पर चढे क्या कर रहे थे? वे वहाँ आये ही क्यों?

बाजार जाते समय अड्डे के अधिकारियों से कहकर उन्होने दो चीनी चौकीदारों को अपने वायुयान की रक्षा के लिए खड़ा कर दिया था। वे दोनों घूम-घूम कर विमान का पहरा दे रहे थे। भीड मे से कोई भी विमान के पास तक न आने पाता था।

जमशेद ने चौकीदारों को झिडकते हुए कहा—'तुम यहाँ क्या झख मारने के लिए टहल रहे हो? हमने तुमसे कह दिया था कि किसी को भी वायुयान के पास तक न आने देना?'

चौकीदारों ने हकलाते हुए कहा—'हम ने किसी बाहर वाले को वायुयान के पास फटकने तक नहीं दिया। देखिये, तमाशबीन हमें दो-दो, चार-चार आने देने को तैयार हैं, पर हमने किसी को भी विमान के पास नहीं आने दिया।'

जमशेद—'तब वे दोनो पखों पर कैसे जा पहुँचे ?'

चौकीदार—'सरकार ! वे तो आपके साथी ही हैं ! जैसे आप वैसे ही वे। हमने समझा आप ही लोग हैं।'

देव ने झुंझला कर कहा—'इन्हें हममें और उनमें कुछ फर्क नही जान पड़ता। ये मूर्ख समझते हैं कि वे और हम एक ही हैं।'

जमशेद ने डपटकर पूछा—'वे दोनो यहाँ क्या कर रहे थे ?

चौकीदार—'हमसे उन्होंने कुछ कहा नहीं। वे तेजी से सीधे चले आये और घूम-घूम कर चारा ओर से वायुयान को देखने लगे। फिर . ..."

जमशेद—'क्या वे विमान के अन्दर गये थे ?

चौकीदार—'नहीं, अन्दर नही गये। बाहर ही थे।'

देव और जमशेद ने चौकीदारो से और कुछ पूछना व्यर्थ समझ, आगे बढ वायुयान को गौर से जाँचना शुरू किया। ऊपर से तो कुछ फर्क न देख पड़ा। इंजिन आदि की जाँच की। वह भी ठीक थे। चारों एक दूसरे का मुँह देखने लगे। सोचा शायद पीटर 'गरुड़' की बनावट देखने आया हो। पर वह उन सबके रहते भी तो वैसा कर सकता था ! चोरी से क्यों आया !

वे इसी उधेड़-बुन मे थे। इसी समय अड्डे के दूसरी ओर इंजिन के चलने और जनता के प्रोत्साहन के शब्द सुन पडे। चारों ने घूमकर उस ओर देखा। देखा, 'वायुविजेता' तेजी से ऊपर उठ रहा है। देखते-देखते वह उनके सर पर से होता हुआ आकाश में जा पहुँचा। दूसरे ही क्षण वह दूसरे गतव्य स्थान की ओर बढ चला। कुछ ही

क्षणों में वह कबूतर के बराबर देख पड़ने लगा और धीरे-धीरे नजरों से ओझल हो गया।

पीटर उनके सामने तत्काल न पडना चाहता था। इसी कारण वह उतावली मे भाग खड़ा हुआ।

'गरुड' के आरोही कुछ समय शायद और रुकते, पर अब उनके सामने फौरन चल पडने के सिवा दूसरा चारा न था। शोर से दस्तखत लेकर तथा चौकीदार आदि को दे-दिलाकर वे भी चल पड़े। पहली ही मंजिल की यात्रा से उन्हे विश्वास हो गया था कि प्रतिद्वन्दियों को परास्त कर देना कठिन नहीं है। दूसरा अड्डा 'पारा' था। उन्हें विश्वास था कि वे वहाँ भी 'वायुविजेता' से पहले ही पहुँच जायँगे।

जमशेद अधिक उत्तेजित हो गया था। उसी ने 'गरुड' को चलाना प्रारम्भ किया। हवा की तेजी से बचने के लिए वह वायुयान को पहले दो हजार फीट की ऊँचाई पर ले गया। फिर 'पारा' की ओर रुखकर उसने यान को उसी ओर बढाया।

किन्तु कुछ ही क्षण बाद वह घबरा-सा गया। उसने कई बार गति बढाने का प्रयत्न किया, किन्तु 'गरुड़' १२० मील से अधिक न बढा। उसे पसीना आ गया।

देव उसी के पास बैठा था। जमशेद को घबराया हुआ देख, उसने पूछा—'क्या बात है?'

जमशेद—'यान मे कुछ गड़बड़ी आ गई है। न जाने क्यों कुछ फ़र्क-सा मालूम होता है। कल-पुरजे पहले का-सा काम नहीं देते। मैं १५० मील की गति चाहता हूँ, पर लाख कोशिश करने पर भी 'गरुड'

१२० मील से ऊपर नहीं जा रहा है। फिर उड़ान भी उतनी सधी और सीधी नहीं है। वायुयान बराबर हिल-डोल रहा है। जैसे इसका सन्तुलन नष्ट हो गया हो। क्या बात हो गई!'

देव का दिल जोर-जोर से स्पदन करने लगा। उसने जमशेद को हटाकर स्वय वायुयान को चलाना शुरू किया। किन्तु उसे भी वही अनुभव हुआ।

जान और साम ने पारी-पारी से सचालन अपने हाथों मे लिया। उन्हे भी मशीन मे कुछ खराबी समझ पडी। चारों चिन्ता से व्याकुल हो उठे।

अन्त में उन्हे विश्वास हो गया कि पीटर ने कुछ दुष्टता की है।

सहसा जमशेद ने कहा—'वे दोनों हमारे यान के पखो पर चढे थे। शायद पीटर ने एक ओर के हेलियम के थैलो मे से कुछ गैस निकाल दी हो। वायुयान का सतुलन गड़बड हो गया है, एक ओर का हिस्सा कुछ हलका और दूसरी ओर का कुछ अधिक भारी जान पडता है। सतुलन ठीक न होने से मशीन की गति में और सधकर चलने मे बाधा पड़ती है।'

गौर करने पर सभी को जमशेद की बात ठीक जान पडी। जमशेद को पीटर पर बहुत क्रोध आया। छल द्वारा दौड मे जीतने का प्रयत्न देख, पीटर पर सभी खीझ उठे।

वैसे और सब ठीक था। इजन दुरुस्त थे। दूसरे सभी कलपुरजे पहले की तरह ही अच्छी हालत में थे। जमशेद मन मसोस कर 'गरुड़' को चलाने लगा। जैसे भी हो, पारा पहुँचने के पहले कुछ भी उपाय नहीं किया जा सकता था। जान और साम रात भर वायुयान चला

चुके थे। दोनों विस्तरो पर पड़ते ही गहरी नीद मे डूब गये। जमशेद और देव वायुयान को चलाते रहे।

दोपहर के समय देव ने दोनों इजनों को साथ-ही-साथ चला दिया। इससे तेजी काफी बढ गई। किन्तु वैसा करना उचित न था। जमशेद ने जैसे भी हो, एक ही इजन से पारी-पारी से काम लेना ठीक समझा।

अन्त मे हिलता-डोलता 'गरुड़' पारा जा पहुँचा। निश्चित समय से केवल एक घटा बाद। 'गरुड़' की ऐसी डॉवाडोल स्थिति में केवल एक घण्टा पिछड जाना वैसा बुरा न था।

उनके पहुँचने के ठीक पन्द्रह मिनट पहले 'वायुविजेता' तीसरी मजिल के लिए रवाना हो चुका था। वे भी जल्दी-जल्दी पेट्रोल आदि भर कर इस अड्डे से फिर आगे बढे।

हवा तेज थी और उलटी भी। जान ने 'गरुड़' को ऊपर उठाया। पूरे पॉच हजार फीट की उॅचाई पर ले जाने पर हवा की गति इतनी थी कि उसको ठेल कर आसानी से आगे बढा जाता। अँधेरे और कुहरे के कारण केवल यन्त्रों के सहारे दिशा का अन्दाजा लगाकर वायुयान फ्रीटाउन की ओर बढाया गया।

बगल से आकर लगने वाले वायु के झोकों का ख़ास तौर पर ख्याल रखना पडता है। यदि तनिक चूक हुई तो वायुयान कहीं-से-कहीं जाने लगता है। उडाकों के पास प्रत्येक प्रदेश की वायु तथा उसकी गति आदि की पूरी तालिकाएँ थी। उन्ही के सहारे सब बातों का ठीक-ठीक हिसाब लगाते हुए जान और साम 'गरुड' को तेजी से फ्रीटाउन की ओर ले जा रहे थे।

अटलांटिक महासागर पार

पारा में ज़मीन पर भी 'गरुड' भारी हो गया था। भूमि पर अब पहले की तरह उसकी वह हलकी चाल न रह गई थी।

जान और साम ने उसे पीछे से ढकेला। पहले हाथ के इशारे से ही वह सर्र से आगे बढ जाता था। अब खासा जोर लगाना पडा, तब कहीं आगे टसका।

हेलियम-गैस के निकल जाने से बडा परिवर्तन हो गया था।

जमशेद ने क्रोध मे पागल होकर कहा—'पीटर ने जैसी दुष्टता की है, उसका एक ही उत्तर है! मेरे तो हाथ खुजला रहे हैं। नीच! कायर!!'

जान ने कहा—'अच्छा हुआ कि वे हमारे आने के पहले ही उड़ गये। हमारी जो मनोदशा है, उसमे उनके यहाॅ रहने से कोई काण्ड हुए बिना न रहता।'

साम—'आखिर, आज नहीं तो कल, कल नहीं तो परसों कभी-न-कभी निकट भविष्य में उनसे बदला तो लेगे।'

देव—'यह सब कोरी भावुकता है। असली सवाल है 'गरुड' के सम्बन्ध मे कोई उचित उपाय करना। यदि पीटर का सर तोड़ भी दिया गया, तो उससे तो हमारी दौड़ सफल होती नहीं।'

देव की बात ने सभी के विचारों को दूसरी ओर मोड़ दिया। उत्तेजनापूर्ण हृदयोद्‌गारों को व्यक्त कर अपने जले दिलों के फफोले फोड़ने के बजाय वे अब तत्काल कोई उपाय करने में तन्मय हो गये।

पनामा पहुँचने के पहले हेलियमगैस मिल सकना प्रायः असम्भव सा ही था। तब क्या किया जाय ?

आगे की मंजिल में अटलांटिक महासागर को पार करना एक महाद्वीप से दूसरे महाद्वीप तक पहुँचना था—महासागर के ऊपर होकर। उड़ान लम्बी और कठिन था। 'गरुड़' का इस डाँवाडोल स्थिति में महासागर का पार करना खतरे से खाली न था।

देव ने सर खुजलाते हुए कहा—'पीटर ने एक पक्ष में से कुछ हेलियम-गैस निकाल दिया है।'

जान—'इसी से सन्तुलन बिगड़ गया है ?'

सान—'एक तरफ ज्यादा वजन होने से वायुयान उधर झुक जाता है। दूसरी ओर का भाग कुछ हलका है, इससे उधर का हिस्सा कुछ ऊपर उठ जाता है।'

जमशेद—'यही गड़बड़ी का कारण है। यदि भारी हिस्से से कुछ गैस निकाल दिया जाय तो दोनो ओर वजन बराबर हो जाय। इससे सन्तुलन ठीक हो जायगा। गरुड सब कर सीधा चल सकेगा। हिलना-डुलना बन्द होते ही गति भी बढ जायगी।'

देव ने उछलकर कहा—'तुम ठीक कहते हो।'

जान—'किन्तु इससे वायुयान अधिक भारी पड़ जायगा। हेलियम-गैस के कारण जो हलकापन है उसमें कमी पड़ जायगी।'

देव—'किन्तु वायुयान की चाल मे सन्तुलन कहीं अधिक महत्व रखता है। सन्तुलन ठीक होने से अनेक प्रकार से लाभ होगा। गति तो कुछ बढेगी ही, दूसरी अनेक कठिनाइयाँ भी दूर हो जायँगी।'

जान—'हमारे प्रतिद्वन्दियों को तो अब हमसे अधिक सुविधाएँ प्राप्त हो जायगी।'

जमशेद—'हाँ, हल्केपन की दृष्टि से ही तो। अब तक की दौड़ में यह तो प्रमाणित हो ही चुका है कि तेजी में हम उनसे कहीं अधिक बढ कर थे। अब हमारे वायुयान के कुछ अधिक भारी हो जाने के कारण हमारी वह विशेषता जाती रही। अब हम उनकी सतह पर आ गये हैं।'

साम—'तभी तो अब दौड अधिक कशमकश की होगी।'

इसी समय जमशेद के दिमाग में एकाएक एक बात आई। उसने दमकते हुए चेहरे से कहा—'यदि अभी तार दे दिया जाय तो पनामा से हेलियम-गैस किसी तेज स्टीमर द्वारा हमे छठवी या सातवीं मजिल पर मिल सकती है। आगे की दौड़ मे तो हमे कुछ-न-कुछ सहायता मिलेगी। बाद के पाँच-सात हजार मील ही क्या कम हैं। कुछ घण्टों का तो फर्क जरूर पड़ेगा।'

सब ने उसकी बात मान ली।

काम शुरू हुआ। पहले हेलियम-गैस उन हिस्सों से निकाली गई जिनमें वह दूसरे हिस्सों से अधिक थी। इसमें बड़ी सतर्कता, बड़ी बुद्धि की आवश्यकता थी। हिसाब लगाकर तथा यन्त्रों की सहायता से किसी तरह गैस बराबर की गई। इसके बाद कील-काँटे देखे, पोंछे और ठीक

किये गये। उनमें चिकनाई दी गयी। अन्त में पेट्रोल आदि भरकर सब दुरुस्त कर लिया गया।

सब ठीक हो जाने पर जान तथा साम यान की देखरेख के लिए रह गये। देव और जमशेद नगर में गये।

बेलेम (पारा) ठीक भूमध्य रेखा पर पड़ता है। वह एटलांटिक महासागर और अमेजेन नदी के सगम पर बसा है। दक्षिणी अमेरिका के प्रायः सारे उत्तरी भाग की अनेकानेक नदियाँ अमेजेन मे आकर मिलती हैं। जहाँ वह समुद्र से मिली है, वहाँ उसका मुहाना प्रायः दो सौ मील लम्बा है। उसके कारण समुद्र का पानी प्रायः पाँच सौ मील तक पीले रङ्ग का देख पडता है। यह अमेजेन द्वारा समुद्र मे फेंकी गई पीली मिट्टी का प्रभाव है। बेलेम मे प्रायः प्रति दिन पानी बरसता है।

बेलेम महत्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्र है। वहाँ ससार के सभी देशों के जहाज आते-जाते रहते हैं। इससे हमेशा खूब चहल-पहल रहती है।

नगर को देखते हुए देव और जमशेद सब से पहले डाकखाने मे गये। वहाँ तार द्वारा इस मजिल के समाचार और हेलियम-गैस के भेजे जाने के प्रबन्ध की सूचना तथा पैकेट द्वारा रास्ते में लिये गये चित्र भेजे गये।

इन कामों से फुरसत पाकर दोनों आवश्यक वस्तुएँ खरीदने लगे। केलों और शन्तरों के मिठास और सस्तेपन पर उन्हें बडा आश्चर्य हुआ।

सब चीजे खरीदकर ज्योंही वे चलने लगे, त्योही उन्हें एक बुड्ढा मिला। उसके कन्धे पर बन्दर का एक छोटा बच्चा बैठा हुआ था।

बच्चा कूदकर जमशेद के कन्धे पर आ बैठा। फिर उसने नीचे सरककर जमशेद के जेब में हाथ डाला और चाँदी का एक सिक्का निकाल लिया। यह देख, देव खिलखिला कर हँस पड़ा। बच्चे ने उछलकर उसके टोप को उतार अपने सर पर रख लिया। जमशेद ठठाकर हँस पडा।

बुड्ढा घिघियाकर बन्दर को खरीद लेने का आग्रह करने लगा। मोलतोल के बाद बडी कठिनाई से जमशेद ने सौदा तय किया। बुड्ढे के हाथ मे दाम दे, बन्दर को कन्धे पर बैठा, वे दोनो जल्दी-जल्दी अपने वायुयान के पास आये। बन्दर को देख, जान और साम बड़े प्रसन्न हुये। दोनो उससे खेलने लगे। सबने मिलकर उसका नाम 'पारा' रख दिया।

दिन बीत चुका था। किन्तु रात चाँदनी थी। आसमान भी साफ था। उड़ाके सब ठीक-ठाक कर वेलेम (पारा) से आगे बढे। महासागर के ऊपर से वायुयान अफ्रीका की ओर जाने लगा। इस मजिल का अन्त फ्रीटाउन पहुँचने पर था। यह मजिल दो हजार मील की थी। काफी खतरनाक भी। पूरे रास्ते मे नीचे अगाध जलराशि को छोड़कर और कुछ न था। बवण्डरो-तूफानो का सामना था।

पर उड़ाको के मन में कोई शका न थी। उन्हें 'गरुड़' पर पूरा विश्वास था।

---

(४)

दूसरा षड्यंत्र : असह्य देर

महासागर पर उड़ते-उडते रात बीत गई। सवेरा हुआ। पहले साम और जान संचालन करते रहे। देव और जमशेद ने आधी रात तक नींद ली। उसके बाद साम और जान ने आराम किया, देव और जमशेद वायुयान को चलाते रहे। 'पारा' एक ओर दुबका पड़ा रहा। उसके लिए यह नया अनुभव था।

पौ फटते ही जान ने हड़बड़ा कर आँखे खोलीं। देखा, पारा छाती पर जमा है। उसका एक नन्हा हाथ जान की नाक दबाये हुए है और दूसरा आँखों के पलक उघारने की कोशिश में है। नाक बन्द किये जाने से जान का दम घुटने लगा। सहसा उसकी आँखे खुल गई।

पारा उसे जगा हुआ देख, उछलकर पास ही एक ओर जा बैठा और आँखे मटका-मटकाकर, हाथ चला-चलाकर जोर-जोर से किल-किलाने और अजीब तरह से बड़बड़ाने लगा। साम भी जाग पड़ा।

देव और जमशेद ने पीछे मुड़कर देखा। दोनों साथियों को हड-बड़ा कर उठते देख, वे सारी परिस्थिति समझ कर जोर-जोर से हँसने लगे।

जान और साम ने बिस्तरो से कूद कर 'पारा' को घेरा। वह किलकता हुआ उछल-कूद कर भागने की चेष्टा करने लगा। पर जान ने उसे पकड़ लिया और वह उसे उठाकर खिड़की पर ले गया। 'पारा'

खिड़की से नीचे झाँकते ही जोर से चीख उठा। नीचे—बहुत नीचे—समुद्र की बड़ी-बड़ी लहरें विचित्र समाँ बाँधे हुए थीं। पर 'पारा' डर-सा गया। वह जान के हाथो में जोर-ज़ोर से छटपटाने लगा। अन्त में जान ने अपनी मुट्ठियाँ ढीली कर दीं। 'पारा' उसके हाथ से छूट कर पीछे की ओर जा पहुँचा और एक ओर दबक कर बैठ गया। शायद वह ज्यादा डर गया था।

जमशेद ने कहा—अच्छी एलार्म बड़ी मिली। अब तुम लोगो को जगाने के लिए हम लोगो को कोई कष्ट न करना पड़ेगा। तुम्हें भी अधिक देर तक सोते रहने के भय से एकदम मुक्ति मिल गई। सावधान करने वाली खूब जीती-जागती मशीन मिली।

मुँह धोने के बाद कुछ नाश्ता कर जान और साम यान-सचालन में लगे। जमशेद ने बेतार-के-तार के द्वारा पनामा के लिए रात भर सकुशल यात्रा करते रहने के समाचार दिये। फिर वे दोनो बिस्तरों पर जा रहे।

सूर्योदय के करीब दो घटे बाद जान को सामने, दूर क्षितिज पर कुछ काला-सा देख पड़ा। कुछ देर बाद सागर की लहरो से अठ-खेलियाँ करता हुआ अफ्रीका का विस्तृत तट देख पड़ने लगा। तालिका तथा नक्शे से मिलान करने पर पता चला कि 'गरुड़' तनिक दक्षिण की ओर अधिक जा रहा था। साम ने उसका रुख बदल कर ठीक कर दिया। देखते-देखते वे फ्रीटाउन के पास जा पहुँचे। गौर से देखने पर एक बडे मैदान में उन्हें अड्डे के चिह्न दृष्टिगोचर हुए। धीरे-धीरे 'गरुड़' भूमि पर उतरा। जमीन गीली थी।

जिस समय 'गरुड़' उतर रहा था उसी समय मैदान के एक हिस्से मे उन्हें मनुष्यो की एक वडी भीड के बीच मे 'वायुविजेता' देख पडा। उनके जमीन पर आते ही भीड उनकी ओर दौड़ी। उनमे कुछ अफसर थे। एक ने आकर उनका स्वागत किया। वह उस अड्डे का मुखिया था। उसके बाद अन्य अनेक अफसरो ने आकर उनसे हाथ मिलाये।

सभी तनिक आश्चर्य-चकित-से देख पडे। प्रमुख अफसर ने तनिक सकोच के साथ कहा—'हम आप लोगो के आने की इतनी जल्दी आशा नहीं कर रहे थे। यदि मै जानता कि आप लोग इतनी जल्दी आयँगे तो......'

जमशेद ने व्यग्रता से पूछा—'कारण क्या है ? हम तो करीब-करीब निश्चित समय पर ही पहुँचे। कुछ ही समय का अन्तर. . . '

अफसर ने कहा—'यह ठीक है। पर आपके दूसरे साथियो ने, अर्थात् दूसरे वायुयान के उडाको ने स्पष्ट शब्दों मे कहा कि आप लोगों को दक्षिणी अमेरिका में ही पूरा एक दिन लग जायगा। वायुयान के बिगड जाने के कारण आप लोग आज तो किसी तरह आ ही न सकेंगे।'

जमशेद ने उत्तेजित होकर कहा—'यह बिलकुल झूठ है। दूसरे, उन्हें ऐसा कहने का कोई भी अधिकार नही है। चलिये, पूछिये, उन्होंने यह कहा क्यों ?'

अफसर ने कहा—'इतना ही नहीं। मैंने दोनो वायुयानो के लिए काफी पेट्रोल मँगवा रक्खा था। पर उन लोगो ने हठपूर्वक सभी पेट्रोल

ले लिया है। उनका कहना था कि जब दूसरा वायुयान एक दिन बाद आयेगा तब व्यर्थ में यहाँ पेट्रोल क्यों पड़ा रहने दिया जाय। उन्होंने बड़ी जिद की। अब यहाँ एक बूँद भी पेट्रोल नहीं रहा। कल आयगा।'

जमशेद ने क्रोध से तमतमाते हुए कहा—'यह उन लोगों की सरासर दुष्टता है, भद्दी चाल है। अभी चल कर उनसे आधा पेट्रोल दिला दीजिये।'

अफसर की समझ मे सब बाते आ गई। दूसरे लोग भी चाल ताड़ गये। वे दूसरे वायुयान की ओर दौड़े। किन्तु उनके उस ओर मुड़ते ही जोर की भर्राहट सुन पड़ी और एक सेकण्ड में 'वायुविजेता' जमीन छोड़ कर आसमान की ओर तेजी से उठता देख पड़ा। अफसरों ने चिल्ला-चिल्लाकर हाथों और सरों के इशारों से उसे ठहरने, नीचे उतरने के लिए कहा, धमकी भी दी। पर सब व्यर्थ गया। किसी भी बात की ओर ध्यान न दे 'वायुविजेता' बराबर ऊपर उठता चला गया और एक ही हजार फीट की ऊँचाई से पूर्व की ओर विद्युद्गति से बढ़ गया। सब हाथ मलते रह गये। देखते-देखते 'वायुविजेता' आँखों से ओझल हो गया।

देव, जमशेद आदि मन-मसोसकर रह गये। फ्रीटाउन के अफसरो को भी बड़ा क्लेश हुआ। पर कोई भी कुछ न कर सकते थे। पेट्रोल के लिए अन्त मे दूसरे दिन तक इन्तिजार करना पड़ा।

चारों उड़ाके वायुयान की सफाई के बाद बारी-बारी से नगर में गये। नगर छोटा और गन्दा था। किसी तरह दिन बीता। रात को चारो वायुयान में ही सोये। रात भर जोर से पानी बरसता रहा। साग

मैदान तलाब हो रहा था। देर असह्य हो उठी थी। पर किसी के वस की बात न थी।

सबेरे हाथ-मुँह धोकर चारों ने नाश्ता किया। आठ बजे तक पेट्रोल आ गया। सब ठीक कर अन्त मे चारों 'गरुड' को ले कर ऊपर उठे और पूर्व की ओर बढ चले। वे निश्चित समय से बीस घण्टे पिछड़ गये थे। उनके प्रतिद्वन्दी चौबीस घण्टे उनसे आगे थे। जमशेद यान का सचालन कर रहा था। उसने धीरे-धीरे उसे पूरी गति पर छोड़ दिया। 'गरुड' आँधी की तरह सपाटे भरने लगा। दोनों इजिन एक साथ चालू कर दिये गये।

दोनों इजिनों की भर्राहट और वायु की सरसराहट से 'पारा' भयभीत हो उठा। वह यान के एक कोने मे पूँछ समेटकर दबक रहा।

देखते-देखते 'गरुड' कोंग पर्वत-श्रेणी के ऊपर से होता हुआ, लोम्बा पर्वत के उच्चतम शिखर को पारकर आगे के पठार पर जा पहुँचा। कुछ ही क्षणों में अनेक नदी-पर्वतों पर से होता हुआ वह बम्बारा प्रदेश को पीछे छोड़ आगे बढा। अब वह अफ्रीका के प्रसिद्ध घने, भयावह वन के ऊपर उडने लगा। यहाँ ऊँचे पर्वत न थे। उड़ाकों ने उसे केवल एक हजार फीट की ऊँचाई से ले जाना ठीक समझा।

गगन-चुम्बी, विशाल शाखा वाले भीमकाय वृक्ष, हरी-भरी मोटी-मोटी लताओं-वेलो के जाल, भयकरसिह, व्याघ्र, गेंडे, चीते, हाथी, ओरग-उटग एव अजगर, नाग आदि का बाहुल्य ही अफ्रीका के वनो की विशेषताएँ हैं। वायुयान से वन की प्रायः सभी विशेषताएँ, सभी बहारे बिना खतरे के सुलभ थीं चारो उड़ाके सभी का आनन्द लेते आगे जा रहे थे।

अनेक बार उन्हें शेर, चीते, हाथी, गेड़े-मौज से विचरते देख पड़े। एक स्थान पर उन्हें दो भीषण गेड़े तुमुल युद्ध में सलग्न देख पड़े। यदि 'गरुड' इतना पिछड़ा न होता तो वे अवश्य ही इस अद्भुत सग्राम का जी भर कर मजा लेते। साथ ही, वे शायद शिकार के लिए भी कुछ समय देते। पर परिस्थिति के कारण वे विवश थे। इस अवसर पर एक-एक सेकेंड उनके लिये घण्टों से बढकर मूल्य रखता था। उन्हें इस मजिल के अगले अड्डे कूका पर शाम होते-होते पहुँचना था। कूका अफ्रीका के ठीक बीचोंबीच घोर वन में स्थित चाड झील के किनारे एक बहुत छोटा कस्बा है। सहारा नामक विश्व-विख्यात मरुस्थल कूका के ठीक उत्तर से प्रारम्भ होता है।

अँधेरा होने के पहले ही पहुँचना जरूरी था। कूका ससार से वैसे विशेष नाता-रिश्ता नहीं जोड़े हुए है। रेल, तार का तो कई मजिल तक नाम-निशान नहीं है। आवा-गमन के वैसे विशेष कोई साधन नही हैं। सडकें भी खुदा के फजल से दो हजार वर्ष पुराने नमूने पर टिकी हुई हैं। वाह्य जगत से सम्बन्ध तभी होता है, जब कोई कारवाँ का आश्रय ले। कूका में दो-चार को छोड कर शेप सभी अधिवासी बाबा आदम के जमाने की रीति, नीति, आचार, व्यवहार, ज्ञान, कर्म, शिक्षा दीक्षा, सभ्यता, विश्वास वाले नीग्रो ही हैं। वे अपने सगे-सम्बन्धियो को छोड़कर और सारे जगत के दूसरे प्राणी, मनुष्य आदि सभी को शत्रु ही मानते हैं। इस बीसवीं शताब्दी मे भी वे हजारो वर्ष पुराने विचारो को सुरक्षित रखने मे समर्थ हो सके हैं। उनके बीच में सध्या के बाद जाना खतरे से खाली कैसे हो सकता है।

हवाई-दौड़ के लिए स्थान निश्चित करते समय कूका मे अड्डे को बनाने, वहाँ पेट्रोल आदि का प्रबन्ध करने और वहाँ उपस्थित रहकर उडाको के पहुँचने के समय आदि का निश्चय कर अपने हस्ताक्षर देने के लिए किसी जिम्मेदार आदमी की नियुक्ति के निमित्त बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ा था। बड़ी-बडी कोशिशें करने, काफी ज्यादा रुपयो का लालच दिये गये जाने पर कठिनाई से उस प्रदेश में व्यापार करनेवाले एक बेल्जियन सज्जन ने सब बातो की जिम्मेदारी अपने ऊपर ली थी।

पूरी तेजी से वायुयान को चलाते रहने पर भी देव पाँच बजते-बजते उसे निगर नदी तक पहुँचा सका। सात बजे वे सोकोटो प्रदेश के दलदल के पास जा सके। वायुयान की भर्राहट ने दलदल प्रदेश के अनेक भीमकाय पक्षियो को चौंका दिया। उसे कोई भयकर प्रतिद्वन्दी समझ, अनेक पक्षी अपने लम्बे-लम्बे डैने फैला, विचित्र शब्द करते उसके पीछे झपटे। पर उसकी तेजी ने उन्हें मात दे दी। वे चें-टें करते पीछे ही छूट गये।

इधर 'गरुड' बिजली की तरह आगे बढा जा रहा था। उधर सूरज भी अस्ताचल के पीछे उतनी ही तेजी से जा रहा था। होते-होते सूर्य की आभा की लाली भी क्षितिज से विलीन होने लगी। प्रकाश क्षीण से क्षीणतर होने लगा। यदि बीस-पच्चीस मिनट के अन्दर वे कूका न पहुँच सके तो फिर ...”

इसी समय जमशेद उछल पड़ा। सभी उत्सुक हो उसके मुँह की ओर देखने लगे।

---

(५)

जंगलियों का हमला : सर्चलाइट के करिश्में

जमशेद ने कहा—'अनन्त जलराशि !'

सभी ने देखा, उत्तर की ओर जहाँ तक दृष्टि जाती है, जल-ही-जल देख पड रहा है। पूर्व की ओर दृष्टि जाने पर वही दृश्य। दक्षिण की ओर भी वही नज्जारा। केवल पश्चिम की ओर तट भूमि देख पड़ती थी। किन्तु वह भी जहाँ तक दृष्टि जाती थी ऊँचे पेड़ों से आच्छादित थी। मीलों तक घने वन का अखड सिलसिला चला गया था।

पहले उन्हें लाल-सागर का ख्याल आया, फिर हिन्दमहासागर का। किन्तु दूसरे ही क्षण उन्हें विश्वास हो गया कि अभी तक जिस चाल से वे 'गरुड़' को लाये हैं और जितना रास्ता तय किया है उन दोनों के हिसाब से वे न तो लालसागर तक ही पहुँच सकते और न हिन्द-महासागर के सामने ही।

उनके नक्शे में चाड झील थी। आस-पास के चिह्नों मे भी स्पष्ट था कि वह जलराशि चाड झील ही हो सकती है।

'गरुड़' की चाल कम कर दी गई। उड़ाके बड़ी सतर्कता से आस-पास के प्रदेश का निरीक्षण करने लगे। शीघ्र ही उन्हें जङ्गल के बीच,

ऊँचे-ऊँचे पेड़ों से घिरी हुई एक बस्ती-सी देख पड़ी। शायद यही कूका हो। वे उसी ओर मुड़ चले।

कुछ ही क्षण मे वे बस्ती के पास जा पहुँचे। घास-फूस और पत्तों से छाये हुए मिट्टी की दीवाल के छोटे-छोटे अनेक झोंपड़ों के सिवा और कुछ न देख पड़ा। काले-काले कुछ मनुष्य-से नङ्गे बदन इधर उधर लुकते-छिपते और उत्तेजित भाव से वायुयान की ओर हाथों के इशारों से कुछ सकेत करते देख पड़े।

वे उसी स्थान के ऊपर चक्कर लगाने लगे। विमान के ठीक ऊपर आते ही, वहाँ के मनुष्य एकाएक कही जाकर छिप रहे। मानों पृथ्वी उन्हें निगल गई हो! 'गरुड' ने बस्ती के ऊपर अनेक चक्कर काटे, किन्तु फिर वहाँ एक भी मनुष्य न देख पडा। मानो वहाँ कोई रहता ही न हो!

जान ने हँसते हुए कहा—'शायद हमारे वायुयान को ये जङ्गली कोई आसमानी बला समझ, डर के मारे जान बचाने के लिए एक दम छिप गये हैं। खूब! इस बीसवीं शताब्दी में भी इतना अज्ञान! इतना अन्धविश्वास!!'

देव ने हँसते हुए कहा—'ससार मे इस बीसवी शताब्दी में भी बाबा-आदम के जमाने के प्राणी जीवित हैं। कुछ जाग्रत राष्ट्रों के लिए यह अच्छा ही है। नही तो वे प्रभुत्व ही किस पर करेगे! उनके साम्राज्य ही कैसे और कहाँ कायम होंगे!! वे किनकी मेहनत पर गुलछर्रे उड़ाएँगे!!!'

जमशेद—'किन्तु यदि यह कूका है तो हमसे पहले वायु-विजेता यहाँ अवश्य ही आया होगा। उसे देख इन्हें अब तक वायुयान से परिचित तो हो ही जाना चाहिए। हमारा वायुयान इनके लिए एकदम नया-सा जान पड़ता है? सवर्था हौवा! कोई दैवी वस्तु!!'

साम अभी तक तेजी मे चारों ओर नजर दौड़ा रहा था। उसकी तेज और सधी हुई आँखे अड्डे के चिह्न की खोज मे थीं। इसी समय लाल-सफेद झण्डा उसकी दृष्टि में पड़ा। खुशी से उछलकर उसने अंगुली से उस ओर संकेत करते हुए कहा—'वह रहा झण्डा।'

सभी उस ओर देखने लगे। बस्ती के उत्तर की तरफ जङ्गल के बीच एक मैदान था। वहीं लाल-सफेद झण्डे के पास एक मनुष्य यूरोपियन पोशाक में उन्हें पुकार रहा था। वही इस अड्डे का प्रबन्धक था।

'गरुड़' उसी मैदान में उतारा गया। यान के भूमि पर पहुँचते न-पहुँचते प्रबन्धक दौड़ कर हाँफता हुआ उसके पास आया। उसके चेहरे पर घबराहट के चिह्न थे। वह भयविह्वल था।

देव यान से नीचे कूदने लगा। उसने उसे रोकते हुए भर्राई हुई आवाज मे कहा—'अभी वहीं रहिये। क्या आपके पास इतना पेट्रोल है कि आप आगे की मंजिल तक पहुँच सके?'

उड़ाके चक्कर में थे। घबराहट क्यों? यह सवाल कैसा?

जमशेद ने पूछा—'अदन जाने तक?'

प्रबन्धक ने जल्दी से कहा—हाँ, अदन तक के लिए!'

जान—'क्यों ? क्या बात है ? क्या पेट्रोल नहीं है ... ?'

प्रबन्धक ने बीच में ही तेजी से कहा—'पेट्रोल तो बहुत है। पर...' यह कह उसने बडी सतर्कता से झोपडियों की ओर एक अजीब ढङ्ग से देखा। मानों वह किसी भारी घटना की आशका कर रहा हो। झोंपडियों के आसपास सन्नाटा था प्रबन्धक ने तनिक जोर से साँस खींचते हुए कहा—'पेट्रोल आदि सभी काफी से ज्यादा है। मैं पहले से ही प्रबन्ध कर चुका हूँ। किन्तु यहाँ आप बड़े सकट मे हैं। जीवन-मरण का प्रश्न है। यहाँ एक क्षण भी रुकना ठीक नही है।'

देव ने गम्भीर होकर कहा—'यह क्यों ? क्या हुआ ?'

सभी उडाके सिहर उठे। उस भयावह वन में, रात के समय हिंसक जङ्गलियों के बीच उन्हें भी भय-सा लगने लगा।

प्रबन्धक ने झोंपड़ियों की ओर तीव्र दृष्टि से देखते हुए जल्दी-जल्दी कहा—'आज सवेरे आपके प्रतिद्वन्दी यहाँ उतरे। इन हब्शियों के जीवन में वह पहला ही वायुयान इस प्रदेश मे उतरा था। हब्शियों ने समझा कि उनको दड देने और उनके बालकों को निगल जाने के लिए उनके देवता जोब्बा-जोब्बा ने यह रूप धारण किया है। पहले तो वे बहुत डरे, भाग कर जङ्गल में छिप गये। किन्तु जब उन्होंने देखा कि वायुयान मे से उन्हीं की तरह दो हाथ दो पाँव वाले चार मनुष्य निकल कर उनकी बस्ती में मटरगश्ती कर रहे हैं, तो धीरे-धीरे उनका भय कम हुआ। साहस बटोर कर वे अपनी झोपड़ियों मे लौट आये। किन्तु वायुयान से दूर ही रहे। पीटर और क्राब ने उनसे

बातें करनी चाहीं, पर बहुत प्रलोभन देने पर भी कोई उनके पास न आया। चलते समय पीटर किसी तरह से चुरा कर इनके पवित्र देव ओगूनोगू की सोने की मूर्ति ले गया। किन्तु यह भेद तब खुला जब 'वायुविजेता' दूर निकल चुका था। तभी से बस्ती के सभी छोटे-बडे अपने देवता को चुराने वालों से घोर बदला लेने के लिए कसमे खा रहे हैं। जब आप लोग आये, तो यह समझ कर कि यह वही विमान है, ये लोग बदला लेने की तैयारी करने लगे। मैंने समझाने की चेष्टा की, किन्तु कुछ फल नहीं हुआ। उन्हें विश्वास नही होता कि उनके देवता को चुरानेवाले दूसरे विमान के उड़ाके थे। वे दोनों को एक-ही समझ बैठे हैं। उनका कहना है कि अब फिर किसी दूसरे बुरे उद्देश्य से आप लोग आये हैं और फिर उन्हे तङ्ग करेंगे। इस विश्वास के कारण वे पहले से ही हमला कर आप लोगों को मार डालना चाहते हैं।

रात्रि का अन्धकार बढ रहा था। इस समाचार से उड़ाको के दिलों पर भी भय का प्रभाव बढ रहा था।

सबने एक ही उद्देश्य से झोंपड़ों की ओर देखा। वहाँ इस समय भी शान्ति थी, पूरा सन्नाटा था। चिड़िया का एक पूत भी चहकता न देख पड़ता था।

जान ने साहस बटोर कर कहा—'बस्ती की ओर तो ऐसा सन्नाटा है, जैसे कोई वहाँ है ही नहीं। शायद बस्ती वाले इतने भयभीत हो गये हैं कि सब-के-सब साँस खींचे छिपे पड़े हैं।'

जमशेद ने कहा—'हममें से एक बन्दूक लेकर पहरा देगा, बाकी तीन जल्दी-जल्दी पेट्रोल, गैसोलीन आदि भर लेंगे। हम इतनी तेजी से आ रहे हैं कि अब आगे बिना गैसोलीन के जाना सम्भव नहीं है।'

डरते डरते बारबार बस्ती की ओर देखते, प्रबन्धक गैसोलीन, पेट्रोल आदि देने लगा। देव बन्दूक लेकर पहरा देने लगा। बाकी तीन जल्दी-जल्दी पेट्रोल आदि भरने लगे।

प्रायः बीस मिनट बीत गये। इसी समय देव को कुछ काली-काली छायामूर्तियाँ झोंपड़ों से निकलकर पास के झुरमुट में एकत्र होती देख पड़ीं।

प्रबन्धक ने जल्दी-जल्दी उड़ाकों के रजिस्टर में समय, स्थान आदि दर्ज कर अपने हस्ताक्षर किये।

पेट्रोल भरकर जान आदि पानी के लिए आगे बढे। इसी समय बस्ती से सहसा उन्हे गगन-भेदी, हृदय-विदारक रणनाद सुन पड़ा। सब की आँखे उधर ही घूम गईं। सब ने देखा, एक सेकण्ड मे बस्ती के पास वाला मैदान सैकड़ों मनुष्यों से भर गया है। प्रतिक्षण उनकी संख्या बढ़ती ही जाती है। सभी सशस्त्र हैं। सभी अपने-अपने अस्त्र-शस्त्रों को हिलाते-घुमाते, जोर-जोर से हुंकार करते, चीखते-चिल्लाते, उछलते, कूदते, पैतरे बदलते विकटरूप मे वायुयान की ओर बढे चले आ रहे हैं।

कुछ देर तक तो चारों उड़ाके भय से स्तंभित हो काठ बने जहाँ-के-तहाँ खड़े आँखे फाड़-फाड़ कर आक्रमणकारियों की ओर निर्निमेष

दृष्टि से देखते रह गये। अत्यधिक भय के कारण उनके होश उड़ गये थे। उनके मस्तिष्क ने काम करना एकदम बन्द कर दिया था। वे जड़-से हो गये थे।

इसी समय प्रबन्धक ने उन्हें सचेत करते हुए कड़क कर कहा—'आप लोगों ने बड़ी देर कर दी। अब तो भागने का मौका नहीं रह गया है। हिंसक जन्तुओं की तरह पागल होकर जगली आक्रमण कर रहे हैं। फौरन वायुयान के अन्दर जाइये और जहाँ तक बन पड़े अपनी रक्षा की चेष्टा कीजिये। जल्दी कीजिये, जल्दी।'

देव ने सबसे पहले होश संभाला। वायुयान की ओर अपने साथियों को ढकेलते हुए उसने प्रबधक से कहा—'और आप?'

प्रबन्धक ने उत्तर दिया—'मेरी चिन्ता में न पड़ो। वे मुझे जानते हैं। मैं उड़ाका नहीं हूँ। वे मुझसे कुछ न बोलेंगे।' यह कह वह तेजी से एक ओर चला गया।

उड़ाके दौड़ कर वायुयान के अन्दर चले गये।

उड़कर निकल जाना असम्भव था। इजिन के स्टार्ट करते-न-करते हब्शी उन पर टूट पड़ते।

अब केवल एक उपाय रह गया था। वायुयान के अन्दर से युद्ध करते हुए जब तक हो सके प्राणों की रक्षा करना।

चारों ने बन्दूके सभाल लीं। वे जान देने के लिए तैयार हो गये।

किन्तु मरने के पहले वे आक्रमणकारियों को भी अपने जौहर दिखला देना चाहते थे।

आक्रमणकारियों ने पहले घेरा काफी बडा कर रक्खा था। किन्तु जैसे-जैसे वे वायुयान के पास पहुँचते जाते थे, वैसे-ही-वैसे उस घेरे का व्यास कम होता जाता था।

कुछ ही क्षणों में वे इतने पास आ गये कि उनके अगप्रत्यग बिल्कुल साफ देख पड़ने लगे। प्रत्येक के हाथ मे बरछा, फरसा, लाठी, तीर-कमान में से कोई-न-कोई हथियार जरूर था। उनके चेहरों, भुजाओं, छातियों पर तरह-तरह के गुदने गुदे हुए थे। एक-एक लगोटी के सिवा उनके बदन पर और कोई वस्त्र न था। भाले-बरछे हिलाते, लाठियाँ घुमाते, तीरों को कमानों पर चढ़ाये वे पैतरे बदलते आगे बढ रहे थे।

उड़ाकों को जीवन की आशा से बिदा लेनी पड़ रही थी। शत्रुओं के समुद्र से पार पाना सम्भव न देख पड़ता था।

उनके मन में एक बात और उठी। यदि दैवयोग से बन्दूकों और कारतूसों के कारण इतने शत्रुओं से बच भी गये तो इस घोर वन से निकल भागना सरल न था। इतने मनुष्यों के प्रबल वारों से वायुयान, हेलियम-गैस के थैले, पेट्रोलियम की टकी, इंजिन आदि कैसे बचे रहेंगे। वायुयान के चिथड़े-चिथड़े उड़ जायँगे। ऐसी दशा में 'दुनिया का चक्कर' यहीं, इस घोर वन में समाप्त हो जायगा।

जीवन की और अपने सगे सम्बन्धियों से मिलने की आशा छोड़, चारों शत्रुओं का सामना करने के लिए तैयार हो गये।

इसी समय बिजली की तरह जमशेद के मस्तिष्क मे एक विचार कौंध गया। उसने जोर से चिल्ला कर कहा—'सर्चलाइट'!

देव ने उछल कर कहा—खूब ! सर्चलाइट जला कर देखा जाय। शायद जगली डर जाये ?

पलक मारते ही उड़ाकों ने सर्चलाइट जला दी। आक्रमणकारियों पर अचानक प्रकाश की एक तीव्रतम धारा छूट पड़ी।

दूर तक उग्रतेज की तीव्रतम धारा प्रवाहित होने लगी। सहसा सूर्य-सा निकल आया। आक्रमणकारी क्षणेक चित्र लिखे से रह गये। इतने तीव्र प्रकाश ने सहसा प्रकट होकर उन्हें स्तम्भित, चकित, भयग्रस्त कर दिया। वे पत्थर की मूर्तियों की तरह कुछ सेकएड तक जैसे-थे-वैसे ही खडे रह गये। उनके मुँह से शब्द तक न निकला। उनके हाथ-पैर जकड़ गये।

फिर सहसा जागकर वे एक दम पीछे हटे और कुछ पग पीछे-पैर हटाकर देखते-देखते भाग खड़े हुए।

पहले वे अपनी झोंपड़ियों की ओर गये। पर इस अद्भुत प्रकाश ने वहाँ भी उनका पीछा न छोड़ा। तब वे उसी ओर के वन से भाग गये।

देखते-देखते सारा मैदान खाली हो गया।

भागते समय अनेक हब्शी एक दूसरे के ऊपर गिरे। उनके हाथों मे अस्त्र-शस्त्र छूट-छूट कर मैदान भर मे फैल गए।

गिरते-पड़ते प्राण बचा कर वे जङ्गल मे जा छिपे।

भागते समय अनेक हब्शी शस्त्र छोड़, सिर पृथ्वी पर रख, उस विचित्र प्रकाश-धार को दण्ड-प्रणाम भी करने से न चूके।

उस समय उनकी आकृतियाँ दर्शनीय थीं।

सार्चलाइट के प्रकाश के पडते ही जङ्गली एकदम घबरा उठे थे। यह देखते ही उडाकों का भय दूर हो गया था। उनके हृदय में साहस और आशा का सचार हो गया था। वे प्रकाश की धारा का सञ्चालन इस प्रकार से करते रहे कि हब्शी अधिक-से-अधिक भयभीत हों। वे एक-एक करके सभी के ऊपर प्रकाश-धारा को छोड़ रहे थे।

अन्त में एक भी हब्शी मैदान में न रह गया।

उड़ाकों की जान-में-जान आई। पलक मारते उन्होंने उतर कर वायुयान को दूसरी ओर मोडा, इञ्जिन चालू किया और तुरन्त आकाश की ओर उड चले। अब वे खतरे से बाहर थे।

एक हजार फीट की ऊँचाई पर पहुँच कर उन्होंने सर्चलाइट का प्रकाश उस मैदान पर फेंका। वह खाली पड़ा था।

दो हजार फीट की ऊँचाई पर पहुँच कर देव ने गरुड को पूर्व की ओर आगे बढाया। अब वे तारों से सुशोभित आकाश और स्वच्छ, शीतल चन्द्र-किरणों का आनन्द लूट रहे थे।

चाड झील के जल में तारों की झिलमिलाहट और चन्द्र-किरणों की आभा अपूर्व दृश्य उपस्थित कर रही थी।

---

(६)

घोर व में गोरिला से मुठभेंड़

'गरुड़' फिर आँधी की तरह सपाटे भरने लगा। जान और साम मशीन की तरह उसका सञ्चालन कर रहे थे। देव और जमशेद 'पारा' से खेल रहे थे। हब्शियों के काण्ड के बाद जल्दी ही कुछ करना या सोचना सम्भव न था। उत्तेजित मस्तिष्क और सकोचित-विस्तारित स्नायु विश्राम चाहते हैं, मनोरञ्जन के भूखे हो जाते हैं।

कुछ समय बीता। उनके मन बदल गये। देव और जमशेद का ध्यान समय और 'गरुड' की तीव्र गति की ओर आकर्षित हुआ। नक्शों, तालिकाओं से उस प्रदेश का मिलान कर उन्होंने देखा। उनके चेहरे खिल उठे।

देव ने कहा—'कूका तक हमने प्राय. दस घण्टे पूरे कर लिये। हम निश्चित समय से केवल आठ-दस घण्टे पिछड़े हैं।'

जमशेद—'और जिस गति से हम चल रहे हैं यदि उसी तेजी से बराबर चलते रहे, कोई विघ्न न पड़ा, कहीं रुकना न पड़ा तो अगले अड्डे अदन पर हम निश्चित समय पर पहुँचेंगे।'

जान—'इस से बढकर प्रसन्नता की दूसरी बात तो हो ही क्या सकती है।'

साम—'कहीं हिसाब में गलती तो नही की ?'

देव—'नही, हमने हिसात्र त्रिल्कुल ठीक लगाया है। हमारे नक्शे, तालिकाएँ, वर्तमान समय आदि सभी से यह त्रात स्पष्ट है कि हम इस समय जिस प्रदेश पर होकर जा रहे है वहाँ हमें सात-आठ-दस घन्टे पहले पहुँचना चाहिये था। इस प्रकार हमने आठ-दस घण्टे पूरे कर दिये। और अब जितनी दूर अदन रह गया है उस फासले को हम अपनी वर्तमान गति से चल कर सवेरे तक में तय कर डालेगे।'

जमशेद—'और वैसे निश्चित समय के अनुसार भी हमे सवेरे तक अदन पहुँचना चाहिये।'

जान—'यही तेजी रही तब तो बाजी हमारे ही हाथ रहेगी।'

जमशेद—'केवल पानी का सवाल है।'

साम—'पानी के लिए तो हमे बीच में उतरना ही पड़ेगा।'

जान—'किसी पर्वतशृङ्ग पर अथवा वृक्षों की फुनगियों पर!'

जमशेद—'अथवा किसी मदमाते हाथी के मस्तक पर या किसी रणराते गैंड़े की पीठ पर!'

देव ने हँसते हुए कहा—'उतारना तो पडेगा ही, आगे जहाँ भी सुभीतेका स्थान देख पड़े वहीं उतरा जाय। देर करना भी ठीक न होगा।'

साम—'रात चाँदनी है। आसमान भी साफ है। पानी के पास जही खुला मैदान मिलेगा वहीं उतर पड़े गे।'

जमशेद—'और यदि कोई सकट उपस्थित होगा, तो सर्चलाइट तो काम देही जायगी।'

सब खिलखिला कर हँस पड़े।

कूका के आक्रमण की बात करते वे आगे बढे। आसपास किसी ऊँचे पर्वत-शिखर की आशका न थी। अब अधिक ऊँचाई पर उड़ने की आवश्यकता न थी। 'गरुड़' एक हजार फीट की ऊँचाई ने भी कम पर रक्खा गया। इतनी ऊँचाई से नीचे उतरने के लिए उचित स्थान पसन्द करने में आसानी भी थी। रात सुहावनी थी। यान की खिडकियाँ खोलकर उड़ाके वायु के झोंकों का आनन्द लेते और उतरने योग्य उचित स्थान के लिए सतर्क हो नीचे देखते हुए आगे बढे।

कुछ देर बाद जगल के एक ओर उन्हें एक चमचमाती लकीर-सी देख पडी। आगे बढने पर वह चमकदार लकीर कुछ अधिक चौड़ी हुई। देखते-देखते वे एक नदी के किनारे-किनारे जाने लगे। चाँदनी में उसका पानी शीशे की तरह चमक रहा था।

आध घन्टे नदी के तीर-तीर उड़ते रहने पर उन्हें ऊँचे-ऊँचे पेड़ों के बीच एक साफ मैदान देख पड़ा। लम्बे-लम्बे घास के अलावा उसमें न तो वृक्ष ही थे और न झाड़ियाँ ही। देव उसपर चक्कर काट कर धीरे-धीरे सावधानी से 'गरुड़' को जमीन पर उतार ले गया।

यान से उतर, पीपे लेकर चारों नदी की ओर बढे। वे बन्दूकें, छूरे और एक बडी टार्च लेना भी न भूले। नदी और मैदान के बीच में जगल पड़ता था। पेड़ों की नीची डालों, उभरी हुई जड़ों और तनों से लिपटी हुई लताओं से बचते, वे बड़ी कठिनाई से कूदते-फाँदते गिरते-पड़ते कुछ देर बाद किसी तरह नदी के तीर पहुँचे।

टार्च से उन्होंने नदी की धार तथा आसपास के स्थान को गौर से जाँचा । न तो नदी बहुत गहरी थी और न आसपास का स्थान ऊबड़-खाबड़ और खतरनाक ही । उन्होने पहले अपने पीपे भरे, फिर कपड़े उतार कर नदी में खूब स्नान किया । अनेक दिन बाद उन्हे ऐसा सुयोग मिला था । नई जवानी की उमग मे आकर वे एक दूसरे के ऊपर पानी उछालने, गोते देने, भागने, पकड़ने, किलोलें करने में ऐसे मस्त हो गये कि उन्हें समय का विचार ही न रह गया । किलकारियो, ठहाकों से दिशाएँ गूँज उठीं ।

प्रायः पौन घन्टे बाद उन्हे होश आया । वे जल्दी-जल्दी पानी के बाहर आये और कपड़े पहन, पीपे उठा, हडबड़ा कर यान की ओर चले ।

कुछ ही कदम बढने पर उन्हें जगल में आगे की ओर किसी भारी डाल के टूटने की भीषण ध्वनि सुन पड़ी । सुनसान जंगल, रात का समय, दैत्य-से भयोत्पादक पेड़ । उनके बीच सहसा उठने वाली भीषण ध्वनि । सब ने मिल कर एक अजीब आतक को जन्म दिया ।

चारों जहाँ-के-तहाँ रुक गये । उनके हृदय धक-धक करने लगे ।

कुछ क्षण तक वे चुपचाप खड़े टोह लेते रहे । पर फिर कुछ न सुन पड़ा । तब वे साहस कर आगे बढ़े ।

अभी वे बीस-पच्चीस कदम चले होंगे कि फिर उन्हें उसी तरह किसी भारी डाल के टूटने का-सा भयकर शब्द सुन पड़ा । इस बार बहुत ही पास, बिल्कुल सामने ही ।

उन्हें देख कुछ न पड़ता था। किन्तु उनके मन में मानों कोई कह रहा था कि किसी भारी विपत्ति का सामना करना पड़ेगा, कोई भयकर हिंसक जन्तु—कोई भीमकाय विकट दैत्य—उन पर आक्रमण करने की घात में है।

किसी दैवी शक्ति की प्रेरणा से चारों ने एक साथ ही अपने-अपने पीपे भूमि पर रख दिये और वे बन्दूकें साध कर खड़े हो गये। जैसे यत्र-परिचालित पुतले हों। यह सब पलक मारते हो गया। वे स्वय न जान सके कि वे क्या कर रहे हैं।

उन्हें एक अजीब बेचैनी मालूम हुई। सारे बदन में भय का सचार हो गया। उनके कान दिल की धकधकाहट साफ सुन रहे थे।

दूसरे ही क्षण उन्हें सामने के पेड़ों के बीच से पत्तों की मरमराहट और हल्की-सी सरसराहट सुन पड़ी। प्रति पल शब्द अधिक स्पष्ट होता जाता था, अधिक नजदीक-सा आता जाता था। सहसा ठीक उनके सामने ही वह मरमराहट-सरसराहट आकर कुछ दब-सी गई। जैसे कोई पत्तों-लताओं को हटाकर उन पर टूट पड़ना चाहता हो और फिर पल भर के लिए रुक-सा गया हो। मरमराहट एकदम रुक गई।

एक क्षण के लिए बिल्कुल सन्नाटा छा गया। कहीं चूँ तक न सुन पड़ी। ससार सूना-सा हो गया।

किन्तु मृत्यु का-सा यह सन्नाटा केवल एक क्षण तक रहा। सहसा दूसरे ही क्षण सारा जगल एक विकट गर्जन, अत्यन्त भयावह चीत्कार, हृदय-द्रावक नाद से परिपूर्ण हो गया। यह विकट गर्जन बराबर तीन

वार हुआ। ठीक एक के बाद दूसरा और दूसरे के बाद तीसरा। प्रतिबार अधिक तीव्र, अधिक भयावह। सारा वनप्रदेश ध्वनि-प्रतिध्वनि से कॉप उठा।

चारों उड़ाकों के रोंगटे खड़े हो गये। वे थर-थर कॉपने लगे। उनकी चेतना विलुप्त होने लगी।

जान के पास टार्च थी। किसी अदृश्य शक्ति ने उसे चेतना दी, प्रेरणा की। एक हाथ से बन्दूक साधे हुए ही उसने उसे दूसरे हाथ से जलाया। सामने तेज प्रकाश की धारा फैल गई। सामने के पेड़-पौधे, लता-पत्र आदि सभी चमक उठे।

उनके बीच उडाकों ने जिस भीषण आकृतिवाले दानव को देखा, उससे उनकी आत्मा कॉप उठी।

चारों ने देखा, टार्च के तीव्र प्रकाश मे, पेड़ो के बीच एक विकराल यमदूत उनपर आक्रमण करने को घात मे खड़ा है। उसकी खीसे निकली हुई हैं। दॉत इतने बडे, ऐसे नुकीले हैं कि एक ही बार मे उनके बीच में पड़कर बलवान-से-बलवान मनुष्य का कोई भी अङ्ग छिन्न-भिन्न हो सकता है। उसके विकराल चेहरे मे क्रोध टपक रहा है। छोटी, अन्दर को धॅसी हुई क्रूर ऑखें हिन्सा-वृत्ति से दमक रही हैं। चौड़ी, चिपटी नाक के बडे-बड़े छिद्रों से वायु जोर-जोर से अन्दर-बाहर आ-जा रही है। मानों धौंकनी चल रही हो। नीचे का बेडौल जबडा कॉपता हुआ लटक रहा है। छोटा-सा चिपटा माथा चमडे की सिकुडन से गायब-सा हो रहा है। शरीर-भर बड़े-बडे रोओं से ढका हुआ है।

पलक मारते-न-मारते उन्होंने यह सब देख लिया।

उधर टार्च की रोशनी ऊपर पडते ही दानव गर्जन-पर-गर्जन करने लगा। उस गर्जन में बुलडाग के भौंकने की और सिंह की दहाड़ की भीषणता मानों मिली हुई थी। एक अजीब गुर्राहट के साथ दहाड़ होती और मीलों तक गूँजती-थर्राती चली जाती।

दहाड़ते-दहाड़ते वह सहसा अपने हाथों से अपनी छाती पीटने लगा। हर आघात से ढोल की-सी आवाज निकलती।

शायद यह युद्ध की घोषणा थी। रण के निमित्त आमन्त्रण।

उसकी छाती शिला की तरह चौड़ी और पुष्ट थी। उसके भुज-दण्ड हाथी की सूँड की तरह भारी, लम्बे और मोटे थे। उसके एक प्रहार से मस्त-से-मस्त भैंसा धराशायी हो जाता।

क्रोध के कारण वह पागल था। बाल खडे होगए थे।

वह गोरिला था।

टार्च के प्रकाश ने क्षण-भर के लिए उसे चकित-सा कर दिया। तेज रोशनी ने उसकी आँखों में चकाचौंध पैदाकर दी।

यही क्षण उड़ाकों के लिए अमूल्य सिद्ध हुआ।

पहले क्षण वे दहल गये थे। किन्तु कायरता निश्चित मृत्यु का कारण होती। मौत को सामने देख, उनमें सहसा साहस का सचार हुआ।

सब ने एक साथ ही बन्दूके दाग दीं। चार बन्दूकों के एक साथ छूटने के धाँयँ-धाँयँ से जङ्गल गूँज उठा। तीन गोलियाँ गोरिला के शरीर मे जाकर विलीन हो गईं। चौथी उसके कान को छूती हुई सर्र से निकल गई।

कानों के पर्दों को फाडनेवाली भयावह चीत्कार करता हुआ गोरिला ऊपर को खूब ऊँचा उछल गया। फिर वह उसी तेजी से आगे की ओर झपटा।—मुँह खोले, दाँत निकाले।

भय के मारे चारों उड़ाके तेजी से पीछे की ओर पिछड़े। किन्तु उनकी आँखे बराबर उसी की ओर थीं। बन्दूके उसी पर सधी थीं।

गोरिला चीत्कार करता हुआ उनके सामने गिरा। यदि वे इतनी तेजी से पीछे न हटते, तो वह उनके ऊपर ही गिरता।

जान के एक हाथ में टार्च थी। दूसरे मे बन्दूक। पीछे हटते-हटते गोरिला उसके पास ही पहुँच गया था। गिरते-गिरते गोरिला ने टार्च छीनने की चेष्टा की। किन्तु टार्च के बजाय उसके हाथ मे जान की बन्दूक पड़ गई। एक झटके मे बन्दूक जान के हाथ से छूटकर गोरिला के हाथ मे आ रही।

जान ने पैंतरा बदलकर जान बचाई। इसी छीना-झपटी में उसकी टार्च छूट कर दूर जा गिरी। किन्तु सौभाग्य से बुझी नहीं। उसका रुख भी गोरिला की ओर ही रहा।

चारों ने आश्चर्य से देखा, बन्दूक को दोनों हाथों से पकड़ कर अपने सर के ऊपर रख गोरिला ने तोड़कर उसके दो टुकडे कर दिये। मानों एक गन्ना तोड़ा गया हो।

यह सब एक क्षण में हो गया। मानो बिजली कौंधी हो।

दूसरे ही क्षण जान ने लपककर टार्च उठा ली और उसका सारा प्रकाश गोरिला पर केन्द्रित कर दिया।

वह गुर्राता हुआ चीत्कार करता हुआ, उठकर उनकी ओर झपटना चाहता था। किन्तु तीन-तीन गोलियों का असर प्रत्यक्ष था। उसकी वह अपरिमित शक्ति क्षीण-सी हो रही थी।

इधर प्राणों के सकट ने उड़ाकों मे बिजली-सी भर दी। जान अपनी सारी शक्ति लगाकर गोरिला पर प्रकाश केन्द्रित कर रहा था, खासकर उसकी आँखों पर ही प्रकाश फेक रहा था।

उसके तीन साथियों ने अपनी-अपनी बन्दूकों को साधकर फिर गोरिला पर गोलियाँ छोड़ीं। तीनों निशाने ठीक बैठे। गोरिला भीषण चीत्कार कर मुँह के बल गिरा और छटपटाता हुआ देखते-देखते शान्त हो गया। उसकी गुर्राहट भी धीरे-धीरे वायु से विलीन हो गई। उसके हाथ-पाँव शिथिल हो गये।

जान बराबर उसी पर टार्च का प्रकाश फेंक रहा था। कुछ देर बाद उन्हें विश्वास हो गया कि गोरिला मर गया। वे धीरे-धीरे सभलकर उसके पास गये। गोरिला एकदम मुर्दा हो चुका था।

जमशेद की जेब में नापने का फीता था। गोरिला का शरीर नापा गया। उसके छाती का व्यास सात फीट था, ऊँचाई साढ़े छः फीट थी।

सब उसकी खाल को ले जाना चाहते थे। साम ने अपने छूरे से उसके चमड़े को उतारा। फिर लताओं से बाँध कर वे सतर्कता से चारो ओर देखते, टोह लेते, सभल-सभल कर आगे बढ़े। जान टार्च लिए आगे-आगे जा रहा था।

उन्हें आशका थी कि गोरिला की दहाड़ से सचेत हो उसका और कोई साथी उन पर आक्रमण न करे। किन्तु उनकी आशका निर्मूल निकली। वायुयान के पास वे सकुशल पहुँच गये। रास्ते मे और कोई दुर्घटना न हुई।

स्नान और जलविहार करते समय उन्होंने जो शोर मचाया था, शायद उसी ने उस गोरिला को उत्तेजित कर दिया था। स्नान के बाद जब वे वायुयान की ओर जाने लगे तो उसने समझा कि ये मेरे या मेरे बच्चों के ऊपर आक्रमण करने आ रहे हैं। अपनी वानरी प्रकृति के अनुसार उसने आक्रान्त होने के पहले ही शत्रु पर आक्रमण कर उसे नष्ट करना अधिक अच्छा समझा।

सब ठीककर चारों 'गरुड' पर बैठ फिर आकाश में जा पहुँचे। गगन में हिंसक जन्तुओं के आक्रमण से अपनेको मुक्त समझ वे आनन्द मनाते हुए आगे बढे।

गोरिला-काण्ड का प्रभाव इतना तीव्र था कि वे 'पारा' के अस्तित्व को ही कुछ समय के लिए भूल गये। किन्तु अधिक देर तक यह स्थिति न रह सकी। उन्होंने देखा, 'पारा' अशान्त है, भयग्रस्त-सा है। उसका चिचियाना पल-पल पर बढ़ता ही जाता है। बेचैनी भी हद दर्जे पर पहुँची हुई है। वह पलभर के लिए भी स्थिर नहीं रह सकता।

पहले तो उन्होंने समझा कि गोरिला की खाल को देख कर 'पारा' डर रहा है। पर फिर उन्हें शीघ्र ही पता चल गया कि 'पारा' का ध्यान गोरिला की खाल की ओर नहीं है। वह पीछे वाली खिडकी की ओर जाता है, वहाँ से चिचियाता हुआ भागता है और उड़ाकों के पीछे आकर दबक जाता है। फिर उसी खिड़की की ओर जाता है और फिर चिचियाता हुआ वहाँ से भागकर उनकी ओर आ जाता है।

जान ने सोचा कि बन्दर पीछे वाली खिड़की से किसी चीज को देखकर भयभीत हो रहा है। उसके कहने से साम ने उठकर उस खिड़की से झाँककर देखा। किन्तु उसने जो देखा उससे उसके देवता कूच कर गये। उसने जोर से खिडकी के किवाडा बन्द कर दिये। फिर सामने मुडकर परेशानी की हालत में कहा—'वायुवान पर एक अजीब यात्री है।'

सबने आश्चर्य से पूछा—'यात्री!!'

साम—'हाँ यात्री!! भीम-काय अजगर!!'

———

(७)

अजगर का फंदा

पहले तो किसी को साम की बात पर विश्वास न आया। वायु-यान पर अजगर कहाँ से और कैसे आया ! शायद साम मजाक कर रहा हो। किन्तु जब हरएक के प्रश्न का साम ने एक ही उत्तर दिया और वह भी गभीरता पूर्वक, भर्राई हुई आवाज मे भयविह्वल भाव से तब अविश्वास का कोई कारण न रह गया। वे एक दूसरे का मुँह देखने लगे।

साम ने चिन्ता-व्यजक स्वर मे कहा—'अजगर दस-बारह हाथ लम्बा होगा। मुटाई तो मेरी पिडलियों से भी अधिक ही होगी, प्रायः जॉघ के बराबर। यदि मै खिड़की न बन्दकर देता तो वह अन्दर आ जाता।'

देव और जमशेद लपककर खिड़की के पास गये। देखा, एक भारी अजगर वायुयान के पिछले भाग और पखो के बीच मे लिपटा हुआ है। जमशेद ने टार्च की तेज रोशनी उसपर डाली। उसके शरीर पर भूरे-पीले चित्ते पड़े थे। पूँछ का अन्तिम भाग सफेदी लिये हुए गहरे नीले रग का था। साम को सचालन का भार दे, जान ने भी अजगर के दर्शन किये।

अजगर उत्तेजित, क्रुद्ध, भयग्रस्त-सा देख पड़ता था। वह वायु-यान के पिछले भाग में अपने शरीर को लपेट कर गिरने से बचना चाहता था। वह कसकर फदा डालना चाहता था, पर वायुयान के

प्रत्येक भाग के अत्यधिक चिकने होने के कारण और साथ ही उसके तेजी से उडते रहने के सबब से पकड़ ठीक न बैठती थी। अजगर बराबर नीचे की ओर देखता, फिर सर घुमाकर वायुयान के विभिन्न भागों को गौर से जॉचता। उसकी दोहरी जीभ बराबर लपलपा रही थी, उसकी अगारे की तरह लाल-लाल ऑखे चारों ओर फिर रही थी। तेज हवा के थपेड़ों ने उसका बुरा हाल कर रखा था। कभी-कभी तो हवा के तेज झोंके को सहना उसके लिए असह्य-सा हो उठता, उसका सारा शरीर सिहर जाता।

जान ने आगे की ओर लौटते हुए कहा—'मैंने इसके पहले इतना बडा सॉप नहीं देखा था। बड़े-से-बड़ा जीव इसके फन्दे मे पड़ कर जीवित तो नहीं निकल सकता।'

देव ने चिन्ता-ग्रस्त मुद्रा मे कहा—'इससे हमें जल्दी ही पीछा छुडा लेना चाहिए।'

जमशेद—'देर होने से भारी खतरा है। यदि कही इसने वायुयान के उन तारो और पुर्जो पर फदा कसा, जिनके द्वारा हम यान का सचालन करते हैं, तब तो कुशल नहीं है। यान का सारा काम ही रुक जायगा। हमें लेकर यान किसी पहाड़, खड्ढ, नदी या सागर में जा गिरेगा। लाख कोशिश करने पर भी हम बच न सकेंगे।

जमशेद की बात ने सबके हृदयों में आतक पैदा कर दिया। यदि कहीं उन तारों और पुर्जो पर अजगर का फदा पड़ गया, तो या तो कल-पुर्जे उस समय आप-से-आप चालू हो जायँगे, जब उन्हें न चलना चाहिये, अथवा उस समय उनका चलना रुक जायगा, जब उनका चलना अत्यावश्यक होगा। दोनो ही दशाओं में भारी खतरे का सामना करना पडेगा।

इसी समय साम ने भर्राई हुई आवाज में कहा—'जैसे भी हो, उससे पीछा छुड़ाओ। यान बेकाबू होता जा रहा है।'

साम यान का संचालन कर रहा था। उसकी इस बात ने सब को भयभीत कर दिया। एक क्षण की भी देर खतरनाक हो सकती थी। पर उसे यान से अलग कैसे किय जाय?

लाठी अथवा बरछा से ठेलने के लिए खिड़की खोलनी जरूरी थी। और खुली खिडकी से उसका अन्दर आना अधिक सम्भव था। फिर वह इतना बड़ा था कि शायद तीनो उसे ठेलकर यान को उसके जबर्दस्त फन्दे से मुक्त भी न कर सकते।

और बन्दूक चलाना तो और भी खतरनाक था। यदि गोली उसके न लगकर यान के किसी खास हिस्से को फोड़ दे, तब तो मामला और भी भयावह हो उठेगा।

बड़ी परेशानी थी।

अन्त में देव ने सर खुजलाते हुए कहा—'कलाबाज़ी का सहारा क्यो न लिया जाय! यान को गिरह देकर, कुलाँट खिला कर उलटा जाय। यान के एकाएक जोर से उलटने-पलटने से शायद घबराहट में अजगर का फन्दा ढीला पड जाय और वह नीचे गिर जाय!'

पर यह उपाय काफी खतरनाक था। किन्तु और दूसरा कोई उपाय न देख, सभी ने इसे मजूर कर लिया।

देव को सचालन का भार दिया गया। कमरे की हर एक वस्तु बाँधकर ठीक कर दी गई। 'पारा' भी एक बिस्तर से जकड़ कर बाँध दिया गया। उड़कों ने अपने शरीरों को भी खूब जकड़कर अपने-अपने स्थान पर कस लिया।

सब ठीक हो जाने पर देव ने गिरह-दार उडान का आयोजन किया। वह पहले 'गरुड़' को प्रायः चार हजार फीट की उँचाई पर

ले गया । फिर उसके अगले हिस्से को इस प्रकार सभालकर उठाया कि यान अपने पिछले भाग पर सीधा खड़ा-सा हो गया। दूसरे ही क्षण देव ने उसे जोर की गिरह दी। जोर के धक्के के साथ यान उलट गया।

बात-की-बात में देव ने उसे सीधा कर ऊपर उठाया और फिर जोर की दूसरी गिरह दी।

यदि पहली बार अजगर न गिरा हो, तो दूसरी बार के झटके से उसे गिरा देना ही उद्देश्य था।

इस बार यान सीधा कर देव उसे उचित रीति से आगे बढ़ाने लगा। यान के सीधे होते ही साम, जान, जमशेद ने फौरन अपने बन्धन खोल डाले और दौड कर वे खिडकी पर जा पहुँचे। टार्च की रोशनी में चारों ओर अच्छी तरह से देखा। अजगर कहीं न देख पड़ा। शायद भूमि पर अथवा किसी भारी वृक्ष की विशाल शाखाओं पर गिरकर वह चूर-चूर हो चुका था।

सकट से मुक्ति हुई। प्रंसन्नता से चारो के चेहरे दमकने लगे।

आज उन्हें तीन बार प्राणों की बाजी लगाकर सकटों का सामना करना पड़ा। तीनों बार उनकी विजय हुई। तीनो बार वे मृत्यु के मुख में जाते-जाते बचे।

चारों के मन, मस्तिष्क, स्नायु ऐसी दशा में थे कि नींद की वहाँ गुंजाइश ही न हो सकती थी।

बातें करते और सुहावनी रात का आनन्द लूटते चारों आगे बढे। यान की चाल काफी तेज कर दी गई। उन्हें सबेरे तक अदन पहुँचना था। पारी पारी से कुछ विश्राम करते वे आँधी की तरह रात भर बढ़ते गये।

अरुणोदय होते-होते वे एबिसीनिया के पठार पर जा पहुँचे। नील नदी, खारतूम आदि को वे रात ही में पार कर चुके थे। सात बजे उन्हें ,सामने दो जल-राशियाँ देख पड़ी। एक दाहिनी ओर और दूसरी बाँयी ओर। तालिकाओं और नक्शों से स्पष्ट हो गया कि उनके दाहिने ओर अदन की खाड़ी है, जो हिन्द-महासागर से मिली हुई है और बाँयीं ओर लाल सागर। इन दोनों जल-राशियों के बीच में जल का एक बहुत ही पतला भाग झलमला रहा था। उसके पश्चिमी भाग मे अफ्रीका की हरी-भरी बड़े-बड़े पेड़ों से लदी पहाड़ियाँ थीं और पूर्वी भाग मे नीचा, रेतीला मैदान था। जल का झलमलाता हुआ यह भाग बाबेलमण्डब नामक जल-डमरू-मध्य, जिसके पूर्व में अरब देश है।

यह सब देखते हुए पन्द्रह-बीस मिनट मे वे अदन के पास जा पहुँचे। अदन के आसपास पहाड़ियाँ-ही-पहाड़ियाँ देख पड़ी। अदन की बस्ती भी ऊँची-नीची पहाड़ी भूमि पर बसी हुई है। वर्षा के जल को एकत्र करने के लिए अनेक स्थानों पर बने हुए पक्के तालाब या कुण्ड अदन की बस्ती की विशेषता हैं। यह सब देखते हुए वे नगर के ऊपर चक्कर काटने लगे। उन्हें दक्षिणी भाग में एक समतल स्थान देख पड़ा। गौर से देखने पर वहाँ लाल-सफेद झडा लहराता नज़र आया। उसी स्थान पर 'गरुड़' उतारा गया।

अड्डे पर मेकलीन नामक अमेरिकन राज-प्रतिनिधि ने उनका स्वागत किया। अँगरेजी फौज के अफसर भी उनसे मिलने के लिए आये थे। 'वायुविजेता' ठीक पद्रह मिनट पहले कोलम्बो के लिए रवाना हो चुका था।

---

(८)

बादलों के ऊपर

अमरीकन राज-प्रतिनिधि, उसकी पत्नी, अँगरेज अफसर आदि ने उन्हें खासतौर से दावत दी। वे अदन से जल्दी जाना चाहते थे, पर लोगों के आग्रह को वे टाल न सके। अफसरों ने ऐसा प्रबन्ध कर दिया कि उन्हें खुद सफाई आदि न करनी पड़े, पेट्रोल आदि न भरना पड़े। इससे उन्हें दो घन्टे का अवकाश मिल गया। उसी का सदुपयोग चारों ने दावत खाने, जगलियो के आक्रमण, गोरिला के युद्ध और अजगर के फँदे के विवरण सुनाने में किया। उनके रोमाचक अनुभवों की वार्ता ने सबको मत्रमुग्ध-सा कर रक्खा था। मेकलीन की युवती पुत्री और किशोर पुत्र तो उनकी बाते सुनते अघाते ही न थे। एक विवरण समाप्त होते ही वे प्रश्न कर दूसरे विवरण को प्रारम्भ करने के निमित्त उड़ाकों को बाध्य कर देते।

दो घन्टे कहाँ उड गये, किसी को पता न चला। अन्त मे विवश होकर उड़ाको को बातों का सिलसिला तोड़ना पड़ा। वे उठे और सब से मिल-भेट कर नगर मे गये। साथ मे मेकलीन, उनकी पुत्री-पुत्र भी थे। पहले उडाके डाकखाने मे गये। वहाँ अब तक के विवरण, फोटो आदि पनामा के लिए भेजे। पनामा से तार आया था कि अमेरिकन जनता उनकी यात्रा के विवरण को बड़ी उत्कठा, बड़े चाव से पढती है। चित्रों का भी बहुत अधिक स्वागत हुआ है। हेलियमगैस का उचित प्रबन्ध कर दिया गया है। सभी तुम्हारी सफलता

की कामना करते हैं। इस तार से उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई। उनका उत्साह दूना हो गया।

डाकखाना से लौटते समय बाजार रास्ते में पड़ा। अरब जनता, उसकी विचित्र वेशभूषा, उसकी अनोखी रीति-नीति को देखते वे अड्डे पर आये। वायुयान धो-पोंछकर साफ कर दिया गया था, पेट्रोल आदि ठीक से भर दिया गया था। चारों ने सतर्कता से सब की जाँच की। अन्त में सब से विदा हो वे वहाँ से चल पड़े। अमेरिकन-प्रतिनिधि की कन्या और उसका भाई, दोनो कठिनाई से अपने आँसू रोक सके। यदि कोई उपाय हो सकता तो वे दोनों इस दौड़ में ज़रूर 'गरुड' पर जाते।

चलते-चलते उन्होंने रुँधे हुये कण्ठ से कहा—'आप अपने 'पत्र' के वे सब अंक हमारे पास जरूर भेज दीजियेगा जिनमे इस दौड़ का विवरण हो।'

उनको आश्वासन दे, उड़ाके आगे बढे।

दावत और खातिरदारी में काफी समय निकल गया था। तो भी वे निश्चित समय से केवल एक घन्टे पीछे अदन से रवाना हो सके। इस प्रकार एक दिन पूरा कर लेना साधारण काम न था।

तो भी उन्हें चिन्ता इस बात की थी कि उनके प्रतिद्वन्दी उनसे दो-तीन घन्टे आगे हैं।

यह मन्जिल काफी लम्बी थी। लगातार पूरा एक दिन और पूरी एक रात हवा पर आकाश में बितानी थी। प्रायः चौबीस घन्टे बाद कहीं जाकर कोलम्बो के अड्डे पर उतरना था।

अरब को छोड़ वे आगे बढ़े। कुछ समय बाद उन्हे फारस की हरी-भरी सुन्दर भूमि देख पड़ी। ऐसा जान पड़ता था मानो विधि

की सृष्टि के प्रायः सभी रङ्गो को भर कर किसी कुशलतम कलाकार ने एक चित्र तैयार किया हो। अनोखा दृश्य था। नेत्र, मन और आत्मा को खिला देनेवाला, अनिर्वचनीय आनन्द देनेवाला। दृश्य उनके मन को अपनी ओर बरबस खींच रहा था, पर कर्तव्य उन्हें अविराम, अविश्रान्त गति से आगे उडाये लिए चला जा रहा था।

नये-नये स्थानों पर से होते हुये, नूतन-नूतन चित्रपटों का निरीक्षण करते वे दिनभर बराबर अविच्छिन्न गति से बढते चले गये। अनेक देश आये और पीछे छूट गये। निरन्तर दृश्य बदलते चले गये। पर वे बढ़ते ही गये।

हरित आभा लिये हुये नील महासागर के वक्ष पर नाना प्रकार के जहाज, स्टीमर, नावें, डोंगियाँ अठखेलियो मे मग्न थीं। तर्ज, बनावट, सजावट सभी की भिन्न-भिन्न थी। विभिन्न आकार-प्रकार के जहाज अजीब मस्ती से सागर की तरङ्गों से जलक्रीडा करते देख पड़े।

दिन-भर की उड़ान मे उन्हें अधिकतर जल-राशि पर ही नजर दौड़ानी पड़ीं। कभी-कभी बीच मे सहस्र-सहस्र पर्वताकार फेनिल उर्मियों से अपने तट-भाग को मौज से धुलवाता कोई एकाध द्वीप निःशंक भाव से स्थित दिखलाई पड जाता था। नहीं तो सैकडो मील तक भू-भाग का नाम-निशान तक न था।

सूर्यास्त के अनन्तर उन्हे तेज हवा का सामना करना पड़ा। धीरे-धीरे हवा इतनी तेजी पकड़ गई कि उसके विरुद्ध चल सकना कठिन हो गया। अन्त मे विवश होकर 'गरुड़' को प्रायः बारह हजार फीट की ऊँचाई पर उठाना पड़ा। वहाँ वायु का वेग इतना मिला कि वायुयान आसानी से जा सके।

हवा की तेजी से तो बचाव हुआ। किन्तु इतनी ऊँचाई पर रहने से अड़चन सामने आई। नीचे समुद्र या पृथ्वीतल नजरों से ओझल

हो गया। बीच में बादलो की अनेक तहें आ गईं। उडाकों को अब ऊपर स्वच्छ, सुनील आकाश और अपने नीचे बादलों के ठट्ठ के सिवा और कुछ भी न देख पड़ता था। मानो वे बादलो के एक महासागर के ऊपर से गुजर रहे हो।

बादलो का अपना अनोखा ससार था। मानो सफेद समुद्र मे पर्वताकार लहरे उठ रही हो और उन लहरो पर फेन का स्थायी पत्तर जड़ दिया गया हो। इन लहरो की यह विशेषता थी कि पानी की लहरो की तरह पल-पल में ये विलीन नहीं होती थीं। इनका जीवन, इनका अस्तित्व कुछ अधिक स्थायी था। पर दोनो के अस्तित्व में केवल कुछ ही क्षणो का अन्तर पड़ता था।

ऐसा भी जान पड़ता था मानो बर्फ से आपादमस्तक ढकी हुई पहाड़ियो और उपत्यकाओ का एक अनन्त सिलसिला चला गया हो। आँखो के सामने जो पर्वतशृंग थे वे बिल्कुल ठोस मालूम पड़ते थे। देख कर यह नहीं कहा जा सकता था कि जल-कण की नन्हीं-नन्हीं सूक्ष्मतर फुहियो का समूह है।

सरासर आँखो के सामने की बात इतनी झूठी, इतनी अ-यथार्थ शायद ही कहीं दूसरी हो सके।

पहाड़ियो और उपत्यकाओ के बीच मे यत्र-तत्र लम्बे मीनार, किले की भीमकाय दीवाले, बुर्ज, महल, किले आदि एक विचित्र ढङ्ग से उठते और वायु के झोके के साथ ही एक दूसरे से टकराते, हिलते-डोलते, बनते-बिगड़ते दृष्टि-गोचर होते।

इन पर पड़ कर सूर्य की किरणे नाना प्रकार के रगो की पच्चीकारी और पुताई कर एक नई सृष्टि का निर्माण कर देती थीं। ऐसे दृश्य उपस्थित हो जाते, जिनका सुख आँखो द्वारा लूट कर मन, मस्तिष्क, आत्मा को आनन्द विभोर हो जाना पड़ता। शब्दो द्वारा उनका वर्णन सरल-सम्भव तो नहीं ही है।

दृश्य इतने उत्कृष्ट और अधिक थे, वे इतनी जल्दी-जल्दी बदलते भी जाते थे कि मस्तिष्क उनके हिसाब रखने में समर्थ नहीं हो सकता था।

बादलों पर वायुयान की परछाईं पड़कर एक और ही समाँ बाँधे हुये थी। मानो एक बड़ी बेडौल मछली समुद्र की लहरों पर तैरती हुई उनका पीछा कर रही हो, उनके साथ-साथ दौड़ लगा रही हो। बादलों के बीच में जब खाईं-सी पड जाती, जब दो ऊँचे उठे हुये बादलों के बीच में कोई गहराई का स्थान पडता, तब इस छाया, हवाई जहाज की इस परछाईं का एक अपूर्व रूप देख पड़ता, वह एक विचित्र ही रूप धारण करती। सवेरे से लेकर शाम तक उसकी आकृति, लम्बाई, चौड़ाई आदि के आश्चर्य-जनक परिवर्तन होते गये।

इन सब का आनन्द लेते, उड़ाके बराबर दिन भर और रात भर उड़े चले गये। उन्होंने पारी-पारी से विश्राम किया। इञ्जिन भी पारी-पारी से काम देते गये। किन्तु वायुयान बराबर उडता ही चला गया। किन्तु सचालन बड़ी सतर्कता से किया गया।

रात बीती। सूर्योदय के साथ ही उडाकों को सागर के हरित-नील जल के बीच एक हरा-भरा द्वीप देख पडा। ऊँचे-ऊँचे पर्वत-शिखर उस हरियाली के बीच अपना मस्तक उठाये पहरा-सा देते देख पड़ रहे थे। उसके उत्तर की ओर एक बड़ा लम्बा-चौडा भू-भाग देख पड़ता था। समुद्र के समान ही विस्तृत, विशाल और अनन्त।

यह भारत था और उसके पास वाला द्वीप सीलोन। कुछ ही क्षण में वे कोलम्बो के अड्डे पर जाकर उतरे। अड्डे के एक ओर 'वायुविजेता' खड़ा था।

(६)

'गरुड़' पर बम : चट्टानों की वर्षा

कोलम्बो के अड्डे पर 'गरुड़' के आरोहियो का स्वागत सीलोन के गवर्नर और अमेरिकन मिशन के पादरी ने किया। सीलोन के कोलम्बो स्थित प्रायः सभी उच्च पदाधिकारी वहाँ उपस्थित थे। पादरी को ही अड्डे का प्रबन्ध नियुक्त किया गया था। उसने उडाकों से वहाँ के गवर्नर तथा अन्य सभी व्यक्तियो को मिलाया।

गवर्नर ने हाथ मिलाकर उनके साहस, अध्यवसाय, लगन, दृढनिश्चय आदि की प्रशसा करते हुये कहा—'आप लोगो का स्वागत करते हुये मुझे अपार आनन्द मिल रहा है। आपके तथा 'वायुविजेता' के आरोहियों के इस भगीरथ-प्रयत्न के कारण ससार के विभिन्न देशों मे वायुयान द्वारा आवागमन को बहुत अधिक प्रोत्साहन मिलेगा। आपकी यह दौड़ ऐतिहासिक महत्व प्राप्त कर चुकी है। मैं देख रहा हूँ कि लदन और कोलम्बो के सभी प्रमुख पत्र प्रारम्भ से ही प्रतिदिन आपकी दौड़ के विवरण खूब सजा कर मोटे-मोटे टाइप में प्रमुख स्थानों पर निकाल रहे हैं। जनता भी खूब दिलचस्पी ले रही है। हम आपके विवरण पढ कर इतने प्रभावित हुये हैं कि आज इतने सवेरे हम सब यहाँ दौड़े आये। इस बात को मैं इसलिए महत्व दे रहा हूँ कि इस द्वीप मे सवेरे नौ बजे के पहले उठना साधारण कुलियों के लिये भी असह्य प्रतीत होता है। यहाँ वाले और सब सहन कर लेंगे, पर नौं बजे के पहले उठने को तैयार न होंगे। हाँ, भारत से आये हुए कुलियो और व्यवसायियो की बात भिन्न है। उन्हे छोड़कर यहाँ के अधिवासी

सिंहाली प्रायः नौ के बाद ही बिस्तर छोडते हैं। पर आज आपका स्वागत करने के लिए इतने सवेरे ही हजारो की सख्या मे लोग उपस्थित हैं। हमें सबसे बड़ी खुशी इस बात की है कि आप लोग बिल्कुल ठीक समय पर पहुँचे। दस मिनट की भी देर न हुई। मुझे और अधिक हर्ष होता यदि आप में से कोई एक दल इङ्गलैण्ड का प्रतिनिधित्व करता।' यह कह गवर्नर हँसने लगा।

जान ने हँसते हुए कहा—'हम अमरीकावासी तो अपने को इंगलैण्ड से भिन्न नहीं समझते। और भारत के दो व्यक्ति तो इसमें प्रमुख भाग ले रहे हैं, यह सब उन्हीं के साहस, यत्नों और विचारों का फल है। और भारत ब्रिटिश-साम्राज्य के अन्तर्गत है ही। भारत का सम्मिलित होना इंगलैंडका ही प्रतिनिधित्व है।'

जान की बात ने सब को हँसा दिया।

पादरी से उन्हें मालूम हुआ कि 'वायुविजेता' केवल बीस मिनट पहले आया था। उसके उड़ाके उसकी सफाई आदि करने और पेट्रोल आदि भरने में लगे हुए हैं। किन्तु वे तीसरे पहर के पहले कोलम्बो न छोड़ेंगे, इस बात को पीटर ने खास तौर पर कहा था और उसने पादरी से अनुरोध किया था कि उसकी यह बात 'गरुड' के आरोहियो को अवश्य बतला दी जाय।

जमशेद ने छुटते ही कहा—'इसमें कोई भेद अवश्य है। इस बात को खास तौर से हम तक पहुँचाना कुछ मानी रखता है।'

जान—'शायद वे चाहते हों कि हम भी जल्दी न करे।'

देव—'अभी कुछ समझ में नहीं आ रहा है।'

चारो ने इस बात को बहुत महत्व न दिया। किन्तु वे कुछ सशंकित जरूर हो गये।

गवर्नर दोनो दलवालो को चाय के लिए अपने यहाँ ले जाना चाहता था, किन्तु पीटर ने नम्रतापूर्वक उसे अस्वीकार कर दिया। उसने कहा कि हम लोग इतने थक गये हैं कि कहीं जाना और देर तक बैठ सकना हमारे लिए इस समय असम्भव है, हम तो शान्ति पूर्वक सोना चाहते हैं।

गवर्नर, उच्चपदाधिकारी आदि सब उनसे विदा होकर चले गये। पीटर ने पादरी से अपने कागजों में खानापूरी कराकर दस्तखत ले लिये। उसका कहना था कि हम लोग सोकर न जाने कब उठें, उस समय ज्यादा देर करना उचित न होगा, अभी सब ठीक-ठाक कर लेना ज्यादा मुनासिब है। यह देख, जमशेद ने भी पादरी से दस्तखत ले लिये।

इसके बाद देब और साम ने नगर में जाकर पनामा के लिए तार, समाचार, फोटो आदि भेजे, फलो तथा अन्य आवश्यक वस्तुओं की खरीद की।

लौटने पर उन्होंने देखा कि उनके यान के पास ही बड़ी भीड़ लगी हुई है। उन्हे उस भीड़ के बीच से जान और जमशेद की क्रोध भरी आवाज सुनाई दी। बीच-बीच मे पीटर भी जोर-जोर से चिल्ला कर उत्तर देता जाता था।

देब और साम भीड चीरकर अन्दर गये। देखा, पीटर के साथ जान और जमशेद का उत्तर, प्रत्युत्तर चल रहा है। पीटर ऊपर से तो बहुत लाल-पीले पडने, बेहद बिगडने का नाट्य कर रहा है, पर असल में जान से पीछा छुडा कर भागना चाहता है। जान, जमशेद क्रोध के मारे पागले हो रहें हैं।

पूछने पर मालूम हुआ कि जान और जमशेद पादरी से बात करते हुए कुछ दूर चले गये थे। इसी बीच में पीटर 'गरुड़' के पास आया।

जब जान, जमशेद आये तो वह वहाँ से भागने लगा। जान ने उसे रोका और कूका में जगली हब्शियों को उनके विरुद्ध उत्तेजित करने; फ्री-टाउन मे वहाँ के प्रबन्धक को धोखा दे सब पेट्रोल लेकर उन्हे चौबीस घण्टे व्यर्थ में रुकने के लिए विवश करने तथा जार्जटाउन में 'गरुड़' के पंखों पर चढ कर हेलियम-गैस निकालने के लिए कैफियत चाही। यह भी पूछा कि तुम इस प्रकार की बेजा हरकते क्यों करते हो? पीटर ने गरज कर उत्तर दिया कि तुम झूठे हो। जब दौड़ में पिछड़ ने लगे तो व्यर्थ में हम लोगों पर दोषारोपण करने लगे। इसी पर उत्तर-प्रत्युत्तर होने लगा।

जान और जमशेद इस बात पर तुल गये थे कि पीटर या तो अपनी दुष्टता के लिए क्षमा माँगे और आगे फिर कभी धोखा देने की चेष्टा न करे। साथ ही दौड़ समाप्त होने तक उनके वायुयान के पास न फटके। पीटर गलेबाजी के बल पर जान, जमशेद को झूठा और फरेबी साबित करना चाहता था। मामला तूल पकड रहा था। पीटर के पुकारने पर उसके साथी वहाँ आ गये। पीटर ने उनसे कहा कि ये लोग व्यर्थ में हम पर दोषारोपण करते हैं।

क्रास ने चिल्ला कर कहा—ये सरासर अन्याय कर रहे हैं। हमने इनके साथ कोई बुराई नहीं की है।'

पाल—'हमसे इन बातों से मतलब ही क्या?'

टाम ने जरा गरम पड़ते हुए कहा—'इस तरह की बातों में नष्ट करने के लिए हमारे पास समय ही कहाँ!'

उनकी बातों से जान, जमशेद, साम सभी को तैश आ रहा था, उनका क्रोध बढ रहा था। चोरी और सीनाजोरी।

देव ने देखा, मामला बेकाबू होने जा रहा है। वह अपने साथियों को समझा-बुझा कर 'गरुड़' की ओर ले चला। जाते-जाते जमशेद

ने कहा—'देखो पीटर ! अब तक जो हुआ सो हुआ। अब आगे के लिए सभल जाओ। हम तुम्हारी तीनों दुष्टताओ को भूले जाते हैं, पर अब आगे ऐसी कोई बात न करना, नहीं तो तुम्हें पछताना पड़ेगा। सहने और क्षमा करने की एक हद होती है। वह हो चुकी। आगे के लिए सावधान हो जाओ।'

पीटर ने तेजी से अपने वायुयान की ओर जाते-जाते कहा—'बस, रहने भी दो! जो करना हो कर लेना। इन बातों के लिए तुम्हें प्रायश्चित करना होगा। सावधान।'

दोनों दलवाले अपने-अपने वायुयानों के पास चले गये।

कुछ समय बाद जमशेद हेलियम-गैस के थैलों और कील-कॉटों की जॉच करने वायुयान के उपरी भागपर चढ गया। नीचे उतरने पर उसने अपने साथियों से कहा—हमें खूब सावधान रहना होगा। पीटर शीघ्र ही कोई-न-कोई दुष्टता करेगा। मैंने अभी ऊपर से देखा, वह कुछ पत्थर, शिला-खण्ड बीन-बीन कर अपने वायुयान पर रख रहा था। शिला-खण्ड मनुष्य के सर से भी बड़े-बड़े थे।'

जान—''वायुयान पर इतना वजन क्यों लाद रहा है ?'

साम—'शायद किसी ओर का वजन कम हो गया हो, उसी को बराबर कर रहा होगा।'

जमशेद—'किन्तु इतने पत्थर रखना मतलब से खाली नही हो सकता।'

देव—'होगा कोई मतलब जरूर।'

जब तर्क-वितर्क से उनकी समझ में कुछ न आया, तो वे दूसरी बाते करने लगे। कुछ देर में उन्हे उस बात का ध्यान तक न रह गया।

कोई पन्द्रह मिनट बाद उन्हें 'वायुविजेता' के इञ्जिन के चालू होने का शब्द सुन पड़ा। वे चौंककर उस ओर देखने लगे। उन्हें 'वायुविजेता' आकाश में उठता देख पड़ा। देखते-देखते वह ऊँचा उठ कर पूर्व की ओर बढने लगा और कुछ ही क्षण में आँखों से ओझल हो गया।

अब पीटर की चाल उनकी समझ में आई। वह उन्हें धोखे में डाल कर उनसे पहले ही रवाना होना चाहता था। उसकी चालाकी काम कर गई। उसकी दुष्टता उन्हें बुरी लगी। किन्तु उसकी बुद्धि के वे कायल अवश्य हुए। जानबूझ कर उन्होंने उसकी बातों में आ कर धोखा खाया।

रुकना उचित न समझ वे भी चल पड़े। किन्तु चलते-चलते उन्हें बीस मिनट लग ही गये।

प्रायः एक घण्टे में वे सीलोन को पार कर आगे बढ़े। मानसून का समय था। हिन्द-महासागर में उन्हें तेज मौसमी हवा की आशका थी। किन्तु इस समय उन्हें आसमान साफ और हवा साधारण मिली। वे तेजी से पूर्व की ओर बढते गये। जान और साम सचालन कर रहे थे। देव-जमशेद सो रहे थे।

दो, सवा दो घण्टे उड़ते रहने के बाद उन्हें आसमान में सामने एक काला पक्षी-सा देख पडा। कुछ और आगे बढने पर वह एक भीमकाय पक्षी-सा देख पड़ने लगा। धीरे-धीरे उसकी आकृति स्पष्ट होती गई। कुछ ही देर मे यह स्पष्ट हो गया कि वह 'वायुविजेता' ही है। उसका प्रत्येक भाग साफ-साफ देख पड़ने लगा।

लक्षणों से जान पड़ता था कि उसके आरोहियों ने भी 'गरुड़' को देख लिया है।

दोनों में होड़-सी होने लगी।

'वायुविजेता' की चाल तेज की गई! इधर 'गरुड़' भी और तेजी से बढ़ाया गया।

प्रतिक्षण दोनों के बीच का अन्तर थोड़ा-थोड़ा कम होने लगा। 'गरुड' बराबर आगे बढा जा रहा था। अन्त में एक घटे की कशम-कश के बाद वह 'वायुविजेता' के समीप जा पहुँचा।

'वायुविजेता' डगमगाता चल रहा था।

जान ने कहा—'शायद शिला-खण्डों के भार के कारण उसका सतुलन बिगड़ गया है। यदि वे पत्थरों को फेक दे तो 'विजेता' ठीक से चले।'

साम—'वे हमसे प्रायः एक हजार फीट की ऊँचाई पर जा रहे हैं। यदि यही गति रही तो दस-पन्द्रह मिनट में ही हम उनके ठीक नीचे से होते हुए आगे बढ़ जायँगे।'

अब दोनों वायुयान एक दूसरे के इतने पास आ गये थे कि 'गरुड़' से ऊपर रहने के कारण 'वायुविजेता' की खिड़कियाँ, उनमें से झाँकते हुए पीटर, क्रास, पाल के चेहरे तक साफ-साफ देख पड़ते थे।

इसी समय सामने देव और जमशेद को जगा दिया।

कच्ची नींद से उठने में दोनों को बहुत बुरा लगा। किन्तु सब बाते समझ लेने और 'वायुविजेता' को ठीक अपने ऊपर-ऊपर जाते देख उन्हें भी इस लाग-डॉट की दौड़ में खासा मजा आने लगा।

देखते-देखते 'गरुड़' सर्राटे भरता हुआ 'वायुविजेता' के ठीक नीचे जा पहुँचा। ऐसा जान पड़ा मानो 'वायुविजेता' के चालक ने भी उसे 'गरुड़' के ठीक ऊपर लाने की भरसक चेष्टा की हो।

जैसे ही 'गरुड़' का अगला भाग 'वायुविजेता' के पिछले भाग के नीचे पहुँचा, वैसे ही 'वायुविजेता' के नीचे के हिस्सेवाली शीशे की खिड़की सहसा खुल गई और कोई भूरी-भूरी भारी चीज उसमें से गिर कर 'गरुड' के इंजिन के पास से होती हुई सपाटे से नीचे जाकर समुद्र के जल में गिर कर विलीन हो गई।

जान ने सिहर कर कहा—'जान पड़ता है उनके यान से शिला-खण्ड गिरा है। हमारा यान बाल-बाल बचा!'

साम ने भयभीत होकर कहा—'सावधान! बचो! दूसरा शिला-खण्ड आ रहा है। ठीक हमारे ऊपर'। उसके यह कहते-न-कहते दूसरा शिला-खण्ड उनके पास से होता हुआ सर्र से निकल कर समुद्र में विलीन हो गया।

उसके समुद्र के जल में पहुँचते-न-पहुँचते एक तीसरा शिलाखण्ड ऊपर से लुढकता हुआ आया और उनके ठीक बगल से होता हुआ नीचे चला गया। वह इतने पास से होकर गया था कि उसके गिरने से उठने वाली हवा के झोंके उनके बदन में लगे।

एकाएक उनकी समझ में यह बात आई कि उनके प्रतिद्वन्दी उन पर शिला रूपी बम चला रहे हैं। फेंकने के तर्ज से साफ जाहिर था कि कोई ऐसा मनुष्य उन शिला-खण्डों को उन पर फेंक रहा है जिसने बम-वर्षा का ठीक से अभ्यास किया है। अब पीटर का उद्देश्य स्पष्ट हो गया। उसने जान बूझकर, खूब सोच-समझ कर शिला-खण्डों को कोलम्बो के अड्डे पर एकत्र किया था। वह उनके प्रहार से 'गरुड' को नष्ट करना चाहता है।

इसी समय जमशेद ने चिल्ला कर कहा—'नीचे से फौरन हटो! चौथी शिला आ रही है।'

इसके पहले कि उसके मुँह से पूरे शब्द निकलें, एक शिला उन पर आ पहुँची। चारों ने सोचा कि वह ठीक उनके ऊपर गिरेगी। अपने-अपने सर पर हाथ रखकर वे इधर-उधर हो गये।

किन्तु 'गरुड़' इतनी तेजी से जा रहा था कि वह शिला के गिरते-गिरते कुछ आगे बढ गया। इस कारण शिला केबिन के ठीक ऊपर आकर भी यान के पिछले भाग पर पड़ी।

बड़े जोर से धमाके की आवाज हुई। सारा वायुयान हिल उठा। जान पड़ा, मानों पिछला हिस्सा फट गया हो!

उड़ाकों के प्राण सूख गये। उनके जिल जोर-जोर से धड़कने लगे।

जान ने चिल्लाकर कहा—'बड़ी गड़बड़ हो गई! 'गरुड़' सर के बल नीचे की ओर जा रहा है। पीछे का हिस्सा काम नहीं करता।'

'गरुड़' सहसा नीचे गिरने लगा।

---

(१०)

प्राणों की बाजी

प्राणों पर संकट आया देख 'गरुड़' के उड़ाकों में अभूतपूर्व साहस का सचार हो गया। वे मौत से लड़-लड़ कर प्राण देने को तैयार हुए। जब मरना ही है तो मौत से डरा क्यों जाय! डट कर उसका सामना क्यो न किया जाय। अन्तिम साँस तक उद्योग क्यों न किया जाय। शायद कोई उपाय सफल हो जाय।

वे पीछे की ओर दौड़े। उन्होंने खिड़की से झाँक कर देखा। बाँई तरफ के एलिवेटर में बड़ा-सा छिद्र हो गया था। शिला रेशम को फाड़ती हुई निकल गई थी।

किन्तु केवल इसी से संचालन में इतनी गड़बड़ी न होनी चाहिए थी। कोई और दूसरा भी कारण होना चाहिए।

गौर से देखने पर पता चला कि दाहिने एलिवेटर से सम्बन्ध रखने वाले तार फ्यूजलेज के अन्त वाले एक पुरजे से लिपट कर एक में गुँथ गये हैं। इसका फल यह हुआ है कि दोनों में से कोई भी एलिवेटर काम देने लायक न रह गया। इसी से वायुयान सर के बल सागर की ओर गिरने लगा है और जान की सभी कोशिशें बेकार हो रही हैं।

फ्यूजलेज की ओर निगाह जाते ही से सब बातें स्पष्ट होगईं।

दूसरे ही क्षण देव ने गम्भीरतापूर्वक दृढतासूचक स्वर में कहा—'इन्जिन एकदम बन्द कर देने में ही अब कुशल है। इन्जिन के न चलने

पर 'गरुड़' को पानी की सतह तक पहुँचने में कुछ मिनट लगेंगे। इसी बीचमें हम सब ठीककर लेंगे।'

जान ने परिस्थिति को हृदयगम कर तुरन्त इजिन बन्द कर दिया। 'गरुड' धीरे-धीरे नीचे गिरने लगा।

देव ने बिजली की तरह चमककर पास ही रक्खी हुई एक मजबूत रस्सी कसकर अपनी कमर में बाँध ली और खिड़की से निकलकर वह वायुयान के फ्लूजलेज की ओर जाने का उपक्रम करने लगा।

जमशेद और साम को यह समझते देर न लगी कि देव अपनी जान पर खेलकर यान के पिछले भाग पर से सरकता हुआ फ़्यूजलेज के पास जायगा और एलिवेटर के तारों को सुलझायेगा। तारो के सुलझते ही एलिवेटर काम करने लगेगे और वायुयान ठीक से काम करने लगेगा। बचने का यही एकमात्र उपाय है।

किन्तु फ़्युजलेज तक जाना आसान काम न था। जरा भी हाथ चूका, तनिक भी किसी ओर फिसले कि हजार फीट नीचे अतल-जल राशि मे जाकर सदा के लिए सो गए। काम बड़े जोखिम का था। प्राणों की बाजी थी।

परन्तु बिना इस प्रकार जान पर खेले बचाव भी नहीं हो सकता था। अकर्मण्य हो चुपचाप हाथ पर-हाथ रक्खे बैठे रह कर 'गरुड' को नीचे गिरने देने से तो इस प्रकार जान हथेली पर रख कर बचने का उपाय करना कहीं अधिक उत्तम था।

किन्तु सवाल था कि बलि के लिए कौन पहले आगे बढे। दोनों में त्याग की भावना, जीवट, साहसिकता, निर्भीकता प्रायः एक समान ही थी। देव के कमर में रस्सी बँधने के साथ ही उसके तीनों साथी चिल्ला उठे—'नहीं देव ! हम जायेंगे। तुम सहारा दो।'

पर इन शब्दों के मुँह से निकलने के पहले ही देव खिड़की पार कर गया था। एक सेकण्ड की देर भी खतरनाक थी।

देव का निश्चय देख तथा बहस में व्यर्थ समय नष्ट करना उचित न समझ साम और जमशेद ने उसे हाथ का सहारा देकर आगे बढ़ाया।

वायुयान के गोल पिछले हिस्से को अपनी जाँघों और दोनों हाथों के बीच में कस कर पकड़ देव धीरे-धीरे सरक-सरक कर आगे बढ़ने लगा। अब उसे पता चला कि वायुयान का ऊपरी हिस्सा कितना चिकना, कितना फिसलनदार है। फिसलनदार होने के कारण उस पर ठहरना बहुत कठिन हो रहा था। जी-जान से कोशिश करने पर भी हाथ-पैर फिसले जाते थे।

चिकनाहट के साथ ही हवा के तेज झोंकों का भी सामना करना पड़ रहा था। हवा इतनी तेज थी कि जोर से वायुयान को पकड़े रहने पर भी देव का सारा शरीर उड़ा जा रहा था। तेज झोंके उसे मानो उठा कर फेंक रहे थे।

तीन-चार बार तो देव को ऐसा जान पड़ा मानो वह उड़कर दूर जा गिरेगा। वायुयान की चिकनाहट और हवा के झोंके उसे ठहरने ही न देते थे। उसे जान पड़ता था कि अब गिरा, अब-गिरा।

किन्तु उसने हिम्मत न छोड़ी। अपना सारा बल लगाकर वह वायुयान से चिपटा रहा और धीरे-धीरे सरक कर अन्त में फ्यूजलेज के पास किसी तरह पहुँच ही गया।

इसी समय सहसा एक बार उसकी नजर नीचे की ओर गई। उसके दिल की धड़कन बन्द होने लगी। वायुयान समुद्र के जल के बहुत पास पहुँच गया था। उसके हाथ-पाँव ढीले पड़ने लगे। वायुयान हाथों से छूटने लगा।

तब फौरन उसने अपनी आँखे फेर लीं। उसने अपना सारा ध्यान बलपूर्वक खींच कर फ्यूज़लेज की ओर लगा दिया।

यहाँ वायुयान का भाग और भी पतला हो गया था। उसने अपने पैरों को खूब कस कर उसके चारों ओर लपेट लिया। फिर सभल कर अपने दोनों हाथ मुक्त किये और शरीर को आगे बढ़ा कर गुँथे हुये तारों को सुलझाना शुरू किया। दो-चार बार की कोशिश तो बेकार गई, किन्तु अन्त में तार सुलझ गये। एलिवेटरों की रुकावट बिल्कुल दूर हो गई।

उसने हुँकार कर अपने साथियों को इसकी सूचना दी। वे भी भयविह्वल नेत्रों से उसे देख रहे थे। इशारा पाते ही वे प्रसन्न हो उठे।

जमशेद ने रुँधे हुए गले से जल्दी-जल्दी कहा—'देव! जहाँ और जैसे हो वहीं—वैसे ही रुके रहो। जब तक हम इशारा न दें तब तक इस ओर हिलने की चेष्टा न करना। सावधान!'

वायुयान जल के बहुत समीप पहुँच गया था। वह पानी से केवल सौ, सवा-सौ फीट ऊपर रह गया था। यदि वायुयान का इञ्जिन उस समय तक न चलाया जाता जब तक कि देव केबिन में वापस न आ जाता, तो 'गरुड़' धमाक से पानी में गिरता और डूब जाता। और इञ्जिन के चलते ही देव का वायुयान की वर्तमान परिस्थित में सरक-सरक कर केबिन तक पहुँचना खतरे से खाली न था। जरूरत इस बात की थी कि वायुयान फौरन ऊँचा उठाया जाय, और उसका पिछला हिस्सा अगले हिस्से से कुछ ऊपर कर दिया जाय जिससे देव के सरकने में आसानी हो। यही सोच कर जमशेद ने ऊपर वाली बात कही थी।

देव ने खूब जोर लगा कर अपने हाथ-पाँव से वायुयान के अन्तिम भाग को जकड़ लिया। इधर पल भर में बान ने इञ्जिन

को चालू कर यान को सहूलियत से ऊपर की ओर उड़ाया। देखते-देखते 'गरुड' दो हजार फीट की ऊँचाई पर जा पहुँचा। सचालन ऐसी सावधानी से किया गया कि देव को तनिक भी धक्का न लगा।

ऊपर उड़ने के साथ ही जान ने बड़ी सफाई से हौले-हौले 'गरुड' के पिछले भाग को अगले भाग से कुछ ऊँचा उठा दिया। जमशेद ने देव को इशारा किया। देव धीरे-धीरे खिड़की की ओर सरकने लगा। अगला हिस्सा कुछ नीचा था, इस कारण इस बार देव को उतनी कठिनाई न पड़ी। वह सावधानी से खिसकता हुआ अन्त में खिडकी के पास पहुँच गया। जमशेद और साम ने उसे उठाकर अन्दर कर लिया।

चारों की जान-में-जान आई।

देव बिल्कुल पस्त होगया था। जमशेद और साम ने ले जाकर उसे बिस्तरे पर लिटा दिया। तीनों उसके इस प्रकार मौत के मुख मे से बाल-बाल बच कर लौट आने पर अत्यधिक हर्ष प्रकट कर रहे थे। देव की साँस जोर-ज़ोर से चल रही थी। उसके मुँह से शब्द नही निकल सकते थे। किन्तु अपने साथियों की बातें सुनकर वह मुस्करा रहा था।

कुछ देर विश्राम कर लेने के बाद देव ने उत्सुकता से पूछा—'अब 'गरुड' कैसा चल रहा है! चलाने में कठिनाई तो नहीं होती ?'

जान ने उत्तर दिया—'मजे मे चल रहा है। अब वैसा भय तो नहीं है। यदि और कोई दुर्घटना न हुई तो सिंगापूर तक आसानी से पहुँच जायँगे। पर! पहले वाली बात अब कहाँ!!'

देव ने कहा—'यदि जरूरत हुई तो बीच मे सुमात्रा में उतर कर मरम्मत कर लेंगे।'

जमशेद—'ठीक है। हम कुछ ही देर में सुमात्रा द्वीप के उत्तरी भाग पर पहुँच जायँगे।'

इसी बीच मे साम ने दूरबीन के द्वारा, 'वायु-विजेता' का पता लगाना चाहा। किन्तु बहुत खोजने पर भी उसका कही पता न चला। 'गरुड' पर शिला के गिरते ही वह तीव्र गति से आगे बढ गया था। उसके आरोहियो को निश्चय होगया था कि अब पानी में डूबने से 'गरुड़' किसी तरह बच नहीं सकता।

'गरुड़' के उड़ाकों को विश्वास हो गया कि पीटर से अधिक दुष्ट शायद ही दूसरा कोई हो, ऐसा कोई भी दुष्कर्म नहीं हो सकता जिसे वह आसानी से न कर डाले। उसने तो उन्हें सागर में डुबाकर मार डालने में कुछ उठा न रक्खा था।

सयोग से ऐसी कोई हानि न हुई थी, जिसके कारण वायुयान का उडना बन्द हो जाय। हाँ, इतना तो जरूर हुआ कि उड़ने में कठिनाई पडने लगी, यान कुछ हिलने-डुलने लगा और उसकी गति बहुत कम हो गई।

साहस, धैर्य के साथ इन सब कठिनाइयों का सामना करते हुये उड़ाके 'गरुड़' को किसी-न-किसी तरह बढाये ही चले गये। कुछ समय के बाद वे सुमात्रा द्वीप के पास जा पहुँचे। पहले तो उनका विचार हुआ कि वहाँ उतर कर 'गरुड' की मरम्मत कर ली जाय, किन्तु फिर यह सोच कर कि 'गरुड़' चला तो जा रहा है, वे आगे बढते गये, उतरे नहीं।

सुमात्रा के ऊपर से उड़ते हुये वे मलाका के जल-डमरू-मध्य के ऊपर जा पहुँचे और सिगापूर की ओर बढते गए। अन्त में दिन डूबते-डूबते वे सिगापूर के अड्डे पर जा उतरे। उनके प्रतिद्वन्दी ठीक दो घन्टे पहले वहाँ से रवाना हो चुके थे।

---

(११)

ज्वालामुखी के मुख में

सिगापूर छोटी किन्तु बहुत ही रौनक वाली बस्ती है। ब्रिटिश-साम्राज्य का यही पूर्वीय सन्तरी है। चहल-पहल का तो कहना ही क्या है।

किन्तु 'गरुड़' के उड़ाकों की स्थिति कुछ और ही थी। वायुयान की मरम्मत का सवाल सबसे महत्त्वपूर्ण था। वे सबसे पहले उसी में लग गये। फटे-टूटे स्थानों की गौर से जाँच की गई। कोई कल-पुरजा खराब न हुआ था। अन्दर का ढाँचा भी अछूता बच गया था। ऊपर का रेशमी आवरण फट गया था, कुछ तीलियाँ, छड आदि टेढे हो गये थे। कुछ तार और मामूली चीजें टूट गई थी। उडाको का भय जाता रहा। मरम्मत कठिन न थी। और न बहुत ज्यादा ही।

सिगापुर के उच्च अधिकारियो से उन्हें बड़ी मदद मिली। उनकी सहायता से उड़ाको को मरम्मत के लिए सभी आवश्यक वस्तुएँ आसानी से मिल गई। चारों मिलकर मरम्मत मे लग गये। अफसर सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि से उन्हें सहायता देते रहे। कुछ घन्टो की मेहनत ने 'गरुड़' को इस स्थिति में ला दिया कि फिर इत्मीनान के साथ दौड़ मे भाग लिया जा सके। मरम्मत हो जाने पर उड़ाकों ने पेट्रोल आदि भर कर यान को ठीक कर लिया। अन्त में स्नान कर वे उड़ने के लिए तैयार हो गये। उनके साहस, उनकी कार्य-कुशलता, उनकी तत्परता, उनके अथक परिश्रम और अदम्य उत्साह को देख, सभी ठग रह गये।

सब ठीक-ठाक कर रात के ग्यारह बजे वे वहाँ से चल पड़े। चारो के बदन थकावट के मारे चूर-चूर हो रहे थे। किन्तु ठहर कर विश्राम करने का अवसर न था। अपने प्रतिद्वन्दियों को पकड़ना था। उन से बाजी जीतनी थी।

सफर काफी लम्बा था। महासागर पार करना था। एशिया से आस्ट्रेलिया पहुँचना था। दूसरा अड्डा आस्ट्रेलिया का पोर्ट डार्विन नामक नगर था।

उनके पहुँचने के पहले सिंगापूर मे बहुत अधिक पानी बरस चुका था। लगातार कई घन्टे मूसलाधार। अनेक स्थान पानी से सराबोर थे। उनके आने के बाद भी बूँदा-बाँदी हो रही थी। अड्डे के सारे मैदान में पानी-ही-पानी भरा हुआ था। रवाना होते समय बड़ी कठिनाई हुई। कई बार 'गरुड़' के पहिये पानी के कारण फँस और धँस गये, चाल में रुकावट आ गई। इस कारण जितनी दूर दौड़ कर उसे उड़ जाना चाहिए था, उतनी दूर में वह उड न सका। अन्त मे जब वह जोर से ऊपर उठा भी तो एक गड्ढे के फँसाव के कारण उसमे कुछ शिथिलता आ गई। सामने वृक्षों और ऊँचे-ऊँचे मकानों का सिलसिला शुरू हो गया था। 'गरुड़' को स्थान की कमी पड़ने लगी। देखते-देखते वह पेड़ों और मकानोंके पास जा पहुँचा। पीछे लौटाने की गुंजाइश ही न थी। आगे बढते ही पेड़ों और मकानों से जाकर टकराने की आशका थी। बिना आगे बढे उसका ऊपर उठनाभी असम्भव था। बड़ी विकट समस्या उपस्थित थी। तनिक-सी चूक होते ही भारी दुर्घटना हो जाती।

जमशेद सञ्चालन कर रहा था। और देव उसकी सहायता। देव की सलाह से जमशेद ने फौरन एक साथ दोनों इंजिनों को खोल दिया और जोर देकर 'गरुड़' को एकदम ऊपर उठाया। पल भर में 'गरुड़'

पेडों की फुनगियों को छूता, मकानों की छतों पर से होता हुआ सर्र से आसमान में जा पहुँचा। टक्कर होते-होते साफ बच गई। सिंगापूर के सैनिक अफसर और जमशेद के साथी सभी उसकी कुशलता की प्रशसा करने लगे। सिंगापूर पर से होता हुआ 'गरुड' समुद्र पर जा पहुँचा और आस्ट्रेलिया की ओर बढ चला।

मौसम खराब था। काले-काले बादल आकाश को ढके हुए थे बीच-बीच में कडाके की बिजली भी चमक जाती थी। हवा भी का तेज न थी। पर 'गरुड़' को इनकी चिन्ता न थी। वह चीन-सागर प से होता हुआ आगे बढा जा रहा था।

इसी समय तालिकाएँ और नक्शे देखते हुए जान ने जोर से कहा—'हम अभी भूमध्य-रेखा को पार कर रहे हैं। इस दौड़ में भूमध्य रेखा को पार करने का हमारा यह दूसरा अवसर है। पहली बार हम अमेजन नदी के पास इसे पार कर चुके हैं। आस्ट्रेलिया से आग बढने पर हमें तीसरी बार इसे फिर पार करना पड़ेगा। और उसके बाद बस पनामा!'

जान की बात से सभी के मन प्रफुल्लित हो उठे। चारों के मन में एक ही बात उठ रही थी।

हवा, पानी और बिजली से बचने के लिए 'गरुड़' बादलों के ऊप कर लिया गया। कुछ समय बाद उन्हें नीचे का भाग भी साफ मालूम पडा। वहाँ बादल न थे। जमशेद 'गरुड़' को कुछ नीचे उतार लाया रात के दूसरे पहर उन्हें जल-राशि के बीच में एक बडा-सा भू-खण्ड देख पड़ा। यह बोर्नियों का दक्षिणी भाग था। उसके घने जङ्गलों के ऊपर से होते हुए वे आगे बढे।

सवेरा होने के कुछ पहले उन्हें अपने सामने एक विचित्र दृश्य देख पड़ा। अथाह सागर के बीच में एक काला पहाड़ सर उठाये देख

पड़ा। उसके शिखर के ठीक बीच से नाना रङ्ग की लपटें उठ रहीं थी। नीले आकाश में वे बड़ी विचित्र मालूम होती थीं, मानो आतिशबाज़ी छूट रही हो। पहाड़ के नीचे हरित-नील जल-राशि। उसके पृष्ठ भाग में सुनील आकाश। बीच में अनेक रङ्ग, आकार की विचित्र लपटें, जो बराबर क्षण-क्षण में उठतीं और सहसा आकाश की ओर लपक कर विलीन हो जातीं। अपूर्व दृश्य था। भयावह, साथ ही मनोमोहक भी।

यह टिमोर का प्रज्वलित ज्वालामुखी था।

उन्हें उसी के पास से होकर जाना था। इस अपूर्व दृश्य को देखते हुए वे आगे बढे। ज्वालामुखी के पास वे अभी पहुँचने भी न पाये थे कि उसके मुख में से लपटों के बजाय सहसा काली-काली राख और धुँएँ के बादल निकलने लगे। सारा आसमान राख और धुँएँ से भर गया। 'गरुड़' इतना नज़दीक पहुँच गया था कि वह उन बादलों के बीच में घिर गया। उड़ाकों के दम घुटने लगे। वे व्याकुल हो गये। उनकी आँखें बन्द हो गई। उन्हें जान पड़ने लगा मानो 'गरुड़' ज्वालामुखी के मुख में जा रहा है। वे घबरा गये।

सहसा उनके मन में बिजली-सी कौंध गई। यदि कही ज्वालामुखी के मुख पर जा पहुँचे तब !!

साम यान का सचालन कर रहा था। इस आशका के उठते ही उसने साहस बटोर, अपनी सारी शक्ति लगाकर 'गरुड़' को एक दम दाहिनी ओर मोड़ दिया। साथ ही उसे खूब ऊपर भी उठाया। इससे काम चल गया। 'गरुड़' फौरन दूसरी ओर जा पहुँचा, और काफी ऊपर भी। उसके तीनों साथियों ने यान की खिड़कियों को बन्द कर लिया। यान सपाटे भर रहा था। दस-बारह मिनट तक तो उन्हें आस-पास कुछ न देख पड़ा। राख और धुँएँ के बादल इतने घने थे।

किन्तु धीरे-धीरे राख और धुँएँ का आवरण क्षीण से क्षीणतर होता गया। अन्त में प्रायः पन्द्रह मिनट बाद वह आवरण एक दम दूर हो गया। अब वे निर्मल वायु के बीच में थे, स्वच्छ आकाश-भाग में। पीछे लौट कर देखा, ज्वालामुखी के आस-पास, ऊपर-नीचे का सारा भाग धुँएँ और राख के बादलों से ढका हुआ था। बीच मे ज्वालाएँ निकलतीं थीं। बिजली-सी चमक जाती थी।

---

(१२)

आस्ट्रेलिया से आगे

रात बीती। दिन निकला। वे बराबर उड़े जा रहे थे। शाम के पाँच बजे उन्हें दूर क्षितिज पर सागर के नीले जल के बीच कुछ काला-काला भू-भाग ऊँचा उठता-सा देख पड़ा। कुछ क्षण बाद तट-भूमि साफ-साफ देख पड़ने लगी। कुछ ही देर बाद वे आस्ट्रेलिया महाद्वीप के प्रसिद्ध नगर पोर्ट-डार्विन के ऊपर जाकर चक्कर लगाने लगे। नगर के बाहर एक मैदान में बड़ी भीड़ देख पड़ी। लोग यान की ओर इशारे कर हर्ष-ध्वनि कर रहे थे। वहीं एक ओर लाल-सफेद झंडा फहरा रहा था। यही उनके उतरने का स्थान था। शत-शत, सहस्र-सहस्र लोगों की हर्ष-ध्वनि के साथ 'गरुड़' शान से भूमि पर आया।

अड्डे पर डार्विन के मेयर, और वहाँ के उच्च अधिकारियों ने उड़ाकों का स्वागत किया। डाक्टरों और हेल्थ आफिसर ने उनके स्वास्थ्य की जाँच की। मेयर उन्हें अपने यहाँ भोजन के लिए ले जाना चाहता था; पर उड़ाके एक मिनट भी व्यर्थ गँवाना नहीं चाहते थे। उतरते ही उन्होंने वायुविजेता' के विषय में पूछा था और उन्हें उत्तर मिला था कि अभी ठीक बीस मिनट पहले वह अगली मञ्जिल के लिए रवाना हो चुका है। वे पेट्रोल आदि लेकर तुरन्त उड़ जाना चाहते थे। 'वायुविजेता' को पीछे छोड़े बिना उन्हें कल न थी। अभी तक की उड़ान से यह सिद्ध हो चुका था कि यदि उनके साथ चालें न चली जातीं, वे दुष्टता के शिकार न बनाये जाते, तो ईमानदारी की

उड़ान में वे 'वायुविजेता' से हजारों मील आगे रहते। इस समय यह जान कर कि 'वायुविजेता' केवल बीस मिनट पहले वहाँ से आगे बढा है, उन्हें विजय की आशा होने लगी। इसी कारण वे एक मिनट भी व्यर्थ न खोना चाहते थे।

मेयर ने अपने विश्वासी आदमी 'गरुड' की देख रेख, सफाई और उसमें पेट्रोल आदि भरने के लिए नियुक्त कर दिये। इसी समय को वे मेयर के आतिथ्य में लगा सकते थे। मेयर के आग्रह के कारण वे उसके साथ उसके स्थान पर गये। गर्म पानी में स्नान करने से उनकी तबियत बहुत बदल गई। बहुत कुछ थकावट दूर हो गई। नाना प्रकार के स्वादिष्ट भोज्य-पदार्थों ने उनके चित्त को प्रसन्न कर दिया।

यही उन्हें कुछ ऐसे अमरीकन पत्र देखने को मिले जिनमें उनकी दौड के सचित्र वर्णन दिये गये थे। उन्हें देख कर वे बहुत प्रसन्न हुए। अमरीकन पत्रों के विवरण ने उनके उत्साह को चौगुना कर दिया

भोजन करते समय मेयर ने उन्हें आस्ट्रेलिया के आदिनिवासी जगलियों के विचित्र, मनोरजक विवरण सुनाये। उनके रहन-सहन, रीति-नीति, भोजन-पान, शिकार-व्यवसाय आदि की बातें उडाकों को बड़ी मनोरजक जान पड़ीं। खासकर उनके बूमेरग नामक हथियार के विवरण ने सबको आश्चर्य में डाल दिया। बूमेरग को जगली फेककर मारते हैं। निशाने पर चोट करने के बाद बूमेरग फिर चलाने वाले के पास लौट जाता है।

भोजन समाप्त कर उडाकों ने पनामा के लिए समाचार, फोटो आदि भेजे। फिर वे अड्डे पर आये और 'गरुड़' को जॉचने के बाद सब से विदा हो, रात के नौ बजे आगे बढे। वे अपने प्रतिद्वन्दियों से केवल तीन घटे पिछडे थे।

डार्विन से चलकर वे आस्ट्रेलिया के उत्तरीय भाग पर से होते हुए यार्क अन्तरीप को पार कर पैसिफिक महासागर की जलराशि के ऊपर जा पहुँचे। प्रायः आठ हजार मील तक उन्हें जलराशि के ऊपर से जाना था।

इस प्रदेश मे वायुयान द्वारा यात्रा का कोई वैसा नियमित-सुसगठित प्रयत्न नहीं किया गया था। प्रायः सभी देश की सरकारें इन प्रदेशो को हवाई-यात्रा के लिए खतरनाक समझती थीं। इस कारण उड़ाकों के लिए अगली मजिलें विशेष भयावह जान पड़ीं। इन मजिलों में इजिन के बिगड़ जाने, यान के किसी भाग में गड़बड़ी उपस्थित हो जाने से फिर जान बचना आसान न था।'

उड़ाकों ने सब तरह से सावधान रहना आवश्यक समझा। वे लाइफ-बेल्ट से सदा सुसज्जित रहने लगे। सोते, जागते हर समय वे खूब सतर्क रहने लगे।

अपने नक्शों, तालिकाओं को सावधानी से देखते, तथा यन्त्रों द्वारा दिशा आदि का निश्चय करते वे बराबर उड़ते चले गये। उन्हें मौसमी हवा का और वर्षा का बड़ा भय था। किन्तु भाग्य अच्छे थे। न तो हवा ही विशेष तीव्र थी और न बादल ही घने थे। रात बीती। दिन आया। बीच-बीच में रास्ते में उन्हें अनेक छोटे-छोटे द्वीप और द्वीप-समूह मिले। कहीं-कहीं समुद्री पक्षियों से भी उनका सामना हुआ। किन्तु एक भी पक्षी उनका न तो साथ ही दे सका और न उनमें से किसी की हिम्मत ही पड़ी कि 'गरुड़' तक वह पहुँच कर उस पर आक्रमण करता। वे उसके पीछे चें-टें करते दौड़ते, किन्तु उसकी तीव्र-गति के कारण एक-दो मिनट के बाद ही पीछे छूट जाते। छोटे-छोटे द्वीपों की शोभा निराली थी। नीले, अनन्त जल के बीच ये हरे-भरे नन्हें द्वीप पन्ने की तरह चमकते थे।

देखते-देखते वह दिन भी जल-राशि के ऊपर-ऊपर उड़ने में ही बीत गया ! रात आई। ऊपर सुनील आकाश असंख्य चमचमाते हुए तारों और शीतल, स्वच्छ किरणों वाले चन्द्रमा से सुशोभित हो गया। और नीचे दृष्टि जाने पर वही ऊपर वाला दृश्य उपस्थित हो जाता था। केवल इतना अन्तर था कि नीचे छोटी-बड़ी लहरें तारों और चन्द्रमा के प्रतिबिम्बों को प्रतिक्षण नूतन-नूतन रूप में उपस्थित कर एक विचित्र ससार की सृष्टि करती थीं।

पारी-पारी से वायुयान का संचालन करते-करते उड़ाको ने वह रात भी बिता दी। दूसरे दिन सामने सागर के बीच में नौ द्वीपों का एक समूह देख पड़ा। तालिकाओं तथा नक्शो आदि से मिलान करने पर वह समोअन द्वीप-समूह सिद्ध हुआ। यही उनकी इस मंजिल का अड्डा था।

एक घंटे के अन्दर ही ओपोलू द्वीप के आपिया नामक नगर पर 'गरुड़' जा पहुँचा। नगर के एक ओर एक मैदान मे बहुत से मनुष्य एकत्र थे। 'गरुड़' को देखते ही वे जोर-जोर से चिल्लाने और हाथ हिला हिला कर उसका स्वागत करने लगे। वहीं लाल-सफेद झंडा लहराता देख पड़ा। कुछ ही क्षण में 'गरुड' उस मैदान में उतर पड़ा। पास ही 'वायुविजेता' खडा देख पड़ा। गरुड़ के उड़ाको के चेहरे खिल गये। अन्त में इतनी बाधाओं का सामना करने पर भी उन्होंने अपने प्रतिद्वन्दियो को पकड़ ही लिया।

द्वन्द्वयुद्ध : 'गरुड़' के तार कटे

'गरुड़' नीचे आया। सैकड़ों की भीड़ ने उसे घेर लिया। वाटर-फील्ड नामक एक अमेरिकन व्यापारी इस अड्डे का प्रबन्धक बनाया गया था। उसने आगे बढ़कर उड़ाकों का स्वागत किया। उसके साथ दो और श्वेतांग व्यक्ति थे। एक तो उन द्वीपों के ईसाई मिशन का प्रधान मि० हार्ट और दूसरा एडवर्ड नामक एक अँगरेज व्यापारी। इन दोनों ने भी उड़ाकों का हृदय से स्वागत किया। उनसे पता चला कि 'वायुविजेता' केवल पन्द्रह मिनट पहले वहाँ आया था।

पीटर को सामने देख 'गरुड़' के उड़ाकों का क्रोध भड़क उठा। उसने उनकी जान लेने में कोई बात उठा न रक्खी थी। महासागर के ऊपर उनके वायुयान को शिला के द्वारा बेकार कर देने का साफ यही मतलब था कि वह उनको जल में डुबा कर मार डालना चाहता था। सबसे अधिक उत्तेजित था जमशेद। वह तुरन्त पीटर से जवाब तलब करने और उसे उचित दण्ड देने के लिए उतावला हो उठा। बड़ी मुश्किल से पीटर इस बार उनके सामने पड़ा था। जमशेद अब एक क्षण भी अपने को रोक न सकता था।

किन्तु देव तत्काल लड़ाई-झगड़ा नहीं करना चाहता था। उसने जमशेद को समझा-बुझा कर किसी प्रकार शान्त किया।

वहा वाले भोजन के लिए दोनों दलवालों को एक साथ अपने यहाँ ले जाना चाहते थे। किन्तु दोनों दलों में आपस में इतनी अन-बन देख, उन लोगों ने अपने विचार बदल दिये। अमरीकन व्यापारी

'गरुड़' के आरोहियों को समझा-बुझा कर अपने साथ ले गया और मिशन का प्रधान 'वायुविजेता' के उड़ाकों को अपने यहाँ। दोनों वायुयानों की देख-रेख के लिए पहरेदार नियुक्त कर दिये गये।

कुछ समय बाद 'गरुड़' के उड़ाके लौट कर अड्डे पर आये। उन्होंने देखा कि पीटर उनसे पहले ही वहाँ पहुँच गया है और उनके वायुयान की ओर तेजी से बढ़ा जा रहा है। उसे उस ओर लपकते देख उन्हें भय हुआ कि वह फिर कोई दुष्टता न करे, ऐसा न हो कि वह 'गरुड़' को बिगाड़ने का कोई प्रयत्न करे। सशंकित हो, वे भी तेजी से उसी ओर दौड़ पड़े।

उनके पैरों की आहट पाकर पीटर ने पीछे की ओर मुड़कर देखा। उस समय तक वह 'गरुड़' के बिल्कुल पास पहुँच गया था। उन्हें तेजी से अपनी ओर आते देख, वह लौट पड़ा और अपने वायुयान की ओर भागने लगा।

जमशेद दौड़ कर उसके सामने जा पहुँचा और गरज कर बोला—'तुम हमारे वायुयान के पास क्यों आये? क्या करना चाहते थे? अनेक बार तुमने चोरी से आकर हमारे वायुयान को क्षति पहुँचाई है। तुम दुष्टता से बाज नहीं आते!'

पीटर पहले तो सिटपिटा गया। देर तक उसके मुँह से कोशिश करने पर भी कोई शब्द न निकल सका। किन्तु अन्त में किसी तरह से उसने भर्राई हुई आवाज में कहा—'जबान सभाल कर बोलो! इस तरह की वाही-तवाही बकोगे तो ठीक न होगा।'

इसी बीच में लोगों ने आकर उन्हें चारों ओर से घेर लिया। पीटर अपनी बात समाप्त कर वहाँ से निकल जाना चाहता था, किन्तु बान और जमशेद ने उसे घेर कर रोक लिया। मि० हार्ट, वाटर-फील्ड और एडवर्ड भी वहाँ आ गये।

जमशेद ने पीटर से फिर कहा—'तुमने पहले तीन-चार बार जो दुष्टताएँ की थीं उनकी बात तो पीछे होगी, पहले यह बतलाओ कि कोलम्बो और सिंगापूर के बीच सागर के ऊपर उड़ते समय तुमने हमारे वायुयान पर शिलाएँ क्यों फेंकी थी? तुम जानते थे कि वैसा करने से हमारा वायुयान बेकार हो जायगा और हम अतल जल में डूब कर मर जायँगे?'

पीटर ने जरा तेज पड़ते हुए कहा—'बिलकुल झूठ! हमने तुम्हारे ऊपर शिला नहीं फेंकी।'

जमशेद—'क्या तुम और तुम्हारे साथी शपथपूर्वक कह सकते हैं कि हमारे वायुयान के ऊपर शिलाएँ नहीं गिरी थीं?'

'वायुविजेता' के अन्य तीनों उड़ाके भी वहाँ आ गये थे। उनके चेहरे उतरे गये थे। वहाँ उपस्थित सभी लोगों को विश्वास हो गया कि जमशेद का कहना ठीक है। अब शिला के गिरने से एक दम इनकार करना असंभव था। उसका उलटा असर पड़ता। पीटर इस बात को ताड़ गया। इसके पहले कि कोई उसके साथियों से प्रश्न करे और घबराहट में उनमें से कोई सारा भेद प्रकट कर दे, पीटर ने गंभीर बनने की चेष्टा करते हुए तनिक दृढ स्वर में कहा—'पत्थर गिरा जरूर था, किन्तु हमने उसे जान-बूझकर नहीं फेंका था। इत्तिफाक से खिड़की का पल्ला खुल गया और पत्थर टपक पड़ा। हमें तो उसके गिरने का हाल बाद में मालूम हुआ। इसमें हमारा क्या दोष!'

जमशेद ने कहा—'वह पत्थर था, कि शिलाओं के भारी-भारी खण्ड थे? और उन्हें तुमने अपने वायुयान पर रक्खा ही क्यों?'

पीटर ने अपने साथियों की ओर तेज़ नजर डाली। भय और लज्जा के कारण उनका बुरा हाल था। स्थिति को संभालने के विचार

से उसने फौरन उत्तर दिया—'हमने कोलम्बो में कुछ नारियल खरीदे थे। उन्हीं को फोड़ने के लिए हमें पत्थर की आवश्यकता थी।'

उसने अपने को सयत, दृढ रखने की काफी चेष्टा की, किन्तु अन्तिम बात कहते समय उसका तालू सूखने लगा था, उसकी जबान हकलाने लगी थी।

जमशेद ने डपट कर पूछा—'नारियल फोड़ने के लिए इतने भारी-भारी शिला-खण्डों की जरूरत थी ? और इतने अधिक शिला-खण्डों की ? एक से तो नारियल फोड़े न जा सकते ? फिर उन शिलाओं ने एक खास समय में एक खास ढङ्ग से गिरने का आयोजन कर लिया था ? खासकर जब हमारा वायुयान तुम्हारे वायुयान के नीचे से होकर आगे बढने लगे तभी उन्हें गिरने की सूझी ? और क्रम से एक-के-बाद-एक वे इस हिसाब से गिरीं, जिसमें हमारे वायुयान का कोई-न-कोई हिस्सा उनकी चोट से टूट ही जाय ?'

पीटर ने हर बार जमशेद की बात का उत्तर देना चाहा, पर उसकी जबान न खुल सकी।

जमशेद ने फिर गरज कर कहा—'तुमने सागर के ऊपर हमें मार डालने में कोई बात उठा न रक्खी थी। अब हमारी पारी है ! सावधान !!'

पीटर कॉपकर तुरन्त चार कदम पीछे हट गया। फिर उसने अपने चारों ओर देखा। सभी उसे घृणा की दृष्टि से देख रहे थे। वह सिहर उठा। किन्तु दूसरे ही क्षण सभल कर उसने अपनी आस्तीने चढ़ानी शुरू कीं।

इसी बीच में देव ने जमशेद को शान्त करना चाहा। उसने समझाते हुये कहा कि अमरीका पहुँचते ही यह मामला अदालत के

सामने पेश किया जायगा, तब तक शान्त रहना ही उचित होगा, यहाँ झगड़ा करना ठीक नहीं है।

पर जमशेद बदला लेने के लिए पागल हो रहा था। उसने चिल्लाकर कहा—'अदालत की कार्यवाही बाद में होती रहेगी। यहाँ तो मैं पीटर को ऐसी शिक्षा देना चाहता हूँ, जिससे वह दौड़ समाप्त होने तक कोई और दुष्टता न करे। मैं कायर पीटर को द्वन्दयुद्ध के लिए ललकारता हूँ। यदि उसमें कुछ भी स्वाभिमान शेष है तो वह आगे बढ़े।'

पीटर लड़ना न चाहता था। किन्तु जमशेद को लड़का समझ, अपनी जीत निश्चित मान कर उसने हिम्मत बाँधी। वह तीस के उस पार था और जमशेद केवल बाइस-तेइस का ही था। पीटर ने समझा कि इस छोकरे को परास्त करना कोई कठिन बात न होगी। एक दूसरा भी कारण था। वह किसी तरह चोट पहुँचा कर जमशेद को इतना निकम्मा कर देना चाहता था कि बाकी यात्रा में वह वायुयान के सचालन में बिल्कुल भाग न ले सके। यह सोच-विचार कर वह लड़ने के लिए तैयार हो गया। उसने कहा—'मैं जमशेद से निपटने के लिए तैयार हूँ। यदि उसके साथी शान्त रहेंगे तो मेरे भी साथी शात रहेंगे, कुछ न बोलेंगे, युद्ध से अलग रहेंगे।'

सब को विश्वास हो गया था कि पीटर के विरुद्ध जो भी बातें कही गई हैं, वे सब सच हैं। जमशेद और पीटर की जोड़ी भी ठीक न थी। वे जानते थे कि पीटर बड़ा है और इसी कारण उसने जमशेद के साथ लड़ना स्वीकार कर लिया है। वे चाहते थे कि पीटर को उचित दण्ड मिले।

एडवर्ड ने निर्णायक होना स्वीकार कर लिया। लोगों को हटा कर अखाड़े का आयोजन किया गया। कुछ लोगों ने एक दूसरे के

हाथ पकड़ कर एक बड़ा घेरा बना लिया। निर्णायक के और जमशेद-पीटर के अलावा और सभी व्यक्ति उस घेरे से बाहर कर दिये गये। निर्णायक ने दोनों लड़ाकों को समझा दिया कि अन्याय, छल न किया जाय, नाभि के नीचे किसी प्रकार का वार न किया जाय। सब ठीक-ठाक होने पर निर्णायक का इशारा पाते ही दोनों प्रतिद्वन्दी एक दूसरे पर टूट पड़े। द्वन्द-युद्ध शुरू हो गया। युद्ध के प्रारम्भ होने के पहले पीटर ने अपने साथी क्रास को एक ओर ले जाकर चुपके से उसके कान में कुछ कहा।

अब दोनों पैंतरे बदल कर एक दूसरे पर वार करने लगे। दो-तीन मिनट के बाद पीटर ने झुककर जमशेद के पेड़ू में इतने जोर का घूँसा दिया कि उसकी आँखों के सामने अँधेरा छा गया, वह डगमगा कर गिरने लगा। किन्तु दूसरे ही क्षण जमशेद ने अपने को सभाल लिया। वह तनिक सावधान होकर लड़ने लगा। उसके पैतरों से, आक्रमण और वारों के ढङ्ग से पीटर को विश्वास हो गया कि युद्ध-कौशल में, बल में और साहस मे जमशेद का सामना करना कठिन है। वह आक्रमण करने के बजाय अपनी रक्षा की ओर अधिक सतर्क हो उठा।

कुछ क्षण बाद घात लगा कर उसने फिर जमशेद की जाँघों के बीच करारा घूँसा दिया। वार भरपूर पडा। जमशेद उसके लिए तैयार न था। वह समझे था कि जब इतने नीचे वार करना मना है तो पीटर नियम के अनुसार वहाँ वार करेगा ही क्यों! किन्तु पीटर तो अपने प्रतिद्वन्दी को बेकार कर देना चाहता था, चाहे न्यायपूर्वक हो, चाहे अन्याय के बल पर ही। जब और दूसरी तरह जमशेद से पार न पा सका तो उसने इस प्रकार उसे पीटना शुरू किया।

इस घूँसे ने जमशेद को थर्रा दिया। एक हाथ से चोट खाये हुये स्थान को जोर से दबा कर उसने दूसरे हाथ से अपनी रक्षा का विधान किया। उसका शरीर सन्न पड़ा जा रहा था। आत्मा विकल हो उठी थी। सर घूमने लगा था। आँखें झपी जाती थीं। पैर लड़खड़ा रहे थे। खड़ा रहना दूभर था।

उसकी ऐसी हालत देख, पीटर उछल-उछल कर उस पर वार करने लगा। वह इसी मौके की ताक में तो था ही।

किन्तु निर्णायक और दर्शक सब बातें देख रहे थे। वे सारी परिस्थिति समझ गये। पहले भी पीटर अन्यायपूर्ण वार कर चुका था। इस बार फिर उसने वैसा ही किया। निर्णायक ने कड़क कर पीटर को चेतावनी दी। दर्शकों ने गरजते हुये कहा कि जो नियम भङ्ग करेगा वह बिना उचित दण्ड पाये जा न सकेगा।

पीटर ने सशंकित हो उड़ती नजर दर्शकों पर डाली। देखा, वे सभी उसके विरुद्ध उत्तेजित हो उठे हैं। परिणाम का विचार कर वह सहम गया।

यह सब एक क्षण में होगया। किन्तु यही क्षण भर का अवकास जमशेद के लिए जीवन-प्रद सिद्ध हुआ। पीटर के वारों के कुछ कम होते ही वह सभल गया। चोट वाले स्थान को जोर से मल, पैंतरे बदलता हुआ वह कूद कर दूसरी ओर जा पहुँचा। उसने समझ लिया कि देर करने अथवा सहमने से हानि की ही अधिक सम्भावना है। बिजली की तरह चमक कर वह पीटर पर टूट पड़ा। इसके पहले कि पीटर वहाँ से हटे, जमशेद ने उस पर घूँसों की वर्षा प्रारम्भ कर दी। पहले पीटर ने उसके पेड़ू एव जाँघों के बीच वार कर दूसरी ओर निकल जाना चाहा। पर जमशेद अब इन सब वारों के लिए तैयार हो चुका था। उसने पीटर के वार को बचाते हुये इतने घूँसे उसके

जड़े की अन्त में वह लड़खड़ा कर जमीन पर गिर पड़ा। निर्णय ने उसे दौड़कर उठाया। जमशेद का क्रोध दूर न हुआ था। किन्तु मि० हार्ट, वाटर फील्ड आदि ने उसे पकड़ लिया और वे सब उसे समझाने लगे। सब ने देखा, जमशेद का पेडू और उसकी जाँघों के बीच का हिस्सा पीटर के आघात के कारण फूल आया है। वे पीटर की दुष्टता से बहुत खिन्न हुये।

पीटर के साथी उठाकर उसे अपने वायुयान की ओर ले गये।

इधर जमशेद को घेर कर सब उसकी प्रशन्सा करने लगे। कमोआ वासियों ने तो उसे इतने फल ला-ला कर दिये कि वहाँ फलों का एक ढेर लग गया। वीर की सभी स्थानों मे पूजा होती है।

वे अभी लोगों से बाते कर ही रहे थे, इतने में उन्हें इञ्जिन के चलने का जोरदार शब्द सुन पड़ा। सब ने चकित होकर उस ओर देखा। देखा, 'वायुविजेता' रवाना हो रहा है। दूसरे ही क्षण वह आकाश मे देख पड़ा और धीरे-धीरे आँखों से ओझल हो गया। जमशेद ने तनिक खिन्न होकर कहा—'इस बार वे फिर हमसे आगे रवाना हो गये। फिर हमसे असावधानी हुई।'

देव ने कहा—'विशेष चिन्ता की बात नहीं है। दस मिनट में हम भी चल देंगे। वे कितने आगे जायँगे!'

साम और जान 'गरुड़' की जाँच करने लगे। वायुवान के पिछले हिस्से पर नजर पड़ते ही उनके मुँह से एक साथ निकला—ओफ! गजब हो गया!! यान के पिछले हिस्से के तार ही काट दिये गये हैं!!!

देव और जमशेद भी दौड़ पड़े। देखा, वायुयान का पिछला हिस्सा अलग कर दिया गया है। अगले और पिछले हिस्सों को जोड़ने वाले सब तार ही काट डाले गये हैं। आगे कैसे बढा जाय?

---

(१४)

दिन का रहस्य

किसी ने तेज धार वाली किसी चीज से 'गरुड़' के पिछले हिस्सों के जोड़ों को काट दिया था। वह आगे वाले हिस्से से बिलकुल अलग-सा हो गया था।

अब उनकी समझ में सब बातें आ गईं। पीटर ने उनके भोजन से लौटने के पहले ही आकर उनके वायुयान को नष्ट करने की चेष्टा की थी। किन्तु उस समय सयोग से वे लोग भी उसके पहुँचते-पहुँचते वहाँ आ गये थे। मौका न मिलने के कारण वह भाग निकलना चाहता था। बाद में लड़ाई शुरू होने के पहले उसने क्रास से इसी के लिए चुपके से कुछ कहा था। जब सब लोग लड़ाई देखने में मग्न थे, उसी बीच में अवसर पाकर क्रास ने उनके यान की यह दशा की। क्रोध से चारों पागल हो गये।

यह सब देख-सुनकर मिशन के अध्यक्ष ने बतलाया कि पहले तो पीटर अड्डे से जाना ही न चाहता था, उसने अड्डे पर रुकने के लिए अनेक बहाने बनाये, पर जब उससे विशेष रूप से आग्रह किया गया, तब वह चला तो गया, किन्तु उसका मन भोजन में तनिक भी न लगा और भोजन समाप्त होने के पहले ही वह बहाना बना वहाँ से भाग आया। मालूम होता है, इसी महत्वपूर्ण कार्य के लिए वह बेचैन हो रहा था।

सभी पीटर और उसके साथियों की दुष्टता पर खीझ उठे। किन्तु खीझना और क्रोध करना व्यर्थ था। 'वायुविजेता' पर चढ़कर पीटर

साम ने आश्चर्य भरे स्वर से पूछा—'तो क्या हम परसों २५ को डार्विन से चले थे ? यदि आज २७ है, तो परसों, २५ होनी चाहिए थी ?'

उनकी बातें सुनकर देव खूब ठठाकर हँस रहा था। जमशेद को बड़ा कुतूहल, बड़ा आश्चर्य हुआ। देव के सामने एक नक्शा था। जमशेद ने उसके पास जाकर ध्यान पूर्वक नक्शे को देखा। सहसा वह भी ठठाकर हँसने लगा और बोला—'आज निश्चय ही २७ है। देव का कहना ठीक है। इस समय २८ नहीं २७, तारीख है, २७।'

जान और साम बड़े चक्कर मे थे। दोनों ने जोर देकर पूछा—'तो क्या कल २७ तारीख नहीं थी ?'

देव ने उसी तरह मुस्कराते हुए कहा—'कल जरूर ही २७ तारीख थी। और आज भी २७ तारीख ही है। कल हमने १८०वी रेखा को पार किया है। और यह रेखा ससार की तिथि-रेखा मानी जाती है। इस रेखा के पश्चिम की ओर जिस समय बृहस्पतिवार, २७ तारीख थी, ठीक उसी समय उसी रेखा के पूर्व की ओर बुधवार, २६ तारीख थी। संसार में यही गणना सर्वमान्य है। इस कारण कल संध्या समय जब हम इस रेखा के पश्चिम की ओर थे, तब तक तो हमारे लिए २७ तारीख रही थी, किन्तु जैसे ही इस रेखा को पार कर हम उसके पूर्व की ओर पहुँच गए, वैसे ही हमारे लिए तारीख बदल कर तत्काल २६ हो गई थी।'

जान ने मुस्कुराते हुए कहा—'इस रेखा का हमें बिल्कुल ही ध्यान न रह गया था। अब तुम्हारी पहेली समझ में आयी।'

'गरुड़' बराबर सपाटे भरता हुआ चला गया। मौसम साफ था। कोई विघ्न-बाधा उपस्थित न हुई। उड़ाके बातें करते, समय-समय पर 'धारा' से खेलते, पारी-पारी से विश्राम और संचालन करते हुए बराबर

आगे बढते गए। दूसरे दिन सबेरे दस बजे के करीब उन्हे कुछ छोटे-छोटे द्वीपों का एक समूह देख पड़ा। नक्शे से मिलान करने पर पता चला कि वह मारकुइस द्वीप-समूह है। उसी के नुकाहीवा नामक एक द्वीप में उन्हें ठहरना था। वे प्रसन्न होते हुए उस ओर बढे। कुछ समय बाद वे उन द्वीपों के ऊपर आ पहुँचे। ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों के रूप-रङ्ग से यह स्पष्ट था कि किसी समय वहाँ ज्वाला मुखियों का प्राबल्य था। प्रत्येक द्वीप में अनेक आकार, प्रकार, रङ्ग, रूप के पहाड़ों, पहाड़ियों का सिलसिला देख पड़ता था। कहीं किले के, कहीं परकोटे के, कहीं मीनारों के, कहीं कँगूरों के आकार उपस्थित थे। ज्वालामुखियों के कारण वहाँ के पहाड़ों, पहाड़ियों की बनावट इसी प्रकार की थी। उनके बीच में हरी-भरी उपत्यकाएँ थीं जिनमें नदी-नालों का बाहुल्य था। यहीं बस्ती के लक्षण देख पड़ते थे। मारकुइस द्वीपवासी इस प्रकार के वातावरण में किसी प्रकार से अपना अस्तित्व बनाये हुए थे। 'गरुड़' वहीं जाकर उतरा। वहाँ के प्रबन्धक ने उनका स्वागत किया और हेलियम के स्टीमर के आने की सूचना दी। उनके प्रतिद्वन्दी थोड़ी देर पहले अगली मजिल के लिए रवाना हो चुके थे। हेलियम-गैस से थैलों को भर कर तथा पेट्रोल आदि लेकर 'गरुड़' के उड़ाके भी साढे बारह बजे वहाँ से आगे के लिए चल पड़े।

हेलियम-गैस के कारण 'गरुड़' की चाल, उड़ान आदि सभी में बहुत अन्तर आ गया था। अब वह पहले की तरह ही तोप से छूटे हुए गोले की भाँति सनसनाता हुआ जा रहा था। हलकेपन का तो कहना ही क्या!

---

(१५)

वज्रपात और वायु-भँवर

उस दिन शाम तक और शाम से दूसरे दिन सबेरे तक 'गरुड़' मौज में सपाटे भरता चला गया। हवा मजे की थी, आसमान भी प्रायः साफ ही रहा। किन्तु दूसरे दिन दोपहर के करीब 'गरुड़' के रंग-ढंग कुछ दूसरे ही नजर आने लगे। उसकी वह चाल न रह गई, वह सुघरई गायब-सी हो गई। अब वह वैसा सधा हुआ न चलता था। भँवर में पड़ी हुई छोटी डोंगी की तरह वह डगमगा रहा था, सीधे न चल कर इधर-उधर बहक-सा जाता था, झोंके-पर-झोंके खा रहा था।

उड़ाकों को आश्चर्य हुआ। उन्होंने इंजिन, आदि जाँचे, वे सब ठीक थे। तब उन्होंने खिड़कियाँ खोलकर बाहर देखा। हवा बेहद तेज़ हो गई थी। सारा आसमान काले-काले बादलों से ढका हुआ था। बिजली बराबर कड़क रही थी। नीचे समुद्र इतना भयावह हो उठा था कि उस ओर देखने की हिम्मत न होती थी। पर्वताकार लहरें उठ-उठ कर एक दूसरी से टकरा रही थीं। भीषण मथन-सा हो रहा था।

उड़ाके भयभीत हो उठे। 'गरुड़' की चाल कम कर दी गई।

वायुयान घने बादलों के बीच में आ गया था। बिजली की कड़क एक क्षण के लिए भी बन्द न होती। एक कड़क होती, बिजली कौंधती, वज्रपात होता और इसके पहले की उस वज्रपात की भीषण, कर्णविदारक ध्वनि विलीन हो, उसकी कौंध शान्त हो, दूसरे वज्रपात

की ध्वनि सुन पड़ती, दूसरी बार बिजली कौंधती, दूसरी गड़गड़ाहट से दशों दिशाएँ भर जातीं। यह सिलसिला बराबर जारी था, एक पल के लिए भी न बन्द होता, सेकण्ड भर के लिए क्रम न टूटता! 'गरुड़' के आगे-पीछे, दाहिने-बॉयें, ऊपर-नीचे गड़गड़ाहट, सनसनाहट हो रही थी, कान फटे जाते थे, चारों ओर बराबर वज्रपात हो रहे थे, बिजलियाँ चमक रही थी। आँखें खोलना कठिन था।

उड़ाके भय से सिहर उठे। किसी भी क्षण उन पर गाज गिर सकती थी, वे वज्रपात से ताड़ित हो नष्ट हो सकते थे। वज्रपात से, बिजली से बचना असभव था। दूसरा भय था वायु के भँवर में पड़ने का। घने बादलों के बीच मे पड़कर तेज हवा के झोंके भँवर का रूप पकड़ लेते थे? उतने भाग के बादल मथ उठते थे। उनमें फसते ही 'गरुड़' के चिथटे-चिथड़े उड़ जाते! बचने की कोई आशा न थी। प्रतिपल उन्हें भय हो रहा था कि या तो वे वज्रपात के शिकार होंगे अथवा किसी भँवर में फस जायँगे।

बचने का केवल एक ही उपाय था, बादलों के ऊपर निकल जाना। वर्तमान परिस्थति में बादलों के बीज से निकल भागना, ऊपर चढना भी खतरे से खाली न था। किन्तु खतरे का सामना साहस से किये बिना काम न चलता था। वायुयान कुछ तिरछा कर ऊपर उठाया गया। ज़ोर से टक्कर लेते हुए बादलों के सघर्ष के फल-स्वारूप वज्रपात से बचाते हुए, वायु के भॅवरों से कतराते हुए किसी तरह उड़ाके ऊपर उठे। नौ हजार फीट पर पहुँचने पर वे बादलों के एक तह को पार कर गये। किन्तु फिर दूसरा तह शुरू हुआ। वह उतना अधिक भयानक न था। किन्तु शान्ति वहाँ भी न थी। वज्रपात, बिजली की कौंध, वायु के भँवर यहाँ कम भीषण थे, किन्तु अभी उनसे पीछा न छूटा था।

उड़ाके और ऊपर उठे। ऊपर जाते-जाते उन्होंने अपने यंत्र द्वारा वायु की गति की माप की। वे यह देख कर सहम गये कि वायु पचास मील प्रति घण्टे के हिसाब से चल रही थी, और प्रति क्षण उसकी गति बढ़ती ही जाती थी। उन्होंने हिसाब लगाकर देखा कि दस मिनट बीतते-न-बीतते वायु की गति साठ मील तक पहुँच जायगी। शायद और भी बढ़ जाय।

वे ऊपर उठते जा रहे थे। तेजी से। इसी बीच में भीषण वज्रपात हुआ। ठीक उनके पास ही। कुछ ही फीट के फासले पर। वे बाल-बाल बचे। पहले तो उन्हें ऐसा मालूम हुआ मानो बिजली उन पर आकर गिरी हो। वे सहम गये। उनकी आँखे बन्द हो गई। उनके कान सुन्न पड़ गये। सारे बदन में सनसनी पैदा हो गई।

विचित्र स्थिति थी। एक सेकंड में कड़क के साथ कोई बादल फटता और सारा आसमान बिजली के असह्य प्रकाश से भर जाता। किन्तु दूसरे ही सेकड लुप्प से प्रकाश न जाने कहाँ विलीन हो जाता और चारों ओर घोर अंधकार छा जाता, अपना हाथ तक न देख पड़ता। फिर दूसरे ही सेकड वही कड़क, वही चमक, वही लपक, वही असह्य प्रकाश।

अनेक बार उन्हें जान पड़ा मानो वज्रपात से 'गरुड़' के चिथड़े-चिथड़े उड़े जा रहे हैं। कई बार उनके पास से गाज सर्र से चमक कर निकल गई। वे मरते-मरते बचे। अनेक बार गरुड़ भँवर में पड़ते-पड़ते किसी तरह ऊपर सरक गया। पीपल के पत्ते की तरह डोलता-डगमगाता वह बराबर बादलों को चीरता ऊपर बढ़ता गया। अन्त में वह बादलों की तह के बीच से निकल कर उनके उपर जा पहुँचा, प्रायः पंद्रह हजार फीट ऊपर, समुद्र की सतह से कोई तीन मील की उँचाई पर।

यहाँ आसमान साफ था। वायु का प्रवाह साधारण था। उनके ठीक नीचे एक विचित्र सृष्टि थी। मानो गहरी काली स्याही का एक महासागर जोर-ज़ोर से मथा जा रहा हो। काजल से भी काले बादलों के झुंड-के-झुंड आपस में टकरा रहे थे। उनके संघर्ष के कारण जोर की लपकें उठ रही थीं, बिजलियाँ कौंध रही थीं, घरघराहट, कड़क, चमक से सारा प्रदेश भरा हुआ था, देवासुर-संग्राम चल रहा था।

ऊपर से इस दृश्य को देखते हुए उड़ाके आगे बढ़ रहे थे। कुछ ही क्षण पहले वे अपने जीवन से निराश हो चुके थे। किन्तु अब जीवन का आनन्द लेते हुए जा रहे थे।

देर तक नीचे का संघर्ष जारी रहा। दो घण्टे बाद धीरे-धीरे स्थिति बदली। शनैः-शनैः परिवर्तन हुआ। पहले बिजली की कड़क-चमक शांत हुई, विलीन हुई, वज्रपात का अंत हुआ। बादलों के झुंडों के रंग में परिवर्तन हुआ। धीरे-धीरे बादल फटने लगे। देखते-देखते वे दूर-दूर फैल गये। वायु ने उन्हें छिन्न-भिन्न कर दिया। सारी सृष्टि ही बदल गई।

पंद्रह हजार फीट पर सरदी और हवा की सूक्ष्मता के कारण देर तक रहना सुखद न था। बीस हज़ार फीट पर हवा इतनी पतली हो जाती है कि वहाँ तक पहुँचने पर मनुष्य के मुँह और नाक से खून निकलने लगता है, साँस लेने में कष्ट होता है। पंद्रह हज़ार फीट पर खून तो नहीं निकलता किन्तु कुछ कष्ट तो मालूम ही होता है।

बादलों के छिन्न-भिन्न होते और वायु की तेजी के कम पड़ते ही उड़ाके धीरे-धीरे नीचे उतरे। नीचे सागर शान्त हो रहा था। तूफान के समय लहरों की टक्कर से न जाने कितने जहाज छिन्न-भिन्न होकर सागर के अतल जल के नीचे जा पहुँचे होंगे।

---

(१६)

'वायुविजेता' पर वज्रपात

'गरुड़' के उड़ाके इस तूफान के सम्बन्ध मे बाते करते आगे बढे जा रहे थे । बराबर उनके सामने यह प्रश्न उपस्थित होता कि 'वायु-विजेता' का क्या हाल हुआ होगा ? क्या वह भी उन्हीं की तरह बदलों के ऊपर भाग कर बाल-बाल बच गया ? अथवा वज्राघात से या वायु-भँवर की चपेटों से उसके चिथड़े-चिथड़े उड़ गये, उसके आरोही अकाल में ही काल के गाल मे चले गये ?

कुछ समय बाद जमशेद को सामने एक चमकती-सी वस्तु समुद्र की लहरों पर उठती-गिरती, हिलती-डोलती देख पड़ी । उसने दूर्बीन का सहारा लिया । उसने जो देखा उससे उसको बड़ा क्षोभ हुआ । उसने उत्तेजित भाव से कहा—'मुझे तो लहरो पर एक वायुयान-सा उतराता हुआ देख पड़ता है ! 'वायुविजेता' की कुशल नही है !'

देव आदि ने भी देखा । उनके भावों में भी उसी भाँति परिवर्तन हुआ । और किसी दूसरे वायुयान का वहाँ इस दशा में पाया जाना सम्भव न था ।

जान ने 'गरुड़' को उसी ओर मोड़ा । कुछ पास पहुँचने पर जो देखा उससे सन्देह बिल्कुल दूर हो गया । वह 'वायुविजेता' ही था । उसी के साथ एक मनुष्य की आकृति भी देख पड़ी । वह वायुयान के एक भाग को पकड़े उसी से लिपटी हुई थी । कुछ और आगे जाने पर उन्हें साफ देख पड़ा कि वह पीटर है । उसके कपड़े पानी से तर हैं । वह अपनी सारी शक्ति लगा कर अपने हाथ

और पैरों से वायुयान के एक भाग को ज़ोरों से जकड़े हुये है। हरएक उठने वाली लहर से अपने को बचाने के लिए उसे जोर लगाना पड़ता है।

'गरुड़' को उसने भी देख लिया था। वह एक हाथ ऊपर उठा कर उसे हिलाने और जोर-जोर से चिल्लाने लगा। जान वायुयान को सत्तर फीट तक उतार लाया। अब सागर के जल से 'गरुड़' केवल सत्तर फीट की ही उँचाई पर था। जमशेद ने आवाज़ को तेज करने के लिए (चोंगे) का सहारा लेकर पीटर से कहा—'तुम घबराओ मत। जहाँ तक हो सकेगा हम तुम्हें बचाने की कोशिश करेंगे। तुम सावधान हो जाओ।'

यान उसी के ऊपर चक्कर काटने लगा। अब उन्हें पीटर की आवाज सुन पड़ने लगी। वह बड़े ही विनीत भाव से उनसे प्रार्थना कर रहा था कि वे उसे बचा लें, छोड़ कर न चले जायँ, दया करें, उसकी जान बचा लें।

सवाल था पीटर को ऊपर चढ़ा लेने का। यह काम सरल न था। गरुड़' नीचे जा न सकता था। बड़ी परेशानी थी। सब यही सोच रहे थे कि क्या किया जाय। अन्त में जमशेद ने कहा—'हम रस्सी फेंक दें। पीटर उसे पकड़ कर ऊपर चढ़ आयेगा।'

देव ने कहा—'शायद वह इतना कमजोर हो गया है कि रस्सी के सहारे ऊपर न आ सकेगा।'

सब फिर सोच में पड़ गये। यदि कहीं रस्सी के सहारे ऊपर चढ़ते समय पीटर गिर पड़ा! तो फिर‥ ‥ ?

किया क्या जाय! इसी समय साम ने तनिक प्रसन्नता सूचक स्वर में कहा—'यदि हम रस्सी की सीढ़ी बना लें!'

सब को उसकी बात ठीक जॅची ।

तीनों जल्दी-जल्दी रस्सी की सीढी बनाने मे लग गये। जान वायुयान को घुमाता रहा। जब प्रायः साठ फीट लम्बी सीढी तैयार हो गई तो जान और भी सम्भल कर यान का सचालन करने लगा। वायुयान के नीचे की खिडकी खोलकर सीढ़ी नीचे लटका दी गई। उसके ऊपर का हिस्सा मजबूती से खिड़की के पास बॉध दिया गया।

किन्तु हवा के झोंके उस सीढी को इधर-उधर उडा ले जाते। पीटर तक उसका पहुॅचना सम्भव न था। हवा तेज तो न थी, किन्तु रस्सी की सीढी को इधर-उधर उडा ले जाने के लिए तो काफी थी ही।

फिर एक नई समस्या खडी हो गई।

उड़ाके फिर सोच में पड गये। अन्त में जान ने जरा मुस्करा कर कहा—'क्यों न हम 'पारा' को झूले का आनन्द लूटने दें।'

बात सब की समझ में आगई। उपाय बुरा न था। 'पारा' की कमर से कस कर रस्सी का एक टुकड़ा बाँधा गया और फिर वह सीढी के निचले सिरे से कस दिया गया। इसके बाद धीरे-धीरे सीढ़ी नीचे छोड़ी गई। बन्दर के बच्चे के वजन के कारण सीढी सीधी रही, इस बार वह हवा मे न उड़ी। जान वायुयान को इस प्रकार चलाने लगा कि सीढी का अन्तिम सिरा पीटर के ऊपर जाकर पड़े। दो-तीन बार की कोशिश के बाद सीढी का सिरा पीटर के ठीक ऊपर पड़ा। सीढी को देखते ही वह सब बाते समझ गया था, वह तैयार भी था। उसने एक हाथ बढाकर उसे पकड़ लिया और फिर धीरे-धीरे सीढी पर चढ गया। जान ने वायुयान को इतनी सहूलियत से उड़ाना शुरू किया कि वह ज्यादा हिले-डुले न, जिसमें पीटर के

चढने में अड़चन न पड़े। अन्त में पीटर ऊपर पहुँच गया। जमशेद और देव ने उसे पकड़कर ऊपर खींच लिया। सामने सीढी को खींच लिया और खिड़की बन्द कर दी। 'पारा' को खोलकर अलग कर दिया। उसे यह मज़ाक जरा भी पसन्द न आया। वह उत्तेजनापूर्ण भाव से चटर-चटर करता, हाथ, सर, आँखे मटकाता, इधर-उधर उछलने-दबकने लगा।

देव और जमशेद ने जल्दी-जल्दी पीटर के बदन पर से गीले कपड़े उतारे, उसके बदन और बालो को रगड़ कर तौलिया से पोंछा, उसके अङ्गों और छाती पर ब्राण्डी की मालिश की, कुछ ब्राण्डी उसे पिलाई भी, फिर उसे सूखे गरम कपड़े पहना कर एक मुलायम बिस्तर पर लिटा दिया।

जब पीटर कुछ देर तक आराम कर चुका, तब देव ने उससे पूछा—'तुम्हारे और तीनों साथी कहाँ हैं'।

पीटर ने लम्बी साँस खींच कर कहा—'कह नहीं सकता कि वे जीवित हैं, अथवा सागर के जल ने उन्हें..। हमारे वायुयान के गिरने के साथ ही क्रास तो झोंका खाकर बाहर गिर गया था और शायद लहरों ने उसे रसातल को भेज दिया। मैंने उसे खिड़की से बाहर गिरते देखा था, इतना मुझे याद है। वायुयान के गिरने के साथ ही मैं कुछ बेहोश-सा हो गया था। कुछ समय बाद जब दिमाग ठिकाने हुआ, तो देखा, मैं वायुयान के बाहर उसके पख पर हूँ, मेरे दोनों हाथ और दोनों पैर पख के जोड़ के हिस्से से लिपटे हुए हैं। होश आने पर मैंने और भी कस कर यान के उस हिस्से को पकड़ लिया। बार-बार लहरें उठतीं और मुझे बहा ले जाने की कोशिश करतीं, किन्तु मैं किसी न-किसी तरह अपने को बचाता रहा। होश आने पर मैंने पाल और टाम को भी अपने पास ही एक ओर वायुयान से लटकते हुए

देखा था। किन्तु वे अपने को लहरों के थपेड़ों से अधिक देर तक बचा न सके। लहरें उन्हें बहा ले गई। किन्तु हम सबने लाइफ-बेल्ट बाँध रक्खे थे, इस कारण पाल और टाम डूबे नही। कुछ देर बाद मैंने उन्हें एक बड़े तखते के सहारे बहते देखा था। कुछ समय बाद वे मेरी नजरो से ओझल हो गये।

इतना कहते-कहते पीटर बेदम हो गया। जमशेद ने उसे फिर थोड़ी-सी ब्राण्डी दी। पीटर कुछ सभल गया। दीन भाव से देव और जमशेद की ओर देखते हुए उसने कहा—मैंने सोचा था कि 'वायुविजेता' की चाल तेज कर हम लोग शीघ्र पास वाले अड्डे पर जा पहुँचेगे। इसी कारण हमने चाल जितनी तेज की जा सकती थी कर दी थी। दूसरे साथी तूफान उठने के साथ ही घबरा गये। उन लोगों ने ऊपर जाने में भी देर कर दी। फल यह हुआ कि एक ओर तो वज्राघात से हम मरते-मरते बचे, दूसरी ओर वायु के भँवर में पड़ गये। भँवर में पड़ते ही वायुयान बेकाबू होकर पत्ते की तरह डगमगाने लगा। उसके सभी कल-पुरजे ढीले पड़ गये और अन्त में वह सर के बल समुद्र में जा गिरा।'

उसकी बातों से देव, जमशेद आदि सभी पर विषाद की कालिमा छा गई। प्रतिद्वन्दियों की दुर्दशा से भी उन लोगो को बड़ा क्लेश हुआ। वे अपना घोर अपकार करने वालो, जान तक लेने की चेष्टा करने वालों के विपत्ति-विवरण से द्रवित हो गये।

उनके भाव को देख कर पीटर की आँखों से आँसू गिरने लगे। उसने भरे हुए गले से कहा—'मैं बड़ा पापी हूँ। मै अपने स्वार्थ में ऐसा अन्धा हो गया था कि जब मैंने देखा कि मैं तुम लोगों से सीधे ढंग से पार नही पा सकता, तब मैंने छल, दुष्टता और अन्याय से काम लेना शुरू किया। मैंने इतने अपराध किये हैं कि अब क्षमा

माँगना एक दूसरी नीचता होगी। मैं पनामा पहुँचते ही अदालत के सामने अपने सब अपराधों को स्वीकार कर लूँगा और उचित दण्ड के लिए प्रार्थना करूँगा। मैं अपने सभी पापो के लिए पूरी तरह से प्रायश्चित कर लेना चाहता हूँ।'

देव, जमशेद आदि सभी उसकी ओर बड़े ध्यान से देख रहे थे। उन्हें उसका एक-एक शब्द हृदय के अन्तिम तल से निकलता जान पड़ा। उन्हें विश्वास हो गया कि पीटर के हृदय मे पश्चाताप की आग धधक रही है, वह अपने कुकृत्यो के लिए बहुत अधिक दुखी है।

जमशेद ने उसके निकट जा, प्रेम से उसका हाथ अपने दोनों हाथो में लेकर कहा—'जो हो गया उसे अब मेंटा नही जा सकता। उसके लिए इतने दुखी होने की आवश्यकता नहीं है। आगे से अब कोई ऐसी बात न होनी चाहिए जिससे तुम्हें इस प्रकार सतप्त होना पड़े। हम उन सभी बातो को भूले जाते हैं। तुम भी भूल जाओ। दुखी होने की आवश्यकता नहीं हैं।'

देव ने कहा—'देखो पीटर! मैं तुम्हें बहुत दिन से जानता हूँ। तुममें अनेक ऐसे गुण हैं कि तुम कहीं भी रहो, ईमानदारी से मजे में आराम और इज्जत की जिन्दगी बिता सकते हो। किन्तु तुम्हारी शराब वाली लत बराबर तुम्हें नीचे गिरा रही है, तुम्हें कहीं टिकने नहीं देती। उसी के कारण तुम भले होकर भी इतने बुरे-बुरे काम करने पर उतारू हो जाते हो। जो हो गया वह तो हो ही गया। अब आगे के लिए सावधान हो जाओ! यह दैवी-दण्ड है। इसे समझ कर अब से चेत जाओ।'

पीटर ने सिसकियाँ भरते और आँसू बहाते हुए कहा—'तुम ठीक कहते हो। शराब की लत के कारण ही मुझे इतना कष्ट भोगना पड़ रहा है। आज भी अधिक शराब के कारण ही मैं अपने

आप में न था। भँवर में पड़ने का कारण भी शराब ही है। जिस समय तूफान उठा उस समय मैं अधिक शराब पीने के कारण ठीक से होश में न था। बस, गलती-पर-गलती करता चला गया। उसी का यह फल है। पर अब कसम खाता हूँ कि शराब को हाथ से छुऊँगा ही नहीं; और मैं जनता के सामने अपने सब अपराध स्वीकार कर लूँगा।'

जमशेद ने कहा—'तुम्हारी इस बात से तुम्हारे मालिक मि० वाशिंगटन को बड़ा सदमा पहुँचेगा। वे बड़े ईमानदार, सच्चे, साफ और धर्मभीरु व्यक्ति हैं। यदि उन्हें पता चल गया कि उनके वायुयान वालों ने प्रतिद्वन्दियों के साथ ऐसे जघन्य छल से काम लिया है, ऐसी भारी दुष्टताएँ की हैं, तो वे इसे कदापि सहन न कर सकेंगे। और खासकर जब ये सब बातें जनता के सामने प्रकट हो जायँगी और जनता अनेक अर्थ लगा कर, अनेक रूप में इन बातों को अपनी ओर से पेश करेगी। ससार यह तो मानेगा नहीं कि तुमने अपनी जिम्मेदारी पर यह सब किया है, मि० वाशिंगटन को इस बात की तनिक भी खबर न थी। किन्तु सभी समझेंगे कि मि० वाशिंगटन भी इन सब बातों में शामिल थे। जनता कहेगी कि बाजी जीतने के लिए मि० वाशिंगटन ने तुम लोगों से यह सब कराया था। उस समय मि० वाशिंगटन को अपना जीवन भार हो उठेगा। वे लाख कोशिश करें, किन्तु उनके सार्वजनिक जीवन में भारी धब्बा लग जायगा। और कलंकित जीवन बिताना मि० वाशिंगटन ऐसा महात्मा कदापि सहन न करेगा। अस्तु अब केवल एक ही रास्ता है। इन सब बातों को जनता और मि० वाशिंगटन से गुप्त रखना। इसी में तुम्हारा और तुम्हारे उदार मालिक का कल्याण है। रही हम लोगों की बात, सो जब तक तुम भविष्य में हमें न छेड़ोगे, फिर जब तक हमारा अपकार न करोगे, तब तक हम इन बातों को कभी जबान पर भी न लायँगे।'

जमशेद की इस उदारता, इस दूरदर्शिता, इस क्षमावृत्ति की पीटर कल्पना भी न कर सकता था। वह अब फूट-फूट कर रोने लगा। जमशेद, देव आदि ने उसे समझा-बुझाकर, सान्त्वना देकर शान्त किया। पीटर ने शराब न पीने और जमशेद, देव आदि की किसी प्रकार से बुराई न करने की प्रतिज्ञा की।

इधर जान 'गरुड़' को तेजी मे अड्डे की ओर ले जा रहा था। नक्शे से स्पष्ट था कि अड्डा दूर नहीं है। वहाँ पहुँच कर वे किसी तेज जहाज द्वारा टाम, पाल आदि की खोज करना चाहते थे। कुछ ही देर में उन्हें सामने कुछ छोटे-छोटे द्वीप देख पड़े। नक्शे से निश्चय होगया कि वे गालापागोस द्वीपपुञ्ज के पास पहुँच गये हैं। इन्हीं द्वीपों में प्रायः दो हजार ज्वालामुखी पर्वत एक साथ पाये जाते हैं। उड़ाकों ने उनके ऊपर उड़ते-उड़ते सोचा—जिस समय ये दो हजार ज्वालामुखी एक साथ आग उगलते होंगे उस समय का दृश्य कैसा होगा !!

इन द्वीपों में से पूर्व वाले सान-क्रिस्टोवल नामक द्वीप में उतरना था। जान वायुयान को चक्कर देकर पूर्व की ओर ले गया। एक द्वीप मे बस्ती के कुछ विशेष चिह्न देख पड़े। उस पर जाकर देखा, एक ओर लाल-सफेद झण्डा उड़ रहा है। जान धीरे-धीरे उस स्थान पर 'गरुड़' को उतार ले गया।

अड्डे पर उस द्वीप के आदि-अधिवासी और उनके सरदार ने उड़ाकों का स्वागत किया। सरदार सुशिक्षित, सभ्य, अनुभवी और सज्जन जान पड़ा। उसने फ्रान्सीसी भाषा मे उनसे पूछा कि तूफान से तो विशेष कष्ट नहीं हुआ ? उड़ाकों ने जल्दी-जल्दी कुछ बातें बतला कर उससे 'वायुविजेता' के खोये हुये उड़ाकों को खोजने मे मदद चाही। वह तुरन्त तैयार हो गया।

उसका अपना एक तेज चलने वाला छोटा जहाज तैयार खड़ा था। उडाकों को पेट्रोल आदि देने के लिए भी एक छोटा तेज जहाज पनामा से आया था। इन दोनों जहाजों को लेकर देव, जमशेद आदि टाम, पाल को खोजने चल पड़े। पीटर को सरदार ने अपने मकान पर भेज दिया। 'गरुड़' की देख-रेख के लिए पनामा से आये हुये दो मनुष्य नियुक्त कर दिए गये।

अभी दिन काफी बाकी था। दोनों जहाज लेकर सरदार, देव आदि खोज करने में जुट गये। बड़ी परेशानी के बाद एक तख्ते से लिपटा हुआ क्रास का शरीर मिला। लाइफ-बेल्ट और लकडी के तख्ते के कारण वह जल के ऊपर उतरा सका था। पहले तो देव, जमशेद आदि ने समझा कि उसके प्राण निकल गये हैं। किन्तु गौर से जाँचने पर पता चला कि अभी कुछ-कुछ जीवन शेष है। फौरन उसे जहाज पर ला कर उपचार प्रारम्भ किया गया।

खोज जारी थी। क्रास के मिलने की किसी को आशा न थी। पीटर की बातों से सब को विश्वास हो गया था कि क्रास पहले ही बह गया था, और अब तक तो जल के नीचे या जल-जन्तुओं के पेट में पहुँच गया होगा। किन्तु दैवयोग से उसे लकड़ी के तख्ते का सहारा मिल गया और वह जीवित बच गया।

बड़ी-बड़ी कोशिशों के बाद पाल और टाम भी मिल गये। लाइफ-बेल्ट तथा कुन्दों के सहारे वे भी जल के ऊपर ही अपने को रख सके थे। पर दोनो बेहोश थे। दोनो के बदन सुन्न पड गये थे। जहाज पर उनका भी उपचार शुरू हुआ।

इसके पहले ही वायुविजेता उठाकर जहाज पर रख लिया गया था। सब को लेकर दोनों जहाज अपने स्थान पर लौट आये। 'गरुड़' के उड़ाकों को इस बात की खुशी थी कि उनके द्वारा 'वायुविजेता' के

उड़ाके समुद्र में से खोज कर बचा लिए गये। ये वे ही प्रतिद्वन्दी थे जिन्होंने उन्हें (बचाने वालों को) बीच सागर में मार डालने की चेष्टा की थी, जान लेने में कोई बात उठा न रक्खी थी। क्षमा की पराकाष्ठा थी।

सरदार ने उपचार की सब सामग्री ले ली थी। और उपचार के विशेषज्ञ भी साथ ही थे, जहाज पर तीनों का उचित उपचार होता आया। बन्दरगाह पर पहुँचते-पहुँचते सब को होश आ गया था, सब के बदन ठीक हो गये थे। पर सभी में कमजोरी काफी थी। घन्टों समुद्र में पड़े रहकर लहरों के थपेड़े खाते रहने से उनके अङ्ग-अङ्ग चूर हो गये थे, शीत नस-नस में वेध गया था। किन्तु उपचार, मालिश और औषधियों ने बड़ा परिवर्तन कर दिया था।

द्वीप के बन्दरगाह पर आकर सरदार ने तीनों के लिए डोलियों का प्रबन्ध किया। और सब घोड़ों पर गये। सरदार ने अपने स्थान पर उड़ाकों के स्वागत का अच्छा प्रबन्ध कर रक्खा था। वैसे तो बहुत देर हो गई थी, किन्तु सरदार का मन रखने के लिए उड़ाके उसकी किसी बात को टालना नहीं चाहते थे। बड़े ठाट बाट की दावत शुरू हुई। अनेक प्रकार के अमरीकन भोज्य पदार्थ सामने आये। उस द्वीप के तर्ज के पदार्थों की भी कमी न थी। उड़ाकों ने सरदार तथा उसके बन्धु-बन्धुवों के साथ दिल खोल कर भोजन किया। भोजन के साथ ही एक ओर गायन-वाद्य का भी प्रबन्ध था। उस स्थान के संगीत को उड़ाकों ने बहुत पसन्द किया। भोजन के बाद द्वीप वालों का जातीय नाच-गान चला। इसी में सवेरा हो गया।

इस स्थान से पनामा केवल ६५० मील की दूरी पर था। वायुयान के द्वारा केवल ४-५ घण्टों का सफर। निश्चित समय के अनुसार उन्हें ठीक एक बजे दोपहर तक पनामा के अड्डे पर पहुँचना था।

'गरुड़' की सफाई पनामा से आये हुये आदमी कर चुके थे। उसमें पेट्रोल आदि भी भरा जा चुका था।

देव और जमशेद का विचार था कि यदि 'वायुविजेता' की मरम्मत की जा सकती हो तो उसे ठीक कर लिया जाय और उसे भी एक बार फिर उड़ने का अवसर दिया जाय। इस कारण जहाज पर ही उन लोगों ने उसकी अच्छी तरह से जाँच कर ली थी। वायु के भँवर मे पड़ने और ऊपर से गिरने के कारण उसके अंजर-पजर ढीले जरूर हो गये थे और कुछ इधर-उधर की तीलियाँ-कमानियाँ टूट-मुड़ गई थीं। किन्तु न तो उसके इञ्जिन ही खराब हुये थे और न कल-पुरजे ही बेकार हुये थे। जिस समय वह ऊपर से गिरा था उस समय नीचे से उठने वाले हवा के झोको ने उसे बराबर इस तरह सभाला था कि गिरते-गिरते उसे बराबर हवा के झोंकों का सहारा मिलता गया था। मानो कोई नीचे से हाथ लगा-लगाकर उसे बीच-बीच में थाम्ह लेता हो। इस से गिरने की चोट कम बैठी। उसका अगला हिस्सा पिछले हिस्से से एक प्रकार से अलग ही था, किन्तु कुछ तार-बन्धनों के बदलने से दोनों हिस्से जुड़ सकते थे। मेहनत करने पर कुछ घन्टो मे ही वह ६५० मील की यात्रा करने लायक बना लिया जा सकता था। इन सब बातों को पहले से ही देव और जमशेद तयकर चुके थे। द्वीप में आते ही उन्होंने दो-तीन मिस्त्री सरदार से लेकर और पनामा से आये हुये जहाजवालों को समझा-बुझाकर 'वायुविजेता' की मरम्मत शुरू करा दी थी।

भोजन-गायन से छुट्टी पाकर वे भी मरम्मत में जुट गये। रात भर के जागरण और दिन-रात के अविश्रान्त परिश्रम भी उन्हें प्रति-द्वन्दियों की सहायता के कार्य से न रोक सके। आठ बजते-बजते सब ने मिल कर 'वायुविजेता' को फिर उड़ने लायक बना डाला। सबसे पहले जमशेद और देव उस पर सवार हो कर उड़े। उन्होंने मैदान में

दौड़ाकर उसे धीरे-धीरे ऊपर उठाया। पहले वे उसे बारह हजार फीट की उँचाई तक ले गये। फिर नीचे उतार लाये और एक हजार फीट पर रखकर कई चक्कर मैदान के काटे। फिर वे उसे तीन हज़ार फीट पर ले गये और उन्होंने द्वीप-पुंज के चक्कर काटने शुरू किये। वे उसे देर तक १७५ मील की गति से चलाते रहे। अन्त मे जब उन्हें विश्वास हो गया कि वह ६५० मील की यात्रा मजे में कर लेगा तब वे उसे नीचे उतार लाये।

जान, साम, सरदार, पीटर, क्रास, पाल, टाम आदि सभी उत्सुक नेत्रों से उनके इस कार्य को देख रहे थे। उनके नीचे आने पर पीटर और क्रास ने उन्हें अपने हृदय से लगा लिया। पीटर तो इतना प्रसन्न था कि उसके मुँह से बात तक न निकलती थी। बड़ी कठिनाई से उसने अपनी कृतज्ञता प्रकट की।

साढे आठ के बाद उड़ाकों ने सरदार से विदा ली। पीटर, क्रास आदि शायद ज्यादा मेहनत न कर सके इस कारण उनकी राय लेकर देव और जमशेद ने अपने साथी जान को उनके साथ 'वायुविजेता' पर कर दिया। यह सब हो जाने पर दोनों यान एक साथ मैदान मे दौड़ाये गये और एक ही साथ ज़मीन पर से ऊपर आसमान मे उठाये गये।

देव पहले से सतर्क था, इस कारण एक हज़ार फीट की उँचाई पर पहुँचने के पहले ही उसने 'गरुड' को पनामा की ओर मोड़ दिया। इधर 'वायुविजेता' वाले भी असावधान न थे। उन्होंने भी अपने यान को पनामा की ओर बढाया। किन्तु दोनों यानों की चाल में काफी फर्क था। लाख चेष्टा करने पर भी 'वायुविजेता' 'गरुड़' को न पा सकता था। हेलियम-गैस के मिल जाने से 'गरुड़' में इस समय बिजली की-सी गति आ गई थी। देखते-देखते दोनों यान उस द्वीप को पीछे छोड़ बहुत आगे बढ गये।

'गरुड़' अपनी पूरी तेजी पर था। वह सन्-सनाता हुआ जा रहा था। देव समय के पहले ही पहुँचने की धुन मे था। कुछ समय बाद ही बे-तार-के-तार से उन लोगों ने पनामा से बाते करनी शुरू कीं। इसके पहले रात में ही 'वायुविजेता' तथा उसके आरोहियों की दशा की सूचना दी जा चुकी थी। चलने के पहले ही यह भी सूचना दे दी गई थी कि 'वायुविजेता' ठीक कर लिया गया है और दोनों वयुयान साथ-साथ उड़कर पनामा के लिए रवाना हो रहे हैं। और सब बातों के अन्त में अचानक जमशेद ने पनामा का ठीक समय पूछा। जो जवाब मिला उससे उसके होश उड गये। उनके और पनामा के समय में पौन घण्टे का अन्तर था। उनकी घड़ी पौन घण्टा पीछे थी।

एक तो वैसे ही समय बहुत कम रह गया था, अब यह पौन घन्टा और कम हो गया। एक मिनट भी पीछे पहुँचने से पुरस्कार से हाथ धोना पड़ेगा। तीनों के दिल बैठ गये। तनिक-सी असावधानी के कारण इतना परिश्रम करना, इतना जोखिम उठाना एक प्रकार से बेकार हुआ जा रहा था।

कुछ देर तीनों बहुत बेचैन रहे। किन्तु अन्त में देव ने दृढता पूर्वक कहा—'मैं तो इस प्रकार इनाम जाने न दूँगा।'

जमशेद—'तो करोगे क्या? समय का फेर है!'

देव—'समय को ठिकाने पर लाना होगा। मैं प्राणों की बाजी लगा देना चाहता हूँ।'

जमशेद और साम उनकी ओर उत्कण्ठा से देखने लगे। देव ने मुस्करा कर यान की चाल तेज की। प्रति क्षण गति बढती ही गई। डेढ सौ मील, एक सौ साठ, एक सौ सत्तर, एक सौ अस्सी, दो सौ, सवा दो सौ, ढाई सौ......! दोनों इंजिन भी एक साथ चालू कर दिये गये। गति इतनी तीव्र इसके पहले कभी न की गई थी। 'गरुड़' बिजली को मात कर रहा था। तीनों के दिल धक-धक कर रहे थे। यदि कुछ गड़बड़ हुई तो . . .

---

(१७)

कंगाल उड़ाका

प्रयाग में प्रदर्शनी हो रही थी। लाखों की संख्या में लोग उसे देखने के लिए दूर-दूर से आरहे थे। सन् १६१० की यह प्रदर्शनी अपना एक विशेष ऐतिहासिक महत्व रखती है।

गरीब माँ-बाप के साधन-हीन पुत्र देवू ने घर से भागकर प्रयाग पहुँचने पर जो सबसे पहले आश्चर्य में डाल देने वाला पदार्थ देखा वह था मेले के ऊपर उड़ने वाला वायुयान। इसके पहले उसने वायुयान कभी न देखा था। वह ऐसे किसी यान की बात भी न सोच सकता था, जो १६१० में मनुष्यों को लेकर हवा में उड़ता फिरे। किस्से-कहानियो में उसने उड़न-खटोलो, उड़ने वाले काठ के घोड़ों, उड़ान भरने वाली दरीं-चटाइयों का जिक्र जरूर सुना था। रामायण में पुष्पक विमान की कथा कई बार पढी थी। किन्तु एक तो थी देवताओ की बात, और दूसरी थी कहानियों की गपोड़बाजी। आज प्रयाग आकर उसने अपने चर्म चक्षुओ से उन बातो को प्रयक्ष होते देखा। वायुयान सामने उड़ रहा था। उसने कई वार आँखे मलीं, अनेक बार सर को खुजलाया, बारबार अपने आसपास देखा, तो भी सब बातें उसे यथार्थ देख पड़ीं। उसने खूब विचार कर, अच्छी तरह से सोचकर निश्चय किया कि वह जाग रहा है, उसके होश-हवाश दुरुस्त हैं।

वायुयान आसमान में बराबर चक्कर काट रहा था। वह अश्चर्य-चकित हो निर्निमेष दृष्टि से उसी की ओर ताकने लगा।

देर तक आसमान में चक्कर काटने के बाद वायुयान एक ओर मैदान में उतर गया। देव को होश आया। गरीब, अकिंचन, एक दम कंगाल होने पर भी उसने किसी-न-किसी तरह कुछ पढ-लिख लिया था। पैसे-दो-पैसे की दवा न मिलने के कारण ही उसके पिता को अपनी जीवन-लीला समाप्त करनी पडी थी। दाने-दाने के लिए बिल-बिलाते रह कर भी उसने अपने गाँव के पास के स्कूल मे परीक्षाएँ पास की थीं, और धनियों, महाजनों जमींदार के लडकों के मुकाबले में सदा उसे अधिक नम्बर मिले थे, वह सदा प्रथम आया था। किताबे न खरीद सकने पर भी कोर्स के बाहर की भी बहुत-सी बातों का उसे अच्छा-खासा ज्ञान था। केवल प्रतिभा और लगन, दृढता और अदम्य उत्साह के बल पर ही उसने असम्भव को सम्भव कर दिखाया था।

उसने इसी वर्ष मिडिल की परीक्षा पास की थी प्रथम श्रेणी में। उसे गाँव के मदरसे में ही ५-६ रुपये की मास्टरी मिल गई थी। किन्तु इससे उसे सन्तोष न था। वह और आगे बढना चाहता था, और अधिक पढना चाहता था। पर साधन न थे। पेट ने, तन ने, किसी भी तरह पिण्ड न छोड़ने वाली प्रतिदिन, प्रतिक्षण की आवश्यकताओं ने उसे उसी गाँव में नौकरी कर लेने के लिए विवश कर दिया था। विधवा माता के कारण वह उस गाँव में, उस तुच्छ मास्टरी के पद पर अटक रहा था। पर मन तो और ही उधेड़-बुन में लगा रहता था।

उने प्रयाग की विचित्र प्रदर्शनी के समाचार मिले। जाने-आने वालों ने ऐसे-ऐसे विवरण सुनाये कि वह बेचैन हो उठा। पास में पैसे न थे। और भी अनेक अड़चने थीं। पर उसके उत्साह, उसके दृढनिश्चय के सामने कोई बाधा आड़े न आ सकी। वह एक कुरता-धोती पहने, नगे पाँवों गाँव से चल पड़ा। प्रयाग सत्तर मील पड़ता

था। उसने इस ऊबड़-खाबड़, जङ्गली रास्ते को पैदल ही तय कर लिया। पाँचवे दिन दस बजते-बजते वह त्रिवेणी में स्नान कर रहा था। प्रदर्शनी का मैदान सामने था। और आसमान पर था वायुयान।

देवू वायुयान देखना चाहता था। किन्तु नजदीक से, उसे छूकर; उसके विभिन्न हिस्सो को जाँच कर, ठोंक-बजा कर, उसके आगे-पीछे घूमकर, हो सके तो उसके कल-पुरजो को चालू करके, उस पर बैठ कर भी।

पैसा-प्रधान इस बीसवीं शताब्दी में एक वे-पैसे वाले के लिए यह तो सरल सभव न था और फिर सन् १६१० में, जब वायुयान एक अजीब वस्तु थी, नूतनतम आविष्कारों का अन्यतम साकार-स्वरूप मात्र।

अनेक तीर्थस्थानों पर जो दर्शक, जो यात्री अधिक रुपये खर्च करने के लिए तैयार हो जाते हैं, वे मन्दिर के पवित्रतम भाग में जाकर देवता को, मूर्ति को अपने हाथो से छू सकते हैं, उसकी पूजा-अर्चा पास से जाकर अपने हाथो कर सकते हैं। किन्तु जो केवल दो-चार ही पैसे चढ़ा सकते हैं, उन्हें मन्दिर के द्वार पर, कठघरे के बाहर, भीड़ के साथ रहना पड़ता है, उन्हें केवल दूर से दर्शन मात्र करने का अधिकार भर रहता है। वे धनपूत नहीं होते, इस कारण मन्दिर के अन्दर नहीं जा सकते, देवता को छू नहीं सकते, उसकी सागोपाग पूजा-अर्चा के अधिकारी नहीं समझे जाते। पूजा तक के लिए, पवित्रता के निमित्त धन इतना आवश्यक हो उठा है !!

शक्ति ही के द्वारा सृष्टि का सचालन हो रहा है। पैसा की शक्ति अतुलितबलवाली होती है। पैसे वाला प्रायः सर्व-शक्तिमान-सा हो उठता है। जल, थल, आकाश, सभी स्थानों पर उसका प्रभुत्व काम करता है। जब देवता तक के पास तक पहुँचने में पैसा इतनी सहूलियत

कर देता है, जब देवता का द्वार ही नहीं, देवता का आकार भी पैसे के बल पर बिना परिश्रम-प्रयत्न के खुल जाता है, तब वायुयान की बात ही क्या ! वह भी देव-वाहन ही तो हैं !!

देवू को पता चला कि जो रकम खर्च कर सकते हैं, केवल वे ही वायुयान के पास तक फटने पाते हैं। केवल पैसा देकर ही वायुयान को पास से देखा जा सकता है, छुआ और जाँचा जा सकता है, उसके कल-पुर्जों का मुलाहिजा किया जा सकता है, उसकी छाती पर सवारी गाँठ कर गगन मे मुक्त-विहार किया जा सकता है। बीसवी सदी में विज्ञान के बल पर वायु पर विजय प्राप्त की गई है, और पैसे के बल पर ही वायुयान पर विहार किया जा सकता है। अन्य प्रकार से नहीं।

उसे पहले तो बड़ी निराशा हुई। टेंट में तो कुछ था नही। भावुकता के फेर में पड़कर वह घर से तो पैरों के सहारे सत्तर मील तय कर यहाँ तक आ सका था। किन्तु यहाँ तो संसार ही कुछ निराला देख पड़ा। पैसे के बिना कोई बात न पूछता था, कोई काम ही न हो सकता था। प्रदर्शनी के अन्दर पैर रखने के पहले ही टिकट के लिए पैसे चाहिये ! और जन्म से ही पैसे से उसका वैसा विशेष परिचय नहीं रह सका था। तब क्या किया जाय ? घर लौटा जाय ?

वह चक्कर में पड़ गया। इतनी दूर आकर भी विना प्रदर्शनी देखे, बिना वायुयान को जाँचे-समझे, उलटे पैरों घर लौट जाना बड़ी लज्जा की बात होगी, बडे दुःख का प्रसङ्ग होगा।

किन्तु किया क्या जाय ! टिकटों के लिए पैसे मिलें-तो-मिलें कहाँ से !

उसी स्थान पर एक मिठाई की दूकान थी। उस पर बड़ी भीड़ थी। सौदा देने, पानी पिलाने, ऊपर के छोटे-मोटे काम करने के

लिए कई आदमी रक्खे गये थे। किन्तु काम ज्यादा था. और भी आदमियों की जरूरत थी। दूकान के पास देवू देर से खड़ा था। उसी ओर दूकान का एक आदमी किसी काम से आया। वह पहले भी कई बार उस ओर आया था और उसने देवू को उस स्थान पर देखा था। इस बार उसने गौर से उसकी ओर देखते हुए कहा—'मिठाई चाहिए ? फलहारी ?'

देवू ने दैन्य झलकाते हुए, भरे गले से कहा—'इतने पैसे कहाँ कि मिठाई खा सकूँ ! भला दो पैसे भी होते तो कुछ चना-चबैना लेकर पेट की ज्वाला शान्त न करता ?'

उस आदमी ने देवू को सर-से-पैर तक घूर कर देखा। फिर कुछ सकुचाते हुए कहा—'काम करोगे ? पैसा मिलेगा। काम कुछ कठिन भी नहीं है।'

देवू का चेहरा जरा तमतमा आया। वह उस संस्कृति में पला था जिसमें काम करना छोटी जाति का सूचक माना जाता है। गाँवों में रूढ़ियाँ, प्रथाएँ आज भी प्रबलतर हैं। उच्चकुल में, ब्राह्मण-वंश में उसका जन्म हुआ था। नीच जाति वालों के साथ, उन्हीं का-सा काम करना उसके लिए उचित न था। उसने देखा था कि उसके पिता ने वंश के गौरव की रक्षा के लिए जीवन भर नाना प्रकार के कष्ट सहते रहने पर भी सेवा-वृत्ति से अपने कुल को कलंकित न होने दिया था। भिक्षा भले ही माँग ली जाय, उधार भले ही ले लिया जाय, दूसरे किसी उपाय से चाहे कुछ प्राप्त कर लिया जाय, पर सेवा-वृत्ति नहीं करनी चाहिए, उससे कुल की मर्यादा नष्ट हो जाती है, यही प्रथा परंपरा से चली आ रही है, यही मर्यादा शास्त्रों ने बाँध दी है, सदा सर्वदा से यही होता चला आया है, बड़े-बूढ़े इसी की शिक्षा देना सबसे पहला कर्तव्य, सर्व-श्रेष्ठ धर्म समझते हैं। ब्राह्मण होकर देवू छोटी जाति वालों के साथ कार्य करे !

किन्तु पैसे के अभाव ने उसके इन उच्चतम भावों को डावाँडोल कर दिया था। स्कूल की शिक्षा ने, प्रतिदिन के संघर्षमय जीवन ने, रोटी के प्रश्न ने उसके वंश-गौरव सम्बन्धी सनातन धर्म वाले इस पुनीत विश्वास को जड़-मूल से हिला दिया था। उसके मन में बराबर यही प्रश्न उठता कि पिता ने कुल की मर्यादा के नाम पर जो अकर्मण्य अथच कष्टपूर्ण जीवन व्यतीत किया, क्या वह गौरव पूर्ण कहा जा सकता है ? उन्हें दाने-दाने के लिए तरस- तरस कर दिन काटने पडे थे। पैसों के न रहने से उन्हें छोटे-बडों की उपेक्षा का पात्र बनना पड़ा था। बात-बात में उनका अपमान हुआ था। पैसेवाले छोटे लोगों का जहाँ बेहद आदर-सत्कार हुआ था, वहाँ उनसे किसी ने बात तक न पूछी थी। उनका अनेक अवसरों पर अनादर हुआ था। क्या यही कुल का गौरव माना जाना चाहिए ? क्या बड़प्पन की यह झूठी ठसक नहीं है ? अपने मन में, अपने घर में चाहे जितना बड़ा बना जाय, किन्तु पैसे के बिना समाज में सम्मान, गौरव किसे मिलता है ? बनावटी बड़प्पन से कहीं काम चल सकता है ? बड़प्पन तो वही है जो दूसरों के द्वारा प्राप्त हो। कुल का गौरव तभी माना जायगा, जब समाज उसे स्वीकार करे।

ये विचार उसके मस्तिष्क में बिजली की तरह कौंध गये। वह दूसरे ही क्षण उस मनुष्य से बोला—'काम क्या करना पड़ेगा ? पैसे कितने मिलेंगे !'

उस आदमी ने देवू को तनिक रुक कर यह पूछते देख, समझ लिया कि यह नया रङ्गरूट है, इसने शहर में कहीं अभी तक काम नहीं किया है। उसने मुस्कराकर कहा—'काम तो देख ही रहे हो, मिठाई बाँटना और जल-दान करना। पैसे पूरे बीस मिलेंगे। ठीक से काम करोगे तो बीच-बीच में मालिक मुँह भी मीठा कराते रहेंगे।'

उसी स्थान पर एक महाशय खड़े थे। वे समझ गये कि देवू के पास पैसा नहीं है, पर वह काम से हिचकिता है। उन्होंने देवू को

समझाया कि काम करना बुरा नहीं है। मेहनत से कमाया हुआ पैसा ही मनुष्य को फलता है परिश्रम ही मनुष्य को बढाता है, उसे गौरव प्रदान करता है।

देवू पाँच आना रोज पर उस दूकान पर नौकर हो गया। पानी पिलाता, चीजें उठाकर देता, कड़ाह, थाल आदि साफ करता और पैसे मिलते ही वह प्रदर्शनी देखता, विचित्र-विचित्र वस्तुओं से अपने कुतूहल को शान्त करता। उसकी आँखें खुल चुकी थीं। एक सप्ताह बीतते-न-बीतते उसने प्रदर्शनी के अन्दर ही एक काम ढूँढ लिया और दूसरे सप्ताह का अन्त होते-न-होते वह हवाई-जहाज के अड्डे पर ही काम करने लगा। जब काम ही करना है तो ऐसा क्यों न किया जाय जिससे उद्देश्य की सिद्धि हो। अब उसे बहुत पास से वायुयान को देखने-समझने के अवसर मिलने लगे। किन्तु वह उस पर एक बार भी आकाश में न जा सका।

प्रदर्शनी समाप्त हुई। देवू भी अपने गाँव को लौट गया। किन्तु उसका मन वहाँ न लगा। अपनी माता को समझा-बुझाकर वह फिर प्रयाग चला आया। उसे काम चाहिये था। भटकता हुआ वह एक कालेज के हास्टल में जा पहुँचा। वहाँ एक रसोइये की आवश्यकता थी। वह भोजन बनाने-खिलाने का काम करने लगा। यहाँ उसे पढ़े-लिखे लोगों के पास तक पहुँचने का अवसर मिल गया। दूसरे-दूसरे महराज तो फुरसत के समय विद्यार्थियों को झाँसा देकर भोजन की सामग्री में कुछ बचत कर पैसे जमा करने की उधेड़-बुन में लगे रहते, पर देवू पढने में अपना सारा समय लगाता। उसे भोजन तो मिलता ही, साथ ही दस रुपये ऊपर से। इनमें मे आधे से ज्यादा वह अपनी माता के पास भेज देता। उसके काम से, उसके नम्रस्वभाव से उसके मेस वाले बहुत खुश थे। समय-समय पर उसे कपड़े, पैसे आदि भी इनाम् के रूप में मिल जाते।

हास्टल में उसने चार वर्ष बिता दिये। इन चार वर्षों में उसने इतनी योग्यता प्राप्त कर ली थी कि वह मेट्रिक की परीक्षा में बैठा और पास हो गया। इसी बीच में उसे अमरीका से लौटे हुए कुछ भारतवासियों की लिखी उन पुस्तकों को पढने का मौका मिला, जिनमें वहाँ के कष्टपूर्ण, संघर्षमय, श्रमसंकुलित विद्यार्थी-जीवन पर प्रकाश डाला गया था। इनका उस पर बड़ा प्रभाव पड़ा। उसने देखा, अमरीका में गरीब-से-गरीब बालक भी परिश्रम के द्वारा बढ सकता है, उच्च-से-उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकता है, बड़े-से-बड़े पद पर पहुँच सकता है। वह भी अमरीका जाने के स्वप्न देखने लगा।

किन्तु १९१४ मे यूरोपीय महायुद्ध छिड़ गया। अमरीका जाने की उसकी लालसा यों ही रह गई। युद्ध के लिए सैनिकों की भरती शुरू हुई। देवू की माता का देहान्त हो चुका था। उसे अब कोई बाँध कर रखने वाला न रह गया था। उसने विभिन्न देशों को देखने और हवाई-जहाज का चलाना सीखने के उद्देश्य से फौज मे अपना नाम लिखा लिया। यथा समय अपनी सेना के साथ वह फ्रांस में जा पहुँचा। अनेक अवसरों पर उसने अपने साहस और तीव्र बुद्धि के प्रभाव से शत्रु एव सहयोगी दोनों को ही दग कर दिया। उसके पद की वृद्धि हुई। उसे अनेक प्रशसा-पत्र एव सम्मान सूचक पदक प्रदान किये गये। युद्ध के समाप्त होने पर उसने हवाई बेडे मे जाने का प्रयत्न किया। किन्तु उसमें उसे सफलता न मिल सकी। अन्त मे खिन्न होकर वह अमरीका चला गया।

अमरीका मे उसे बड़ी-बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। किन्तु वह घबराया नहीं। वह अपने अथक परिश्रम और अदम्य उत्साह के बल पर बराबर उन्नति करता चला गया। अन्त मे बड़ी-बड़ी कोशिशों के बाद उसने वायुयान के सचालन का कार्य सीख ही लिया।

एक कंगाल भारतवासी वयुयान-संचालक हो गया। वायुयान-संचालक के रूप में वह डाक ले जाने वाली एक कम्पनी में भरती हो गया। वहाँ उसने कई वर्ष सफलतापूर्वक कार्य किया। उसके कार्य से सभी छोटे-बड़े प्रसन्न थे। किन्तु कुछ समय बाद सरकारी आज्ञा से खर्च घटाने के विचार से हवाई-डाक के कुछ अड्डे तोड़ दिये गये, नौकरों में कमी की गई। फलतः देव को अन्य अनेक कर्मचारियों के साथ नौकरी से अलग होना पड़ा। उसके ऊपर वाले पदाधिकारी उसके काम से इतने प्रसन्न थे, उन्हें उसकी योग्यता-कुशलता का इतना भरोसा था, वे उसके कौशल पर इतने मुग्ध थे कि वे एक दूसरे सचालक को निकाल कर उसके स्थान पर उसे रख लेने को तैयार हो गये। किन्तु देव ऐसा उदाराशय, स्वाभिमानी, कर्मठ व्यक्ति इस बात को स्वीकार न कर सका। वह दूसरे की रोज़ी छीन कर अपना उल्लू सीधा नहीं करना चाहता था। फलतः उसे कुछ समय के लिए बेकार हो जाना पड़ा। कगाल उड़ाके के सामने फिर पैसे का प्रश्न उठ खड़ा हुआ।



(१८)

वायुयान का बच्चा

आस्तीनें चढ़ाये देव काम में जुठा था। उसके सामने ६: फुट लम्बा एक वायुयान था। मानो एक सुन्दर खिलौना हो, वायुयान का नन्हा-सा बच्चा। उसके पंख, उसकी आकृति, उसके आकार-प्रकार सभी एक बड़े पक्षी के समान ही थे। देव उसी को पूर्ण करने में तल्लीन था। उसे दीन-दुनिया की खबर न थी। इसी समय किसी ने उसके कमरे के द्वार पर आघात किया। देव ने झुँझला कर द्वार खोल बाहर झाँका। देखा, एक सुन्दर, सुडौल, स्वस्थ नवयुवक मुस्कराता हुआ सामने खड़ा है। उसके हाथो में अनेक पत्र हैं। देव के माथे पर पड़ी हुई रेखाएँ पल भर में दूर हो गई। उसने लपक कर युवक का हाथ अपने हाथ में ले उसे अन्दर की ओर खींचते हुए कहा—'आओ जमशेद! खूब आये।'

जमशेद ने तनिक तेज नजर से देव की ओर देखते हुए कहा—'मै शायद विघ्न डाल रहा हूँ। देख पड़ता है, तुम इस समय बहुत व्यस्त हो। किसी का आना इस समय तुम्हें पसन्द नही।'

देव ने जमशेद को खीच कर अन्दर ले जाते हुए हँस कर कहा—'विघ्न पड़ता किसी दूसरे के आने से। तुमसे तो मुझे विशेष रूप से सहायता ही मिल रही है। हाँ! मैं किसी दूसरे का आना इस समय बिल्कुल पसन्द न करूँगा।'

यह कहते-कहते देव ने जमशेद को अन्दर ला कर दरवाजा बन्द कर दिया। खिलौना-वायुयान के सामने पहुँच जमशेद देर तक उसे

गौर से देखता रहा। आश्चर्यमय, प्रशंसासूचक भाव उसके चेहरे पर खेल रहे थे। कुछ देर तक ध्यान से उसे देखने के बाद उसने देव के कंधे पर हाथ रख कर कहा—'मित्र!! यदि कहीं इस नमूने पर तुम बड़ा वायुयान तैयार कर सके तो तुम्हारी यह बेकारी तुम्हारे, और वायुयान उत्पान दोनो के लिए ही वरदान सिद्ध होगी। तुमने जिन नवीन बातें का समावेश वायुयान के इस बच्चे में किया है, उनसे वायुयान के उत्पादन और सचालन दोनों में ही भारी क्रान्ति हो जायगी। धारा ही बदल जायगी।'

देव ने मुस्कराते हुए लम्बी साँस लेकर कहा—'देखें क्या होता है मेरे पास इतने रुपये नहीं हैं कि बड़ा वायुयान बना कर लोगो को दिखला सकूँ। और रुपयेवालों को शायद उन नवीन परिवर्तनों पर विश्वास न आये। बैठे-ठाले कुछ करते रहना उचित था, इसी कारण तुम्हारे प्रोत्साहन को पाकर मैं इसमें लगा हूँ। पर कभी-कभी जी घबरा उठता है। आज के इस ससार मे रुपयों के अभाव में मनुष्य कुछ कर हा नहीं सकता।'

जमशेद ने उसे समझाते हुये कहा—'रुपया जरूरी न हो, सो बात नहीं हैं, पर एकमात्र रुपया ही तो सब कुछ नहीं है। बुद्धि भी जरूरी है। कितने ऐसे रुपयेवाले पड़े हैं, जिन्हें कोई नहीं पूछता, और कितने बिना रुपयेवाले हैं, जो पूजे जाते हैं, ससार जिनके इशारे पर नाचता है। बुद्धि और रुपया दोनों ही जरूरी हैं। तुम्हारे पास बुद्धि है, कौशल है। रुपया मिलकर रहेगा। कोई-न-कोई रुपये वाला अवश्य सहयोग करेगा।'

देव—'देखें कब तक रुपये वाला मिलता है।'

जमशेद ने तानक गम्भीर होकर कहा—'वैसे तो मैं अपने पिता को राजी कर सकता हूँ। पर अभी मैं उनसे कुछ कहना नहीं चाहता पहले एक बार उन्हें इस नमूने को देख लेने दो।'

देव ने जमशेद की बगल से अखबारों का पुलिन्दा अपने हाथ में लेते हुये कहा—'आज इतने अखबार क्यों बटोर लाये ?'

जमशेद ने मुस्कराते हुये कहा—'मै तुम्हारी बातों में और तुम्हारे अनोखे वायुयान के प्रभाव में पड़ कर असली बात ही भूल गया था। आज के अखबारों मे तुम्हारे लाभ की एक खास बात है। इसीसे जितने मिले सभी लेता चला आया हूँ।'

देव ने अखबारों को बिना खोले ही पूछा—क्या खास बात है ? क्या किसी कम्पनी को वायुयान-सचालक की आवश्यकता है ?'

जमशेद—'तुम्हारे ऐसे व्यक्ति के लिए नौकरी ही तो सब कुछ नहीं है।'

देव—'वर्तमान स्थिति में तो मेरे लिए नौकरी ही सब से अधिक जरूरी है। प्रतिदिन के खर्च की झंझटों से मुक्त होने पर ही मेरा मस्तिष्क शान्त होकर ठिकाने से वायुयान के सुधार में लग सकेगा।'

जमशेद ने कहा—'जरा देखो तो। किसी नौकरी या इसी प्रकार की बन्धन वाली बात से कहीं अधिक उत्तम योजना है।'

जमशेद के कहने से देव ने पत्रों को खोलकर देखा। देखा सभी अमरीकन पत्रों में सनसनी पैदा कर देने वाला एक समाचार छपा है। सयुक्त-राष्ट्र अमरीका के 'वायु-विजयी-दल' ने एक दौड़ का आयोजन किया है। दौड़ दुनिया की, यानी २५००० मील की है। संसार के विभिन्न देशों के सभी 'वायु-विहार-प्रेमियों' तथा 'वायु-विजेता-दलों' ने उसमें योग दिया है। उद्देश्य है 'वायुयानों' और 'वायु-विहार' की ओर जनता को अधिक-से-अधिक आकर्षित करना। इस दौड़ में सम्मिलित होने वाले की आयु इक्कीस वर्ष से कम न हो, वह दो सौ डालर (६०० रुपये) जमा करे; अपने वायुयान को काम में लाये,

वायुयान किसी भी प्रकार और आकार का हो सकता है, उड़ाका अपने साथ जितने भी चाहे अपने सहायक रख सकता है; यदि दौड़ का तीन-चौथाई रास्ता वायुयान द्वारा आकाश-मार्ग से तय कर लिया जाय तो बाद में या बीच में शेष एक चौथाई मार्ग रेल, जहाज आदि किसी भी सवारी के द्वारा तय किया जा सकता है, यूरोप, अमरीका एशिया, अफ्रीका इन चार महाद्वीपों में से प्रत्येक महाद्वीप में कम-से-कम एक दिन अवश्य ही ठहरना चाहिये, अटलाँटिक और पैसिफिक दोनों महासागरों को पार करना चाहिए, किसी एक खास रास्ते का कोई प्रतिबन्ध नहीं है, प्रत्येक यात्री उपरोक्त शर्तों का पालन करता हुआ किसी भी मार्ग से दौड़ पूरी कर सकता है। विज्ञप्ति का आशय यही था।

देव जब तक पढता रहा, तब तक जमशेद गौर से उसके चेहरे के भावों को पढने की कोशिश करता रहा। उसने देखा, दौड़ की सूचना से पहले तो देव का चेहरा कुछ दमकने लगा था किन्तु बाद में उस पर उदासी-सी छा गई। समाचार-पत्रों को उलट-पुलट कर देव ने एक ओर रख दिया और वह अपने खिलौना-वायुयान की ओर निर्निमेष दृष्टि से देखने लगा। किन्तु जमशेद को मालूम हुआ कि देव की आँखें नमूना-वायुयान पर लगी हुई तो ज़रूर हैं, किन्तु कल्पना-लोक में जाकर वे कुछ और ही दृश्य देख रही हैं। मानो जागता हुआ भी देव अजीब सपने देख रहा है। उसने देव के कंधे को पकड़ कर जोर से हिलाते हुए कहा—'क्या सोच रहे हो ? कैसी रहेगी यह दौड़ ?'

देव ने चौंक कर अन्यमनस्क भाव से उत्तर दिया—'अच्छी रहेगी। संसार भर में चर्चा होगी, धूम मच जायगी। जीतने वाले को पचास हजार डालर (डेढ लाख रुपये) का पुरस्कार मिलेगा। जीवन ही बदल जायगा।'

जमशेद ने देखा, देव को कुछ आघात-सा लग रहा है। उसने सरल भाव से कहा—'तुम भी इसमें सम्मिलित क्यों नही हो जाते ? एक बार ऐसे भी भाग्य की परीक्षा कर लो !'

देव ठठाकर हँसते हुए बोला—'खूब कहा !'

जमशेद ने तनिक आश्चर्य दिखलाते हुए पूछा—'इसमें तो किसी भी राष्ट्र या देश की कैद नहीं है ! सभी सम्मिलित हो सकते हैं ? तुम अनुभवी भी हो, साहसी और चतुर भी।'

देव—'पर पैसेवाला तो नहीं हूँ। पहले जमा करने के लिए खासी अच्छी रकम जो चाहिए।'

छुटते ही जमशेद ने कहा—'वह जमा हो जायगी।'

देव ने उसकी ओर कृतज्ञता भरी दृष्टि से देखते हुए कहा—'धन्यवाद। किन्तु वायुयान भी तो चाहिए ! उसका प्रबन्ध मैं कैसे करूँगा ?'

जमशेद तनिक सोच में पड़ गया। एक मिनट बाद बोला—'शायद पिताजी मान जायँ ? पर ••।'

देव—'मि० मेहता को मैं इस झमेले में डालना नहीं चाहता। मुझे ऐसे-वैसे वायुयान पर पूरा भरोसा नहीं है। और किसी उच्च कोटि के वायुयान को खरिदवाकर इस दौड़ के जोखिम में डालना मैं उचित नहीं समझता। मैं अपने इस खिलौने को पूरा कर लूँ तब फिर देखा जायगा।' यह कह वह हसरत भरी नजरों से अपने खिलौना-वायुयान को देखने लगा।

जमशेद भी उसी को गौर से देखते हुए बोला—'मैं भी पिताजी पर इस समय ज्यादा जोर नही डालना चाहता। वे इस ओर झुकेंगे जरूर। पर तुम्हारे कौशल को जाँच-समझ लेने के बाद ही।'

---

(१६)

खिलौना की परीक्षा : चमत्कार

अमरीका के संघर्षमय जीवन में देव का परिचय जमशेद से हो गया था। जमशेद एक साहसी, धनी पारसी का पुत्र था। उसके पिता मि० मेहता बम्बई से एक जहाज के साथ अमरीका भाग आये थे और निरन्तर परिश्रम करते-करते उन्होंने न्यूयार्क नगर में लाखों का कारबार खड़ा कर लिया था। इस समय न्यूयार्क नगर से 'विश्व-बन्धु' नामक उनका एक दैनिक पत्र प्रकाशित हो रहा था। उस पत्र के कारण मि० मेहता को धन और मान दोनों की प्राप्ति हो रही थी।

अमरीका आने पर देव काम की तलाश में 'विश्य-बन्धु' के दफ्तर में गया था। उसे वहाँ छोटा-मोटा काम भी मिला था। उसी स्थान पर काम करते समय देव ने एक छोटा-सा नमूने का मामूली वायुयान बनाया था। उसे जमशेद और उसकी छोटी बहन नरगिस ने बेहद पसन्द किया था तभी देव और जमशेद में परिचय हुआ। जमशेद की रुचि भी वायुयान और बिजली के काम की ओर थी। पहले तो उसके पिता उसे अपने पत्र के काम में लगाना चाहते थे, किन्तु जब उन्हें विश्वास हो गया कि उनके पुत्र का मन उस काम में नहीं लगता, तब उन्होंने अपने विचार बदल दिये। वे जमशेद को उसकी रुचि के काम में पारगत करने पर तुल गये। जमशेद अपनी रुचि के अनुरूप ही शिक्षा प्राप्त करने लगा। देव की योग्यता-कुशलता भी मि० मेहता से छिपी न रही। विदेश में एक साहसी भारतीय नवयुवक को इस प्रकार डट कर संघर्ष करते देख, उन्हें अपने पहले दिन याद आ गये। वे उसे

हर प्रकार से सहायता देने लगे। उन्हीं के उद्योग से देव वायुयान-सचालन का काम सीख सका और उन्हीं के कहने से उसे एक कम्पनी में वायुयान के सचालक का पद मिला। जब उन्हें पता चला कि छटनी में आने पर देव को कम्पनी के उच्च पदाधिकारी एक दूसरे सञ्चालक को निकाल कर उसके स्थान पर रखना चाहते थे, पर देव ने दूसरे की रोजी को छीनने से इनकार कर दिया, तब उनकी दृष्टि में उसका सम्मान बढ गया। उन्होंने देव को अपने यहाँ रखना चा ।। पर वह जानता था कि मेहता को उसके काम की जरूरत नहीं है, वे खूबसूरती से केवल उसकी सहायता करना चाहते हैं, इस कारण कुछ समय तक विश्राम करने का बहाना बना कर उनसे नम्रता पूर्वक उस काम से क्षमा चाही। देव की स्वाभिमानी प्रकृति को मेहता जानते थे, इस कारण उन्होंने जोर नहीं दिया। किन्तु वे उसके अनुरूप काम की तलाश करते रहे।

इसी बीच में एक दिन बात-बात में उसने जमशेद से वायु-यान सम्बन्धी कुछ ऐसे नवीन सुधारों की चर्चा कि जिनके हो जाने से वायुयान-ससार में भारी परिवर्तनों की सम्भावना थी। जमशेद ने अनेक प्रकार के प्रश्न किये, नाना प्रकार की शकाएँ उपस्थित कीं, किन्तु देव ने सब के सन्तोष-जनक उत्तर दिये। जमशेद को भी विश्वास हो गया कि नवीन सुधार व्यावहारिक हैं और उनके हो जाने से वायु-यान सम्बन्धी अनेक कठिनाइयाँ दूर हो जायँगी। जमशेद के प्रोत्साहन से देव ने उन्हीं सुधारों के अनुसार एक नमूने का वायुयान तैयार करना शुरू किया। और कुछ ही दिन के अनवरत परिश्रम के बल पर देव ने उसे तैयार कर लिया।

यह तय हो जाने पर कि इस दौड़ में सम्मिलित होने का विचार छोड़ दिया जाय, जमशेद ने देव से पूछा—'अब तुम्हारा यह विचित्र खिलौना कितना समय और लेगा? मैं तो बेचैन हो रहा हूँ।'

देव—'अब अधिक विलम्ब नहीं है। बस, ज्यादा-से-ज्यादा यही कोई तीन-चार दिन और लगेंगे, ज्यादा प्रतीक्षा है हेलियम की।'

जमशेद—'तब मैं पिता जी से वृहस्पतिवार के लिए तय कर लूँ। सवेरे का समय ठीक रहेगा ?'

देव—'ठीक है। उसके पहले मगल या बुध को हम लोग खुद इसे उड़ाकर देख लेंगे।'

जमशेद चला गया। देव फिर काम में जुट गया।

दिन बीते। देव ने रात-दिन परिश्रम कर अपना काम समाप्त किया। वृहस्पतिवार आया। सवेरे देव अपने नमूने को कपड़े में अच्छी तरह से लपेट कर जमशेद के साथ मि० मेहता के पास ले गया। मेहता उत्सुकता से उसकी बाट जोह रहे थे। उनके कमरे में जा, देव ने नमूने को कपड़े से निकाल कर मेज पर रख दिया। इसके पहले मेहता ने उसे एक बार भी न देखा था। उसे सामने पाकर वे आश्चर्य-भरी दृष्टि से देर तक उसकी ओर ध्यान से देखते रहे। उनके चेहरे पर प्रसन्नता, संतोष, प्रशसा, आदर के भाव स्पष्ट झलक रहे थे।

जमशेद ने उत्सुकतापूर्वक पूछा—'कैसा है ?'

मेहता ने मुस्कराते हुए देव की ओर दृष्टि फेर कर कहा—'बहुत ही सुन्दर है। बनाने वाले ने कमाल किया है। यदि तुम्हारा यह दावा न होता कि यह एक ऐसे नवीन वायुयान का नमूना है जिसमें अनेक आश्चर्यजनक सुधार किये गये हैं, तो मैं इसे सजावट के लिए जरूर रख लेता।'

जमशेद ने खिले हुए चेहरे से कहा—'अभी आप इसके करिश्में देखकर खुद कहने लगेंगे कि यह खिलौना, नहीं सच्चा नमूना है; पिण्ड-मे-ब्रह्माण्ड की भाँति बड़े वायुयान का सूक्ष्म-पूर्वरूप मात्र।'

मेहता ने ध्यान से नमूने के अग-प्रत्यग को देखते हुए कहा—'यह तो हूबहु एक पक्षी है। एक सचमुच का पक्षी, केवल यान्त्रिक रूप में।'

देव ने नम्रतापूर्वक कहा—'यथार्थ में यह पक्षी है, 'गरुड़'। आप केवल इसकी ऊपर बनावट, बाहरी साहश्य पर मत जाइए। इसकी अनेक अन्दरूनी बाते बिल्कुल पक्षियों से मिलती-जुलती हैं।'

मेहता ने आश्चर्यान्वित होकर पूछा—'किन अन्दरूनी बातों में पक्षियों से इसकी अधिक समानता है ?

देव ने तनिक गभीर होकर कहा—'यह एक अत्यन्त गोपनीय बात है। व्यापारिक-भेद। इसे आप गुप्त ही रखियेगा। बात यह है कि जाँच से सिद्ध हो चुका है कि छोटी-बड़ी सभी चिड़ियों की हड्डियाँ पोली होती हैं। जब कोई पक्षी उडने की इच्छा करता है तो वह अपने फेफड़ों को एक विशेष प्रकार से सचालित करता है। उसकी इस क्रिया से अन्दर-ही-अन्दर एक प्रकार का ऐसा गैस तैयार हो जाता है, जो वायु से कई गुना हलका होत है। उसी गैस से पक्षी अपनी उन पोली हड्डियों को भर लेता है। बस, उस समय उसका वजन उसके शरीर के असली वजन से काफी कम पड़ जाता है। इसी से पक्षी के शरीर में उड़ते समय इतना हलकापन रहता है।'

मेहता ध्यान से सब बातें सुन रहे थे। देव को तनिक रुकते देख, उन्होंने उत्सुकतापूर्वक पूछा—'तो तुमने भी अपने नमूने के अन्दर किसी खाली स्थान को उसी तरह के हलके गैस से भरा है।'

देव—'जी हाँ। हमारे नमूने के पख ठीक पक्षियों के पंखों की तरह ही हैं, उनमें तनिक उपर की ओर उठान है और उन्हीं की तरह खम एव चढाव-उतार भी। इसके पखे पोले हैं। उनमें थैले रक्खे गये हैं। फ्यूजलेज में भी इसी तरह के थैले हैं। इन थैलों में हेलियम-

गैस भरा गया है, खूब दबा कर, घनीभूतरूप में। थैले इस प्रकार के पदार्थ के बने हैं और उनकी बनावट ऐसी है कि उनमें से कोई भी गैस निकल नहीं सकता। इस गैस के भरने से हमारे हवाई-जहाज का वजन असली वजन से बहुत कम मालूम होगा, उसमें ही अधिक हलकापन आ जायगा।'

मेहता ने विस्मय की मुद्रा बनाकर पूछा—'यह हेलियम-गैस क्या कोई नया गैस है?'

देव—'जी हाँ! यह अभी हाल में काम मे लाया जाने लगा है। पहले हवाई-जहाज में हलकापन लाने के लिए 'हाइड्रोजन-गैस' का उपयोग किया जाता था। किन्तु हाइड्रोजन बड़ा खतरनाक होता है। वह तुरन्त आग पकड़ लेता है। कहीं तनिक-सी रगड़ लगी थोड़ी भी खटखुट हुई और हाइड्रोजन-गैस फक से जल उठा। अनेक वायुयान इसी गैस के कारण जलकर राख हो गये, अनेक कुशल उडाकों की जानें बेकार इसी गैस के उपयोग के कारण ही गई हैं। कितनी भी सावधानी क्यों न की जाय, पर हाइड्रोजन के थैलों में आग लग ही जाती है। हेलियम है तो उतना ही हलका, पर इसमें आग नहीं लगती। यही इसकी खूबी है।'

मेहता ध्यानपूर्वक सब सुन रहे थे। उन्होंने देव से पूछा—'तो तुमने हाइड्रोजन के स्थान पर हेलियम का उपयोग अपने नमूने में किया है। और उसके लिए पंख आदि खास तरीके पर बनाये गये हैं।'

देव—'जी। यही तो इसकी एक विशेषता है।'

मेहता ने पङ्खों को छूकर, तनिक दबा कर देखा। उनमें ठसाठस गैस भरा हुआ था। वे इतने मुलायम मालूम होते थे कि जान पड़ता था कि छूते ही वे बिकस जायँगे। किन्तु तनिक ठोंकने पर पता चला कि उनके ऊपर का आवरण काफी मज़बूत है। फिर वे नमूने

के सामने वाले भाग यानी उसकी नाक के पास हाथ ले गये। बारह इंच लम्बा दो-फल (ब्लेड) वाला प्रोपेलर अपनी चमक-दमक के द्वारा बरबस ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर रहा था। मेहता ने उसे अपनी अंगुली से हिला कर नचाते-घुमाते हुए कहा—'इस प्रोपेलर को चालू करने के लिए क्या आयोजन किया गया है ?'

देव ने उस भाग के ऊपरी आवरण को एक ओर से खोल दिया। मेहता ने देखा, एक नन्हा-सा, सुबुक, सुन्दर, सुडौल इञ्जिन फिट किया हुआ है। वह चार सिलेन्डर वाला है। मेहता देर तक उसे गौर से देखते रहे। स्पष्ट था कि उसका प्रत्येक भाग बड़ी सफाई, बड़ी कारीगरी से तैयार किया गया है। आश्चर्य और प्रशन्सा-सूचक दृष्टि से देव की ओर देखते हुये उन्होंने पूछा—'यह चलता किस शक्ति से है ?'

देव—'मोटर तो मैंने एलुमीनियम, पीतल और फौलाद से तैयार किया है। यह नमूना तो पम्प की हुई वायु के बल पर चालू होगा, किन्तु इसी प्रकार के बड़े वायुयान के लिए गैसोलियम आदि की आवश्यकता होगी।'

मेहता ने पूछा—'यह मोटर वायु के बल पर कैसे चलता है ?'

देव—'फ्यूजलेज के तीन भाग हैं। उसके अगले भाग में यह इञ्जिन लगा हुआ है। पिछले हिस्से में हेलियम-गैस के थैले रक्खे गये हैं। बीच के हिस्से में वायु के लिए खास ढङ्ग से स्थान तैयार किया गया है। साइकिल के पम्प द्वारा उसमें खूब ठूँस-ठूँस कर हवा भर दी जाती है। इस बीच वाले भाग में कुछ नलियाँ लगाई गई हैं जिनका सम्बन्ध इञ्जिन के चारों सिलेन्डरों से रक्खा गया है। जब एक खास कल दबा दी जाती है, तब हवा वाली उन नलियों का मुँह खुल जाता है और हवा जोर से सिलेन्डरों में आकर पिस्टन को चालू

कर देती है। गैसोलियम-मोटर में भी पिस्टन इसी तरह चालू किये जाते हैं। पिस्टन के चालू होने पर क्रैंक-शेफ्ट चालू हो जाता है। क्रैंक-शेफ्ट के चालू होने के कारण प्रोपेलर घूमने लगता है। बस यही सीधा-सा ढङ्ग इसके चालू होने का है।'

मेहता ने प्रशंसा-सूचक स्वर में कहा—'बड़ी विचित्र कला है! खूब !! समझ लेने पर बिल्कुल साधारण !!! किन्तु है बड़े कौशल, बड़ी बुद्धि का काम।'

मेहता प्रोपेलर को घूमते हुये देखना चाहते थे। उनके मन के भाव को ताड़ कर जमशेद ने देव से कहा—'जरा प्रोपेलर को चालू कर के दिखला दो। वैसे कोई हानि तो न होगी?'

देव ने कहा—'जोर से कस कर पकडना होगा। चालू होने पर तुम देख ही चुके हो कि इसमें कितनी तेजी आ जाती है, यह कितने जोर का खिंचाव करता है!'

जमशेद ने उसके एक भाग को कस कर पकड़ लिया। उसके कहने से कुतूहलवश मेहता ने भी दूसरी ओर के भागों पर अपने हाथ लगा दिये। दोनों इस प्रकार पकड़े हुये थे कि प्रोपेलर के चालू होने पर उनके हाथ उसकी चोट से बचे रहें। उनके ठीक से खड़े हो जाने पर देव ने मुस्कराते हुए कहा—'सावधान! चालू होता है!!' जमशेद ने मुट्ठियों को और भी जोर से कसते हुये कहा—'हाँ, सावधान हैं! चालू करो।'

देव ने कल दबाई। कल के दबते ही नमूने में सिहरन-सी हुई, कुछ तीव्र गति-सी जान पड़ी। दूसरे ही क्षण भर्र-भर्र करता हुआ प्रोपेलर जोर से घूमने लगा। मेहता के चेहरे और गर्दन पर हवा के तेज़ झोंके आने लगे। पहले मेहता के दोनों हाथ तनिक ढीले थे। प्रोपेलर के चालू होते ही उन्हें जान पड़ा मानों वायुयान उनके हाथों

से निकल कर तेजी से आगे की ओर भागा जा रहा है। वे कल्पना भी न कर सकते थे कि इस नन्हें-से खिलौने में इतनी तीव्र गति, इतनी प्रबल शक्ति आ जायगी। सम्भलकर उन्होंने हाथ लपकाये और सटकते हुये वायुयान को खूब जोर से कस कर पकड़ लिया। बराबर तीन मिनट तक मेहता और जमशेद को अपना पूरा बल लगा कर वायुयान को कस कर पकड़े रहना और ठिकाने से रोकना पड़ा। तीन मिनट बाद प्रोपेलर की चाल क्रम से कम पड़ने लगी और अन्त में धीरे-धीरे उसका चलना बन्द हो गया। उसके बन्द होते ही नमूने की प्रबलता, कूद कर निकल जाने की प्रवृत्ति शान्त हो गई। मेहता और जमशेद ने उसे देव के हाथों में देकर अपने-अपने माथे पर का पसीना पोछा।

देव ने देखा, 'मेहता की आँखों से, उनके मुख की आकृति से विश्वास, उत्साह, प्रशन्सा की सूचना बरस रही है। उसे अपनी सफलता पर हर्ष हुआ। वह हसरत भरी नजरों से अपने हाथ के खिलौने को देखने लगा। मेहता ने उस नमूने के ढाँचे, उसमें लगे हुए सामान के विषय में अनेक प्रश्न किये। देव ने प्रत्येक प्रश्न का ऐसा सन्तोष-जनक उत्तर दिया, सभी वस्तुओं को उन्हें दिखला कर, समझा कर इन्हें इस प्रकार सन्तुष्ट कर दिया कि वे उसकी भूरि-भूरि प्रशन्सा करने लगे।

अभी सबेरा था। शहर के बाहर के मैदान में अधिक लोगों के पहुँचने की सम्भावना न थी। मेहता, जमशेद और देव उस नमूने की उड़ान की जाँच करने के लिए मोटर में बैठ कर मैदान में गये। वहाँ नमूना भूमि पर रक्खा गया। मेहता और जमशेद ने अपनी-अपनी घड़ी निकाल ली। घड़ी देख उस खिलौने की ओर दृष्टि गड़ा कर दोनों ने इशारा किया। देव का दिल जोर-जोर से धड़कने परीक्षा का क्षण था। उसका भविष्य बहुत

पर निर्भर था। उसने काँपते हुये हाथ से नमूने की एक कल दबा दी। 'भर्र' की आवाज होने लगी। पलक लगते-न-लगते खिलौना अपने रवर टायर लगे हुये एलुमीनियम के सुबुक, नन्हें पहियों पर सामने की ओर तेजी से दौड़ चला। पाँच-सात गज दौड़ने के बाद पहिये जमीन छोडने लगे, पङ्खे वायुयान को ऊपर उठाने लगे। कुछ दूर वह क्रम से पृथ्वी से अधिक-अधिक ऊपर उठता चला गया। तेजी से। ऊपर उठते हुये भी वह बराबर आगे बढ रहा था। चाल बराबर बढती जाती थी। करीब सौ फीट जमीन से ऊपर उठने के बाद खिलौना ऊपर उठना बन्द कर आगे की ओर बढने लगा, मानो कोई सजीव पक्षी हो।

यह सब क्षण भर में ही हो गया। कल दबते ही जान पड़ा मानो झाड़ी में छिपे हुये किसी तीतर को किसी बहेलिए ने सहसा भड़का दिया हो और वह जान लेकर भाग चला हो। नमूने वाले वायुयान में वही तेजी, वही तर्ज़, वही उड़ान थी।

तीनों उछलते हुए हृदय से उसकी ओर दृष्टि लगाये हुये थे। वह शान से चला जा रहा था। देखते-देखते वह कुछ हिलने-डुलने लगा। देव ने कहा—'हवा के झोंके का सामना कर रहा है।' उसे भय हुआ कि कहीं झोंका इतना तेज न हो कि वायुयान गिर जाय। किन्तु तुरन्त उसका मुख खिल उठा। उसने देखा, वायु के झोंके पर विजय प्राप्त कर वायुयान फिर सीधा होकर सरसराता हुआ आगे बढ रहा है। उसका सन्तुलन ठीक हो गया है। हवा के झोंके का ठीक से सामना कर वह तेजी से आगे बढा जा रहा है।

करीब पौन मील तक ऊपर उड़ते रहने के बाद वायुयान की चाल कुछ धीमी पड़ी। धीरे-धीरे वह नीचे उतरने लगा और होते-होते क्रम से भूमि पर आकर कुछ दूर तक पहियों पर दौड़ा और फिर एक

जितना सुन्दर, सुडौल है, इसके अग-प्रत्यग जितने उत्तम बन पड़े हैं, •
यदि उसका आधा भी काम दे जाय तो मै तुम लोगों की मेहनत को
और अपने रुपये को सार्थक समझूँगा।'

देव ने देखा, मेहता के वचन जितने सयत हैं, उनके मन का भाव,
उनके शरीर का पुलक उतने ही प्रबल वेग से उनके सतोष, उनके
विश्वास, उनके आनन्द को प्रकट कर रहे हैं। उसने इशारे में अपने
सहयोगियों को बुलाया। जमशेद, जान, साम तीनों दबे पाँव आकर
मेहता के पीछे खड़े हो गये।

मेहता ने बार-बार वायुयान के सुचिक्कण, चमकदार फ्युजलेज
पर अपनी अगुलियों को रगड़ा, बार-बार उसके पंखों को, उसके आगे-
पीछे के भागों को ठोककर, छूकर, दबाकर देखा। यान के दोनों पखों
के नीचे वाले हिस्सों पर, दोनों बगलो मे, उसकी पूँछ पर बड़े-बड़े
अक्षरो में उसका नाम 'गरुड़' लिखा हुआ था। बार-बार मेहता की
आँखें उन अक्षरो पर जातीं और हरबार उनके मुख पर प्रसन्नता की
आभा दमक जाती, सारा शरीर पुलक से भर जाता, मानो उन्हें उन
अक्षरो में विशेष गर्व करने का कारण स्पष्ट लक्षित हो रहा हो

चारो ओर घूम-घाम कर वे सीढी से चढ कर यान के कमरे मे
गये। उसकी छत इतनी ऊँची थी कि बड़े-से-बड़ा, लम्बे-से-लम्बा
मनुष्य मजे में खड़ा हो सकता था, चल-फिर सकता था। उसके सर
के ऊपर वाली छत से टकराने की वैसी आशका न थी। यथा स्थान बेत
की मजबूत किन्तु हलकी कुर्सियाँ जड़ी हुई थीं। कमरे में एक सचलक
और उसके चार सहायकों अथवा सहयात्रियों के बैठने, रहने, सोने,
सामान रखने का समुचित आयोजन था। सचालक और उसके सहा-
यक की बैठकों को छोड़ कर और सभी बैठकें इस तरह से बदल दी जा
सकती थीं कि उनसे झूलेदार बिस्तर लटकाये जा सकते थे और कुछ

दूसरे काम भी लिये जा सकते थे। एक ओर एक अल्मारी थी जिसमें एलुमीनियम के हलके-हलके वर्तन आदि रक्खे हुए थे। गैसोलिन का एक चूल्हा, तथा खाना, चाय आदि तैयार करने के अन्य सामान भी यथा स्थान मौजूद थे।

मेहता ने मुस्करा कर कहा—'देखता हूँ, लम्बी यात्रा के लिए पूरा प्रबन्ध किया गया है।'

देव ने नम्रता पूर्वक कहा—'पहले ही से सब प्रबन्ध कर लेने से बाद में दिक्कत नहीं उठानी पड़ती। इसमें दिन और रात दोनों तरह की उड़ानों के लिए विशेष रूप से आयोजन कर लिया गया है। यदि चार उड़ाके साथ-साथ काम करें तो इस वायुयान के द्वारा बिना रुके हुए बराबर दो-तीन दिन तक रात दिन उड़ा जा सकता है। पारी-पारी से दो-दो उड़ाके काम और आराम कर सकते हैं। भोजन, चाय, आदि भी समय-समय पर गरमा-गरम प्राप्त होते रहें इसका विशेष रूप से ध्यान रक्खा गया है।'

सम्मति-सूचक भाव से सर हिला कर मेहता दूसरी वस्तुएँ देखने लगे। उनकी नजर शीशे की खिड़कियों पर गई। खिड़कियाँ इतनी सुन्दर थीं कि मेहता प्रशसा-सूचक दृष्टि से देर तक उन्हें देखते रहे। फिर शीशों को अपनी अँगुलियो से खट-खटाते हुए उन्होंने पूछा—'ओलों के आघात को ये शीशे सह तो लेंगे? यह इतने पतले, इतने सुबुक हैं कि तनिक आशका-सी होती है।'

देव ने दृढता पूर्वक उत्तर दिया—'जान-बूझ कर ये शीशे इतने पतले रक्खे गये हैं हलकेपन के लिए ही। किन्तु ये इतने दृढ हैं कि एक बार शायद बन्दूक की गोली से भी न टूटें। इनका दल तीन तहों से तैयार किया गया है, अगल-बगल दो पतले शीशे हैं और बीच में

सेलोलाइड। इन तीनों को जोड़ने वाला मसाला भी फौलाद की तरह दृढ़ता लाने वाला है।'

मेहता ने खिड़कियाँ और उनमें लगे हुए शीशों को जाँचने के बाद देव से पूछा—'वायुयान में तुमने कितनी शक्ति वाला इजिन लगाया है?'

देव—'इसमें दो इजिन हैं। प्रत्येक की शक्ति चार सौ हार्स-पावर तक है।'

मेहता—'शायद तुमने कहा था कि चार सौ हार्स-पावर के केवल एक ही इंजिन के द्वारा इतना बड़ा वायुयान मजे में चलाया जा सकता है। फिर एक और इंजिन का भार क्यों बढा दिया?'

देव—'इसके कई कारण हैं। मशीन वाले सभी काम तनिक अधिक जोखिम के होते हैं। न जाने किस समय कोई भी एक छोटा-सा पुरजा बिगड जाय और सारा काम ही ठप हो जाय। यदि केवल एक इंजिन रहे और वह किसी समय उडते-उड़ते एकाएक बन्द हो जाय तो फिर आकाश से गिर कर चूर-चूर होने से बचने का कोई दूसरा उपाय नहीं रहेगा। दो इंजिनों के रहने से एक के बिगड जाने पर तुरन्त दूसरे से काम लिया जा सकता है। इसके अलावा यदि कहीं बराबर बारह घण्टे तक उड़ना पडे तो केवल एक मोटर से लगातार काम नहीं लिया जा सकता, क्योंकि अच्छे-से-अच्छा मोटर भी बराबर बारह घन्टे तक चलते रहने पर इतना गरम हो जायगा कि उसके खराब हो जाने का सदा भय लगा रहेगा। दो मोटरों के होने से यह भय दूर हो जाता है, वे पारी-पारी से चलाये जा सकते हैं, और इस प्रकार बारह ही नहीं चौबीस-चौबीस घण्टे बराबर उड़ते रहने पर भी वायुयान किसी खतरे में नहीं पड़ सकता, क्योंकि उसका एक-न-एक मोटर तो सदा ठण्ढा बना ही रहेगा।'

एक विचित्र टोपे को छूकर मेहता ने पूछा—'यह क्या है ?'

जमशेद धीरे से हँसकर चुप हो गया। देव ने मुस्करा कर कहा—'यह जमशेद की विलक्षण बुद्धि का सफल प्रदर्शन है। जमशेद ने इस वायुयान में वे-तार-के-तार के यन्त्र को फिट किया है। उसी यन्त्र से सम्बन्ध रखने वाला यह टोप है। वैसे तो हमने ऐसा आयोजन किया है कि वायुयान के दोनों मोटरों के एक साथ चलने पर भी जो जोर की भड़-भड़ाहट हो उसका तीन-चौथाई से भी अधिक भाग बिल्कुल दब जाय, किन्तु तो भी वायुयान के तेजी से चलने पर जोर का हल्ला-गुल्ला तो होता ही है। जब प्रोपेलर एक मिनिट में १५०० बार चक्कर काटेगा तब भीषण नाद क्यों न होगा! उसी सब शोर-गुल से बचने के लिए यह टोपा लगा लिया जाता है। इसके लगा लेने से बेतार-के-तार के द्वारा आये हुये सभी समाचार मजे में सुने जा सकते हैं।'

कमरे के अन्दर की प्रत्येक वस्तु को ध्यान से देख-सुन कर मेहता बाहर आये। वायुयान के सामने ऊपर वाले हिस्से में उन्हें एक अजीब वस्तु लगी हुई देख पड़ी। उन्होंने उसके सम्बन्ध में जानना चाहा। देव ने कहा—'वह भी आप ही के योग्य पुत्र के उर्वर मस्तिष्क की उत्तम कल्पना है। यह एक बहुत ही प्रबलतम् शक्ति वाली सर्चलाइट की मशीन है। मीलों तक इसका तीव्र प्रकाश काम दे सकता है। और तारीफ तो यह है कि यह उस बिजली की शक्ति को एकत्र और सञ्चित कर अपना काम करेगी जो वायुयान के चलने से उत्पन्न होती रहेगी। सब बातों की परीक्षा की जा चुकी है।'

मेहता का चेहरा प्रसन्नता से खिल उठा। गर्व-पूर्वक जमशेद की ओर एक नजर डाल, उन्होंने देव से पूछा—'तुम्हारे इस पूरे वायुयान का वजन कितना होगा ?'

देव ने कहा—'यही कोई ५० मन के करीब।'

जमशेद ने आगे आकर कहा—'पिता जी! जरा सामने के हिस्से को पकड़ कर उठाइये तो!'

मेहता ने तनिक आश्चर्य से उसकी ओर देखते हुए कहा—'क्या मतलब?'

जमशेद ने तनिक गम्भीर बनते हुये कहा—'यही की आप इसके वजन का अन्दाज कर ले।'

मेहता—'दोनों इञ्जिन इसी भाग मे मौजूद हैं। उनमें से प्रत्येक इतना भारी है कि अकेला आदमी पूरा जोर लगा कर भी उसे अपने दोनों हाथों से नहीं उठा सकता। ऐसी दशा मे वायुयान को इस पूरे हिस्से को मैं कैसे उठा सकता हूँ?'

जमशेद ने तनिक मुस्कराते हुए जोर दे कर कहा—'जरा हाथ तो लगाइये।'

मेहता समझ गये कि कुछ रहस्य अवश्य है। उन्होंने जमशेद का मन रखने के लिए अपने दोनों हाथ वायुयान के अगले हिस्से के नीचे डाल दिये और तनिक झुक कर जोर लगाया। उन्हें यह देखकर बडा अश्चर्य हुआ कि वायुयान का वह हिस्सा आसानी से इस प्रकार ऊपर उठ गया मानो वह कागज का ढड्ढा मात्र हो। उन्होंने अच्छी तरह से 'यान' को दो-तीन वार उठाया। उन्हें विश्वास हो गया कि वह बहुत हलका हो गया है। तब उन्होंने अपने हाथ खीच लिए और कहा—'मुझे आज मालूम हुआ कि पङ्खे और फ्यूजलेज़ के भागो में हेलियम-गैस के थैलों के रखने से इतना हलकापन आ जाता है, वायुयान के वजन में इतना आश्चर्यजनक परिवर्तन हो जाता है।'

देव—'आपको सुनकर आश्चर्य होगा कि इस समय इस वायुयान का कुल वजन केवल तीन मन के लगभग ही है। वैसे इसका

असली वजन पचास मन से कम नहीं। आपके आने के पहले मैंने और जमशेद ने मिलकर इसे उठा कर बड़ी आसानी से बाहर निकाला था।'

जमशेद—'इस हलकेपन के कारण अधिक भार लिया जा सकता है, गति अधिक तीव्र हो सकती है, सचालन में हर प्रकार की सुविधा होती है। वायुयान के लिए हलकापन एक वरदान है।'

देव—'इस वायुयान में एक और विशेषता लाने की चेष्टा की गई है। इसमें यान्त्रिक-स्वतः-सचालक (आटोमेटिक-पाइलाट) फिट किया गया है। इसके द्वारा वायुयान का सतुलन सदा सुधारा जाता है, बराबर ठीक-ठीक रक्खा जाता है। कैसी भी तेज़ या झोंकेदार खराब वायु क्यों न हो, यान्त्रिक-स्वतः-सचालक वायुयान को सदा सतुलित और सुधरी हुई स्थिति में रक्खेगा। इससे मानव-सचालन के काम में बड़ी सहूलियत हो जाती है। यदि मानव चाहे तो यान्त्रिक-स्वतः-सचालक को काम में लगा कर कुछ देर तक मज़े में आराम, भोजन या दूसरा कोई काम कर सकता है। यान्त्रिक-स्वतः-सचालक वायुयान को दूर तक ठीक सीधा बढाये लिए जायगा। जब मानव चाहे यान्त्रिक-स्वतः-सचालक को बन्द कर दे और खुद सचालन करने लगे।'

मेहता ने प्रशन्सा-सूचक भाव से कहा—'इससे तो एक बड़ी भारी कमी की पूर्ति हो जायगी। मानव-सचालन के अनेक सङ्कट कट जायँगे।'

देव—'वायुयान सम्बन्धी दुर्घटनाओं मे तभी कमी हो सकती है जब वायु की गति और स्थिति का पूरा ज्ञान हो जाय और उनपर पूरी तरह से काबू रक्खा जा सके। पृथ्वी की सतह से लेकर प्रायः चालीस मील ऊपर तक वायु का सागर भरा हुआ है। वायु के इस सागर में

वायु की तहें हैं। प्रत्येक तहें एक समान घनी है। किन्तु पृथ्वी की सतह में विषमता आने, ऊँचे-नीचे स्थानों के बीच मे पड़ने से वायु की तहों मे अन्तर आ जाता है। यदि दो पहाड़ों के बीच का भाग नीचा ऊँचा होगा तो वायु की तह में फर्क पड जायगा, नीचे की सतह की ओर वायु दवेगी, क्योंकि उसे उस रिक्त स्थान की पूर्ति करनी पड़ेगी। फलतः पहाड़ो के ऊपर की वायु की तह एक खास ढङ्ग से खिंचेगी। इससे वहाँ वायु में गड्ढे-से पड़ जायेंगे। ऐसे ही गड्ढो को वायु की कोठरियाँ कहते हैं। इन कोठरियों के बीच में पड जाने से वायुयान का सन्तुलन बिगड़ जाता है, क्योंकि ऐसे स्थानो पर वायु स्वय सम नहीं रहती। ऐसे जोखिम के स्थानो पर यान्त्रिक-स्वतः-सचालक तथा इसी प्रकार के अन्य साधनों से वायुयान की रक्षा हो जाती है। यही हमारे यान की विशेषता है।'

जमशेद—'इसी वायुयान में ऐसे और भी अनेक यन्त्र लगाये गये हैं जो वायु के झोको से अपने आप वायुयान को बचाते रहें। वे वायु के वेग तथा झोको के प्रभाव को नष्ट कर यान का सन्तुलन आदि अपने-आप ठीक रखते हैं।' यह कह कर उसने कई ऐसे यन्त्र खोल-खोल कर मेहता को दिखलाये जो 'गरुड़' में खास तौर पर फिट किये गये थे।

'गरुड़' के इस प्रथम दर्शन से और, उसके कल-पुरजो के विवरण एव निरीक्षण से मेहता को बड़ा सन्तोष हुआ। अब वे व्यावहारिक रूप में उसके कार्यों की परीक्षा करना चाहते थे।

देव ने उन्हें 'गरुड' पर सवार किया। उनके अन्य साथी भी सवार हुये। अपने मोटर-टायर वाले पहियों पर कुछ दूर दौड़ कर 'गरुड़' शान से ऊपर उठा और देखते-देखते आकाश में जा पहुँचा। देव ने नगर के कई चक्कर काटे। मेहता ने अपने ऊँचे मकान की छत

पर अपनी पुत्री और पत्नी को ध्यान से 'गरुड़ की ओर' ताकते हुये अनेक बार देखा। उनके कहने से देव उसे नगर से दूर ले गया। वह यान को पन्द्रह हजार फीट की ऊँचाई तक ले गया। यहाँ मेहता को काफी ठढ मालूम हुई। जैसे-जैसे वे ऊपर उठ रहे थे वैसे-ही-वैसे ठढ बढ़ती जाती थी। पन्द्रह हजार फीट पर उन्हें गरम कपड़ो की आवश्यकता पड़ गई। देर तक उसको ऊपर रखने और चक्कर काटने के बाद मेहता के कहने से देव उसे नीचे उतार लाया।

पाँच हजार फीट पर आकर मेहता ने बे-तार-के-तार की परीक्षा करनी चाही। जमशेद ने यन्त्र को ठीक कर अपनी बहन को पुकारना शुरू किया। कुछ देर बाद उसे नागरिक का उत्तर मिला। उसने यन्त्र अपने पिता के हाथ में देकर उनके सर पर टोपा रख कर उनसे स्वय बाते करने को कहा। मेहता ने देर तक अपनी पुत्री से बातें कीं। उनका मन सन्तुष्ट होगया। वायुयान के प्रत्येक कल-पुरजे की परीक्षा करने, उसे सब प्रकार से जाँचने के बाद अन्त मे उन्होंने देव से कहा—'इसका जैसा रङ्ग रूप, आकार-प्रकार है, वैसा ही इसके प्रत्येक कल-पुरजे का काम भी है। मैंने ऐसे उत्तम वायुयान की कल्पना भी न की थी। तुम्हारे श्रम और मेरे रुपये दोनो ही सार्थक हुये। मै तुम लोगों को इस अपूर्व सफलता पर हार्दिक बधाई देता हूँ। तैयार रहना, शीघ्र ही तुम्हें ससार के सामने परीक्षा देनी होगी।'

देव वायुयान को बड़ी खूबसूरती से नीचे उतार लाया। मेहता के सन्तोष ने उन सब को आनन्द-विभोर कर दिया था। उनको पूरा विश्वास होगया कि अब उनके लिए निकट भविष्य में ही कोई विशेष आयोजन किया जायगा। उत्कठापूर्वक वे उस दिन की प्रतीक्षा करने लगे।



(२१)

हवाई-दौड़ : मायाजाल

नमूने के सफल प्रदर्शन के बाद समझौते के अनुसार देव बड़े वायुयान के बनाने में लग गया था। पहले उसने यान का एक पूर्व चित्र तैयार किया। उसमे उसने यान के अङ्ग-प्रत्यङ्ग का विस्तृत विवरण दिया। मेहता प्रत्येक कार्य बहुत ही व्यवस्थित ढङ्ग से करते थे जब उनके कहने के पहले ही देव ने प्रस्तावित वायुयान के अङ्ग-प्रत्यङ्ग का पूर्ण विवरण, छोटे-बड़े कल-पुरजों के चित्र उनके सामने उपस्थित किये तो वे बहुत प्रसन्न हुये। देव ने जमशेद के साथ मेहता को प्रत्येक बात अच्छी तरह से समझा दी। मेहता ने भी वायुयान सम्बन्धी छोटी-से-छोटी बात तक खोद-खोदकर पूछी, नन्हीं-से-नन्हीं विधि को विस्तार-पूर्वक सुना समझा। अन्त में सब बातों से सन्तुष्ट होकर उन्होंने विमान के निर्माण की स्वीकृत दे दी। आवश्यक सामान मँगा लिए गये। एक एकान्त स्थान पर कारखाना स्थापित किया गया। उसमें यथास्थान विभिन्न मशीने, औजार आदि फिट किये गये। काम चालू कर दिया गया। देव काम में अपना पूरा समय लगाने लगा। जमशेद बिजली का काम सीख रहा था, उसे अपनी पढ़ाई के अलावा जो भी अवकाश का समय मिलता उसे वह देव के साथ वायुयान के निर्माण में लगाता। किन्तु सब बाते गुप्त रक्खी गई। किसी को कानोकान खबर न होने पाई।

देव को वायुयान के काम में लगे हुए अभी दो महीने भी न हुए थे कि अमरीकन पत्रों ने 'दुनिया की दौड़ की घोषणा कर दी। तारीख

और समय भी निश्चितकर दिये गये। अन्त में एक दिन घोषणा निकली की आज न्यूयार्क के हवाई अड्डे के मैदान से 'दुनिया की दौड़' में भाग लेने वाले उडाके प्रस्थान करेंगे। घोषणा के अनुसार तीसरे पहर मैदान में लोग दौड़ में शामिल होने वाले उड़ाकों को विदा करने के लिए एकत्र हुए। मेहता के साथ देव और जमशेद भी गये। मैदान में दस वायुयान दौड़ में सम्मलित होने के लिए एकत्र हुए थे। दसों प्रायः दस आकार, प्रकार, गति और बनावट के थे। उनके चालकों और सहायकों की सख्या भी भिन्न-भिन्न थी। निश्चित समय पर निर्णायकों के आदेश से उन दसों वायुयानों ने दौड़ के निमित्त प्रस्थान किया। सभी अपनी-अपनी रुचि के अनुसार विभिन्न स्थानों की ओर चल पड़े। कुछ तो न्यूफाउण्डलैण्ड की ओर गये, कुछ ने सीधे अटलाटिक की ओर रुख किया। इसके पूर्व कई बार न्यूफाउण्ड-लैण्ड से ही अनेक व्यक्तियों ने वायुयान द्वारा ससार-भ्रमण का प्रारम्भ किया था। उन्हीं की पद्धति का अनुसरण कर कुछ उड़ाके न्यूफाउण्ड-लैण्ड से ही इस दौड़ को प्रारम्भ करना चाहते थे।

उड़ाकों को विदा कर लोग अपने-अपने स्थानों को चले गये। समाचार पत्रों ने जहाँ तक हो सका जनता के ज्ञान के निमित्त प्रतिदिन की उडान के प्राय. सभी विवरण देने प्रारम्भ किये। देव और जमशेद को इन बातों से विशेष दिलचस्पी थी। वे नियमित रूप से जैसे होता, इन विवरणों को पढते और नोट करने वाली बातों को नोट भी कर लेते। दस मे मे केवल पॉच ही अटलाँटिक को पार कर सके। इनमें से दो तो इटली में उतरते समय भूमि पर टकरा कर बेकाम हो गये। दूसरा फारस के तेहरान नगर में जाकर इतना बेकार हो गया कि उसके उड़ाकों को रेल के द्वारा यात्रा करनी पड़ी। दो वायुयान प्रायः साथ-ही-साथ सकुशल जापान तक जा पहुँचे। किन्तु वहाँ से उड़ाके वायुयान द्वारा पैसिफिक को पार करने की हिम्मत न कर सके। इस कारण वे

तज जहाज द्वारा-प्रशान्त महासागर को पार कर सेनफ्रांसिसको को गये और वहाँ से फिर वायुयान द्वारा न्यूयार्क के लिए रवाना हुए। इनमे से एक रास्ते में कुछ खराब हो गया, इस कारण उसके उडाके उसे सुधारने के लिए बीच में रुक गये। दूसरा वायुयान सकुशल न्यूयार्क तक जा सका। लौट कर फिर न्यूयार्क के हवाई अड्डे तक पहुँचने मे उसके उड़ाकों को कुल मिला कर २३ दिन, सवा पाँच घण्टे लगे थे। उसके उड़ाकों को प्रथम पुरस्कार मिला। रास्ते मे जो वायुयान मरम्मत के लिए रुक गया था, वह पहले यान से प्रायः दस घण्टे बाद न्यूयार्क पहुँचा इस कारण उसे द्वितीय पुरस्कार दिया गया। इस प्रकार यह 'हवाई दौड' समाप्त हुई। संसार के विभिन्न देशों के पत्रों, पत्रिकाओं मे इस हवाई-दौड़ की खूब चर्चा रही। खूब सज-धज से विवरण निकाले गये, नाना प्रकार से टीका-टिप्पणियाँ की गई, हजारों लेखकों ने अपनी-अपनी लेखनी के जौहर दिखलाये। जनता ने, पाठकों ने भी खूब दिलचस्पी ली।

मेहता के पत्र 'विश्व-बन्धु' में और वाशिंगटन के दैनिक पत्र 'अमरीकन-राष्ट्र' में प्रतिस्पर्धा चलती थी। दोनों मे से प्रत्येक का अपना खास ढंग था, अपना विशेष दृष्टिकोण, अपना विशिष्ट सिद्धान्त, अपनी अबाध प्रभाव-परिधि और अपना अनुरक्त पाठक-समुदाय। दोनों के विचारो में बड़ा अन्तर था। शायद ही किसी विषय पर दोनों कभी एक मत हो सके हों।

प्रारम्भ से ही-'विश्व-बन्धु' इस 'दौड़' को तनिक सदिग्ध दृष्टि से देखने लगा था। उसका कहना था कि जब अन्य सवारियों का भी उपयोग जायज रक्खा गया है तब इसे 'हवाई' दौड़ कैसे कहा जा सकता है। दूसरे, जब किसी निश्चित मार्ग का और उसमे पड़ने वाले विशेष-विशेष स्थानों का कोई प्रतिबन्ध नहीं रक्खा गया है, तो यह सच्ची

दुनिया की दौड़ तो नही हो सकती। कोई चाहे तो पूरे २५००० मील का रास्ता तय करे, ऐसा न चाहे तो ऐसा मार्ग ग्रहण करे, जो १५००० मील ही मे समाप्त हो जाय और इस प्रकार १०००० मील की दौड़ से जान बचाली जाये। तीसरे, उड़ाकों की सख्या का, लौटने की तारीख का निश्चय न होने से तथा इसी प्रकार की अन्य अनेक बातों को दौड़ में शामिल होने वालों की इच्छा पर छोड़ देने से, दौड़ का महत्व ही नष्ट हो जाता है।

इसके विपरीत 'अमेरीकन राष्ट्र' बहुत ही जोरदार शब्दों द्वारा इस हवाई-दौड़ की प्रशसा करने लगा, उसके कालम-के-कालम दौड़ के पक्ष मे दी गई दलीलो से भरे रहते। वह इसे एक बहुत ही महत्व की दौड़ सिद्ध करता।

अन्त में दौड़ समाप्त हुई। पुरस्कार भी वितरित हो गये। सार्वजनिक रूप से दौड़ में सम्मिलित होने वालों का सम्मान किया गया। 'अमरीकन-राष्ट्र' ने तो उस पर अपना एक विशेषाक ही निकाल दिया।

विश्व-बन्धु' ने एक बहुत ही गम्भीर सम्पादकीय टिप्पणी दी। उसमे कहा गया था कि इस बार जो दौड़ हुई है, उसमें भाग लेनेवाले वीरों को हम हृदय से बधाई देते हैं। १६१३ मे इसी प्रकार की दौड़ का जो आयोजन किया गया था उसमे ३५ दिन कुछ घटे लगे थे। इस बार २३ दिन लगे। इस प्रकार इस बार के वीरो ने प्रायः १२ दिन पहले ही दौड़ समाप्त करदी। उनके साहस, अध्यवसाय, श्रम, उत्साह और वीरता के लिए सारा ससार उनकी उचित ही प्रशसा कर रहा है। इस दौड़ का आयोजन करने, इतनी बड़ी-बडी रकमें पुरस्कार के रूप में देने और इस प्रकार ससार के विभिन्न भागों की यात्रा को अश्रुतपूर्व प्रोत्साहन देने के लिए अमरीका के "वायु-विहार-सघ" को हम हृदय से बधाई देते हैं। ससार उसका चिर ऋणी रहेगा। कितनी ऐसी सार्व-

जनिक सस्थाएँ हैं जो विश्व के कल्याण के, जनता के सार्वजनीन लाभ के इस प्रकार के कार्यो के निमित्त इस प्रकार लगन से काम करती हैं, इतना धन व्यय करने के लिए तैयार हो सकती हैं, इतना विशद आयोजन कर सकती हैं ! इस दौड़ के आयोजनकर्ताओ की जितनी प्रशसा की जाय, थोड़ी है। हमें तो उनकी प्रशसा के निमित्त उपयुक्त शब्द ही नहीं देख पडते।

किन्तु इसके साथ ही हम एक बात बिलकुल स्पष्ट कर देना चाहते हैं। सन् १८७२ में सर्व प्रथम दुनिया की दौड़ का विचार ससार के सामने रक्खा गया था। उस समय कल्पना की गई थी कि सारी पृथ्वी का चक्कर ८० दिन मे लगाया जा सकता है। उस समय एक भारी भूल की गई थी। और तब से लेकर अब तक वही गलती बराबर बारबार दोहराई जा रही है। उस समय पृथ्वी के एक खास उत्तरीय भाग से चक्कर लगवाया गया था। उस रास्ते से पृथ्वी के चारो ओर घूमने के लिए केवल १६००० मील का ही रास्ता तय करना पड़ता है। इस प्रकार पृथ्वी के असली घेरे का प्रायः एक-तिहाई भाग साफ छूट जाता है। पृथ्वी का घेरा भू-मध्य-रेखा के अनुसार प्रायः २५००० मील का है। १८७२ से लेकर आज तक जो भी काल्पनिक अथवा यथार्थ दौड़े दुनिया के चारो ओर लगाई गई हैं, उनमें बजाय २५००० मील के केवल १६००० मील का ही चक्कर काटा गया है। यह सरासर माया-जाल है। और फिर इस समय जो दौड़ हुई है, उसे हवाई-दौड़ कहना तो सरासर अन्याय है, जनता को धोखे मे डालना है।

हम इस प्रकार की पद्धति के सर्वथा विरुद्ध हैं। अब समय आ गया है कि मायाजाल, धोखाधड़ी, शब्दाडम्बर के स्थान पर स्पष्टता और सचाई से काम लिया जाय। दुनिया की 'हवाईदौड़' तो केवल वही होगी जो केवल वायुयान-द्वारा की जाय, जहाज, रेल आदि का जिसमें

सर्वथा त्याग हो और जो, जहाँ तक संभव हो, भू-मध्यरेखा के ऊपर-ऊपर के रास्ते से तय की जाय, जिसमें पूरे २५००० मील का चक्कर काटना पड़े। देखें कौन उद्योगी सर्व प्रथम उसके आयोजन का भगीरथ प्रयत्न कर यश का भागी बनता है और कौन-कौन साहसी वीर उस दौड़ में भाग लेकर अपने नाम को अमर करते हैं?

× × ×

इस टिप्पणी ने बड़ी खलबली मचा दी। दुनिया की दौड़ के सम्बन्ध में अब दो दृष्टिकोणों से विचार किया जाने लगा। पुराने विचार वाले इस टिप्पणी के विरुद्ध फतवे देने लगे। वे पुरानी बातों के खिलाफ कुछ भी नहीं सुनना चाहते थे। किन्तु नवयुवकों का भी दल था। वह पुरानी बातों में, प्राचीन रूढ़ियों में सर्वथा बँधा रहना नहीं चाहता था। उसने "विश्व-बन्धु" की राय को ही उचित और न्यायानुमोदित ठहराया। बहस चल पड़ी। हफ्तों दोनों दृष्टिकोणों से सम्बन्ध रखने वाले लेखों, चिट्ठियों, टिप्पणियों की भरमार रही। अन्त में "अमरीकन-राष्ट्र" ने बहुत ही व्यङ्गपूर्ण भाव से लिखा कि यदि 'विश्व-बन्धु' अभी तक की दौड़ों को मायाजाल और अपूर्ण समझता है, तो वह स्वय किसी सच्ची और पूर्ण दौड़ का आयोजन कर अपने वक्तव्य को कार्य-द्वारा ससार के सामने सिद्ध क्यों नहीं करता। कोरी डींगें हाँकना सरल है, किन्तु ससार में कार्य करके दिखलाना कठिन है। देखना है, 'विश्व-बन्धु' केवल दूसरों के सत्कार्यो के छिद्रान्वेशन में ही कुशल है अथवा अपनी बातों को प्रमाणित करने के लिए वह काम भी कर सकता है।

मेहता उसे पढ कर तिलमिला उठे। इसके पहले भी दोनों पत्रों में अनेक बार बहस छिड़ी थी, आलोचनाएँ, प्रत्यालोचनाएँ हुई थीं, कटाक्ष और व्यग की फुलझड़ियाँ छूटी थीं, एक दूसरे पर आक्रमण

किये गये थे । किन्तु इसके पहले कभी भाषा इतनी असंयत न होने पाई थी, व्यंग इतना तीक्ष्ण न हो पाया था कि वह गाली के पास तक जा पहुँचे ।

अपनी बात रखने, इज्जत बचाने के लिए मेहता के सामने अब केवल एक ही उपाय रह गया था । अपने प्रतिद्वन्दी के रण-निमंत्रण को, इस सार्वजनिक रूप से दिये गये चेलेंज को स्वीकार कर लेना । उसी चुनौती के अनुसार "दुनिया की दौड़" का आयोजन करना । वह भी इस प्रकार से कि ठीक-ठीक २५००० मील का पूरा चक्कर काटा जाय ।

मेहता बड़े असमञ्जस में पड गये । उन्होंने अपने विचार प्रकट किये थे, यथार्थ बात को जनता के सामने स्पष्ट शब्दों में रख कर उसे सचेत करना चाहा था । यदि किसी के कार्य की सच्ची आलोचना की जाय उसकी त्रुटियाँ बतला दी जायँ, कुछ सुधार सुझाये जायँ, तो आलोचक के लिए यह जरूरी नहीं कि उन्हें कार्य रूप में परिणत करके भी दिखला दिया जाय ।

इस प्रकार की किसी भी दौड़ का आयोजन करना मेहता के कार्य-क्षेत्र के बाहर की बात थी और वे प्रायः अपने कार्य-क्षेत्र के बाहर के किसी भी काम मे फँसना नहीं चाहते थे । कारण कि वे उनकी हानियों से खूब परिचित थे ।

किन्तु यहाँ तो बात ही दूसरी थी । प्रश्न आन का, इज्जत का उठ खडा हुआ था । और मेहता आन पर जान कुर्बान करने वाले व्यक्तियों में से थे । वे शान की जिन्दगी को ही जिन्दगी समझते थे । वैसे तो गधे, कुत्ते सभी जीवित रहते ही हैं ।

× × ×

मेहता का ध्यान 'गरुड़' की ओर गया। जमशेद से उनकी मानसिक स्थिति छिपी नहीं थी। उसे देव पर पूरा विश्वास था। उसने मेहता को विश्वास दिलाया कि 'गरुड़' के बन जाने पर 'दुनिया की दौड़' कठिन न रह जायगी। समय भी कम ही लगेगा। मेहता ने भी देव से बातें कीं। उन्हें भी विश्वास होने लगा।

मेहता बहुत ही समझ-बूझकर जनता के सामने किसी बात को कहते थे। वे अपनी मर्यादा, अपनी जिम्मेदारी को खूब समझते थे और उसे जान लड़ाकर निभाना चाहते थे। उन्हें देव पर पूरा विश्वास था। किन्तु 'गरुड़' अभी पूरी तरह से बन न पाया था। और जब तक वह पूरा न होले, जब तक वे उसपर बैठकर उसकी गति, उसकी शक्ति, उसके कल-पुरजों की जाँच न करलें, तब तक वे सार्वजनिक रूप से किसी बात की न तो घोषणा ही कर सकते थे और न उसकी जिम्मेदारी ही लेने को तैयार हो सकते थे।

सवाल 'गरुड' के जल्दी-से-जल्दी बन कर तैयार होने का था। देव और जमशेद दोनों मिल कर जिस गति से 'गरुड़' के काम को पूरा कर रहे थे, उससे तो काफी समय लग जाने की सभावना थी। और मेहता उसे जल्दी से-जल्दी पूरा करना चाहते थे। अस्तु उन्होंने जमशेद और देव से कुछ और आदमियों को लगाकर जल्दी काम पूरा करने के लिए कहा। देव ने गरुड़ में अनेक नई बातों का समावेश किया था, नये सुधारों के अनुसार बहुत से परिवर्तन किए थे। उनका गुप्त रखना आवश्यक था। बाहर के आदमियों को लेने से उन सब बातों के प्रकट हो जाने की आशका थी। किन्तु बिना आदमियों की सख्या बढाये काम भी न चलता था। देव ने खूब समझ-बूझ कर जान और साम नामक अपने दो साथियो को बुलाया। उनके साथ वह डाक का काम कर चुका था। उनपर उसे पूरा विश्वास था। चारों ने मिल

कर 'गरुड़' को जल्दी-से-जल्दी बनाकर तैयार करना प्रारम्भ किया। कुछ हिस्से इधर-उधर से भी तैयार करा लिए गए।

× × ×

'गरुड़' का काम जोरों से चालू था। इसी बीच मे जमशेद और साम को यह आशका हो गई कि कोई एक व्यक्ति को कारखाने जाते समय उनका पीछा करता है। दो-चार बार वह व्यक्ति उन्हें कारखाने के आस-पास भी ताक-झाँक करता हुआ देख पड़ा। इसके कुछ ही दिन बाद देव के कमरे से 'गरुड़' का पूर्व-चित्र, उसके अग-प्रत्यग के विवरण सम्बन्धी रेखा-चित्र गायब हो गए। सबको बडा आश्चर्य हुआ। मेहता ने बहुत खोज कराई, किन्तु चोर का कोई पता न लगा। उनके पास उसकी प्रति लिपियाँ तो थी ही, इस कारण 'गरुड' के निर्माण कार्य मे कोई विघ्न न पड़ा। अन्त मे वह बन कर तैयार भी हो गया। मेहता ने उसकी पूरी तरह से जाँच की। उन्हें उसकी सभी बातों से आशातीत सतोष हुआ।

× × ×

'गरुड' की जाँच के बाद मेहता ने अपने प्रतिद्वन्दी की चुनौती को स्वीकार कर लिया। उन्होंने लिखा सहयोगी को अधिकार है कि जब और जिस रास्ते से, जिस-जिस स्थान से होकर वह उचित समझे हमारे साथ 'दुनिया की दौड' दौड ले। वह जैसा भी चाहे हवाई-जहाज काम में ला सकता है और जिस तारीख को चाहे 'दौड़' शुरू कर सकता है। उसने शायद यह सोचकर हमें ललकारा था कि इस प्रकार की 'दौड़' का आयोजन करना हमारे कार्य-क्षेत्र के बाहर का काम है, इस कारण हम उसे स्वीकार न कर सके। हम यह मानते हैं कि दौड़ में त्रुटियाँ दिखा देने, उसकी उचित आलोचना करने, सुधारों को

सुझा देने के यह अर्थ नहीं हो सकते कि हम उन सुधारों के अनुसार 'दौड़' करके अपनी बात को प्रमाणित भी करे। तो भी हम अपने सहयोगी के चेलेंज को स्वीकार करते हैं। हम दौड़ के लिए तैयार हैं। केवल यह प्रमाणित करने के लिए कि हम डींग हॉकने वाले नहीं हैं। हमें देखना केवल यही है कि हमारा सहयोगी कब हमें दौड़ का अवसर देता है।

× × ×

इस स्वीकृति के और चेलेंज के बीच का समय इसी सम्बन्ध की टीका-टिप्पणियों में बिताया गया था, इस कारण नई 'दौड़' का विषय जनता के सामने से ओझल न होने पाया था। वह उसमे बराबर रस ले रही थी। मेहता केवल उचित अवसर की ताक में थे। 'गरुड़' की परीक्षा के बाद उन्होंने चेलेंज को स्वीकार कर फिर एक नई सनसनी उत्पन्न कर दी। उनका प्रतिद्वन्दी इस प्रकार की स्वीकृति की कल्पना भी न कर सकता था। सार्वजनिक रूप से मेहता द्वारा की गई उस घोषणा को पढकर वह आश्चर्य चकित रह गया। अब उसके सामने सिर्फ एक ही रास्ता था—मेहता की बात को मान कर दौड़ की तारीख की निश्चित सूचना देना। अनेक लेखों, पत्रों, टिप्पणियों के बाद अन्त मे उसे एक तारीख तय करनी ही पड़ी। उसने 'दौड़' के रास्ते का निर्णय मेहता के ऊपर छोड़ दिया।

'दुनिया की दौड़' की तारीख निश्चित हो गई। जमशेद और देव को बुलाकर मेहता ने ससार के विभिन्न देशों के ऐसे ग्यारह स्थान चुन लेने को कहा जो प्रायः भूमध्यरेखा के ऊपर या उसके आस-पास हों और जो एक दूसरे में प्राय: समान दूरी परी हों। देव और जमशेद की सलाह से उन्होंने यह घोषित कर दिया था कि 'इसबार दुनिया की दौड़' केवल दस दिन में ही समाप्त कर दी जायगी।

× × ×

देव, जमशेद, जॉन और साम पुस्तकालयों में जा जाकर भूगोल से सम्बन्ध रखने वाले सभी छोटे-बड़े ग्रथों, रिपोर्टों, तालिकाओं, नक्शों, विवरणों आदि की गौर से जॉच-पडताल करने लगे।

परिश्रम कर उन्होंने अनेक रास्तों के नक्शे, तालिकाएँ और विवरण तैयार किये। किन्तु प्रत्येक में कोई-न-कोई ऐसी अडचन आपड़ती थी कि व्यावहारिक-रूप से वह अनुपयुक्त सिद्ध होती। किसी में विभिन्न स्थान बहुत अन्तर पर पड़ते। किसी में गैसोलिन, पैट्रोल आदि के ठीक से पहुँचने में दिक्कत होती। कहीं से भूमध्य-रेखा बहुत अधिक फासले पर पड जाती। किन्तु अन्त में बड़ी सावधानी मे सब बातो का विचार कर उन्होंने नीचे लिखी तालिका तैयार की—

नाम अड्डा	दूरी मील	तारीख	समय पहुँच	समय रवानगी
पनामा (से दौड प्रारभ)		२०		
जार्जटाउन	१६७२	२१	५-३० सवेरे	७-३० सवेरे
पारा (बेलेम)	११५४	२१	६ बजे शाम	९ बजे रात
फ्रीटाउन	२४०२	२२	६-१६ शाम	६-१५ राम
कूक	१६८०	२३	१ बजे दिन	३ बजे दिन
अदन	२०१५	२४	६ बजे सवेरे	९ बजे सवेरे
कोलम्बो	२११६	२५	५-३० सवेरे	८-३० रात
सिगापूर	१६१२	२५	६ बजे शाम	९ बजे रात
पोर्टडार्विन	२२१८	२६	५-३० शाम	८-३० रात
आपिया	२८२६	२७	५-४५ सवेरे	८-४५ सवेरे
नूकाहीवा	२१००	२८	९ बजे दिन	१२ बजे दिन
सानक्रिस्टोबल	३१५४	२९	६ बजे शाम	९ बजे रात
पनामा	६५०	३०		

तर्क-वितर्क, अत्यधिक मनन-अध्ययन के अनन्तर यह निश्चित हुआ कि यही सबसे सुभीते का रास्ता है, वायुयान को १२० मील प्रति घन्टे की गति से चलाने पर प्रत्येक अड्डे पर ठीक समय से पहुँचा जा सकेगा। प्रत्येक स्थान पर गैसोलीन, पेट्रोल आदि के पहुँचाने में भी विशेष अड़चन न पडेगी।

यही तालिका मेहता के पत्र में प्रकाशित की गई और साथ ही यह भी कह दिया गया कि यदि प्रतियोगी को कोई आपत्ति हो अथवा उसे कुछ परिवर्तन करना हो तो वैसा प्रबन्ध किया जाय। इसके साथ ही अन्य दो-तीन रास्ते और बतलाये गये और प्रत्येक के छोड़ने के कारण भी स्पष्ट कर दिये गये। प्रतिद्वन्दी ने अपने पत्र में ऊपर वाली तालिका को छाप कर स्वीकार किया कि इससे अधिक उत्तम रास्ता वर्तमान स्थिति में दूसरा नहीं मिल सकता।

× × ×

मार्ग और तारीख के निश्चित हो जाने पर दोनों ओर से 'दौड़' के लिए जोरों से तैयारियाँ की जाने लगीं। दोनों पत्रों के सचालकों ने अमरीका और योरोप के प्रधान-प्रधान नगरों और स्थानों पर आकर्षक पोस्टर और बड़े-बडे बोर्ड लगवाये, करोड़ो हैण्डबिल बँटवाये, पत्र, पत्रिकाओं एव अन्य सभी साधनों द्वारा विज्ञापन किया। प्रत्येक बोर्ड में ससार के उन विभिन्न स्थानों के मान-चित्र दिये गये जहाँ होकर 'दौड़' वाले वायुयानों को जाना था। अनेक खिलौने-वायुयान तैयार कराये गये और रात के समय बिजली की रोशनी का प्रबन्ध कर वे बोर्डों पर इस प्रकार उड़ाये जाने लगे, मानों वे ही 'दुनिया की दौड़' कर रहे हो। हजारों-लाखो दर्शक नित्य-प्रति इन विज्ञापनों के द्वारा भावी 'दुनिया की दौड़' के प्रति आकर्षित किये जाने लगे।

'दौड' के लिए ऐसा वायुमण्डल तैयार कर दिया गया कि दिलचस्पी लेने लगे।

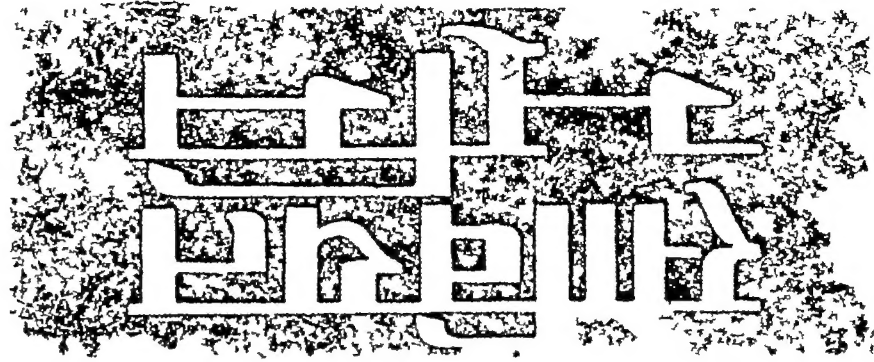
× × ×

मार्ग के निश्चित हो जाने पर देव, जमशेद आदि प्रत्येक के सम्बन्ध में विस्तृत ज्ञान प्राप्त करने में जुट गये। अपने रास्ते अड्डो की भौगोलिक स्थिति के, वहाँ के निवासियों के आ रहन-सहन, स्वभाव आदि के तथा प्रत्येक अड्डे के जलवायु सूर्यास्त-सूर्योदय के पूरे विवरण को उन्होंने खोज-ढूँढकर अपनी बुक में दर्ज कर लिया। मार्ग में जो पहाड, जङ्गल, नदी, नद, खाड़ी, समुद्र, महासागर, द्वीप, महाद्वीप आदि पडते थे, उन विस्तृत तालिकाएँ तैयार करलीं, नक्शे बना लिए। वे किसी अनिश्चित अवस्था मे न छोड़ना चाहते थे। विभिन्न स्थानों पर कहाँ-कैसी वायु रहती है, तूफान कब-कहाँ-कैसे उठते हैं, उनका क्या-कैसा होता है, तापमान और दिनमान कहा-कैसे रहता है, भी विवरण तैयार कर लिए गए। सब तरह से तैयार होकर वे दौ प्रारम्भ होने की प्रतीक्षा करने लगे।

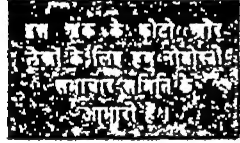
× × ×

उन लोगो ने बहुत चेष्टा की, किन्तु उन्हें यह पता न चल कि उनके प्रतिद्वन्दी किस प्रकार के वायुयान का उपयोग 'दौड़ करना चाहते हैं और उनकी ओर से कौन कौन सचालन मे लेंगे।

जमशेद ने मजाक में कहा—'हमारे वायुयान के रेखा-चित्र विवरण चोरी गये हैं। ऐसा न हो कि उसी आधार पर दूसरा वार बनाया गया हो और वही हमारे साथ दौड़ में उड़ाया जाय।'









का रूस एक वर्ष में जितना उत्पादित किया करता था, उतना संसार का प्रथम समाजवादी देश आज चार दिन में उत्पादित किया करता है। देश ने १९७० में अपनी कृषि के पूरे इतिहास में सबसे ज्यादा फसल बटोरी। आज हर दूसरे सोवियत परिवार के पास टेलीविजन सेट और कपड़ा धोने की मशीन है और हर तीसरे के पास रेफ्रिजरेटर है। गत १० वर्षों में १० करोड़ से ज्यादा लोगों को नये फ्लैट मिले।

पत्रिका के १९७० के अंकों पर नजर दौड़ाते समय हम अनुभव करते हैं कि हम सोवियत मेहनतकश जनता के भरपूर और रंगारंगी जीवन का चित्रण करने में सफल रहे हैं। आपने इन अंकों में नये नगरों और नयी काश्त वाले खेतों, नये पनबिजलीघरों, कारखानों तथा नये बाग-बगीचों के बारे में पढ़ा। आपको नयी पुस्तकों, नये चित्रों, नयी मूर्तियों, नयी फिल्मों, नये नाटकों के बारे में कुछ जानकारी मिली, आप सोवियत विज्ञान तथा टेक्नालाजी की नयी उपलब्धियों से परिचित हुए। हमें इस बात से प्रसन्नता है कि हम **सोवियत भूमि** के पृष्ठों के जरिए यह बता सके कि सोवियत जनता ने कितने परिश्रम के साथ, कितने सीधे-सरल ढंग से, किस तरह बिना किसी दिखावे